समर्पण।

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष,

श्रीयुत सेठजी खेमराज श्रीकृष्णदासजी
की सेवामें-

महाशय !

आप हिन्दी साहित्यके एक बहुत बडे सहायक, रक्षक, एवं संवर्द्धक हैं—मैं हिन्दी भाषाका एक बहुत लघु सेवक हूँ। इसलिये मेरा आपको साथ एक घनिष्ट और प्रगाढ सम्बन्ध है। इसही सम्बन्धके भरोसे मैं आज कविशिरोमणि शेक्सपियर कृत "किंगलियर" नाटकका यह अनुवाद (जो मेरे साहसका प्रथम फल है) आपको भेट करता हूँ—आशा है स्वीकृत होगा॥

जयपुर
ता० ९ अप्रेल सन् १९०३.

भवदीय कृपाकांक्षी,
बद्री नारायण.

" सत् चित् आनंदः "

इंग्लैण्डदेशीयकविवर " शेक्सपियर " विरचित,

"किङ्गलियर"

नामक नाटकका भाषानुवाद.

प्रथम अङ्क

दृश्य पहिलाः–[भूपति लियरके राजमहलमें]

(केन्ट, ग्लास्टर और अडमन्डका प्रवेश.)

केन्ट—मेरा तो यह अनुमानथा कि, श्रीमान् लियरनरेश, ड्यूक कार्नवालकी अपेक्षा ड्यूक अलबनीपर अधिक कृपा रखते थे ॥

ग्लास्टर—यह बात हम सबको योंही प्रतीत होती रही है परंतु अब राज्यविभागकी ओर दृष्टि फैलाते हैं तो प्रत्यक्ष नहीं होता कि, वह किस ड्यूकको विशेषप्रिय समझते हैं। क्योंकि राज्यके ऐसे तुल्यखंड किये गये हैं कि, किसी भागमें कोई भी गुण ऐसा विशेष नहीं रहा है जो दूसरे विभागको हलका सूचित करे॥

केन्ट—महाराज ! क्या यह आपके आत्मज हैं ?

ग्लास्टर—महाशय ! इसका लालन पालन तो मेरेही व्ययसे हुवा है। यह मेरा है यों स्वीकारते २ मुझे इतनीवार लज्जा उठानी पड़ी है कि, अब मैं निरा निर्लज्जसा होरहा हूं। परन्तु सुनिये, महाशय ! मेरे एक दूसरा पुत्र भीहै जिसका जन्म विधिपूर्वक हुवा है और वह इससे एक वर्ष बड़ा है–तोभी वह मुझे ऐसा प्रिय नहीं है ॥ अडमन्ड ! क्या तुम इस कुलीन सभ्यपुरुषसे परिचितहो ?

अडमन्ड–महाराज ! नहीं ॥

ग्लास्टर–कैन्ट महाराज है। आजसे स्मरण रक्खो कि, यह मेरे मान्यवर मित्र हैं।

अडमन्ड–(कैन्टके प्रति मैं श्रीमानोंका आज्ञावर्ती दास हूं ॥

कैन्ट–तुम मेरे प्यारे हो और मैं चाहता हूं कि, तुम्हारे साथ मेरा परिचय बढ़े ॥

अडमन्ड–महाराज ! मैं आपके परिचयके योग्य होनेके निमित्त सदैव सप्रयत्न रहूंगा ॥

ग्लास्टर–यह तो वर्षलों परदेशमें रहचुका है और अब भी नहीं जावेगा, वह देखो राजाधिराज इधर आरहे हैं ॥

(वाद्य–लियरनरेश, कार्नवाल, अलवनी, गानारिल, रीगन, कारडेलिया और भृत्यसमुदायका प्रवेश.)

लियर–(सिंहासनपर बैठकर) ग्लास्टर ! तुम फ्रांस और वर्गन्डीके राजाओंकी सेवामें उपस्थित रहो ॥

ग्लास्टर–जो आज्ञा महाराजकी ॥ (ग्लास्टर और, अडमन्ड गये)

लियर–इस अवसरमें हम अपने गुप्ततर अभिप्रायको प्रगट करेंगे। वह भूचित्र यहां लावो। देखो, हमने अपने साम्राज्यको तीनभागोंमें बांटा है और यह हमारा परिपक्व विचारहै कि, सम्पूर्ण चिन्ता और राज्यभारको हमारी वृद्धावस्थासे दूर करें और इन्हें पराक्रमी नवयुवकोंके सुपुर्दकर और राजचितासे छुट्टीपाकर धीरे२ मृत्युसमीप गमन करें॥ पुत्र कार्नवाल और हमारे सप्रीतिभाजन पुत्र अलवनी, हम इस समय हमारी पुत्रियोंके पृथक् २ यौतुकोंको प्रगट किया चाहते हैं जिस्से भविष्यकालमें कोई विग्रह न होने पावेगा। फ्रांस और वर्गन्डी दोनों राजकुमार जो हमारी कनि राजकुमारीके अनुरागके बड़े कांक्षी हैं प्रेममय हमारी राजसभा

चिरकालसे टिके हुए हैं, हम उन दोनोंको भी इसही अवसरपर उत्तर देंगे ॥ मेरी प्यारी पुत्रियो ! अब मैं राज्याधिकार, भूमिस्वार्थ और राजचिन्तासे छुट्टी लूंगा इसलिये बोलो, तुम्हारे मध्य कौन हमारे साथ अधिक प्रीति रखता है। इस बातको जानकर, मैं राज्यका सबसे बड़ा टुकडा उसे दूंगा जिसकी योग्यता और प्राकृतिस्नेह सबसे बड़ा है ॥ गानरिल ! हमारी अग्रजन्मावेटी ! पहिले तू कह ॥

गानरिल—हे पिता ! श्रीमत्पदाम्बुजोंमें मेरी जो भक्ति है वह ऐसी नहीं है जो एक जिह्वासे कही जासके । नेत्र, अवकाश स्वतंत्रता मुझे अधिक प्रिय नहीं हैं । अप्राप्य और द्रविण पदार्थोंमें मेरी ऐसी रुचि नहीं और आरोग्य और सुंदर शरीर, बडे २ सम्मान और ऊँचे २ पदोंपर मेरी ऐसी प्रीति नहीं है ॥ किसी भी सन्ततिने अपने जनकके साथ इतना अनुराग न किया होगा जितना मेरा प्रेम श्रीकमलचरणोंमें है । मेरी जिह्वा और मेरे श्वासमें इतना बल नहीं है जो इसकी यथातथ्यको भलीप्रकार खोलसकें, मेरी भक्ति अनिर्वचनीय है ॥

कारडेलिया—(स्वगत) तो कारडेलियाको क्या करना होगा ? बस, अनुराग करना और चुप रहना ॥

लियर—इन सब प्रान्तोंकी, इस रेखासे इसतक भी छाया-न्वित्त वनों, बहुमूल्य धरातल देशों, प्रचुरनदियों और विस्तीर्ण चरागाहोंकी, हम तुझको स्वामिनी बनाते हैं । ये सब तेरी और अलबनीकी सन्ततिके अधिकारमें चिरस्थायी रहेंगे । हमारी द्वितीय दुहिता, हमारी सबसे प्रिय रीगन, कार्नवालकी पत्नी क्या कहती है ? कह ॥

रीगन—महाराज ! मैं उसही धातुसे बनी हुई हूं जिससे मेरी भगिनी बनी हुई है और इसकी योग्यतानुसार अपनी योग्यता समझती हूं । मेरे शुद्धान्तःकरणमें मैं चीनती हूं कि उसने मेरीही

प्रीतिकी वास्तवताका बखान किया है; केवल वह पूरी प्रकार बखान न करसकी; क्योंकि मैं सम्पूर्ण अन्य सुखोंसे शत्रुता रखती हूं जिनको यह सबसे बहुमूल्य वर्गाकार इन्द्री (नेत्र) लूट सकतीहै और केवल श्रीमानोंकी भक्तिमें अपना आनंद समझती हूं॥

कारडैलिया--(स्वगत) तो कारडैलियाही दरिद्रणी रही ! तथापि ऐसा नहीं है क्योंकि मुझको निश्चय है कि, मेरा स्नेह मेरी जिह्वाकी अपेक्षा अधिक धनगर्भित है ॥

लियर्--हमारे सुन्दर राज्यका यह विस्तृत तृतीयांश तेरा और तेरी संततिका सर्वदाके लिये बना रहेगा । गानारिलको जो भाग दियागया है उसकी अपेक्षा विस्तार बहुमूल्य और मनोरंजनतामें यह अंश कुछ भी न्यून नहीं है ॥ अब ए मेरे सुखोंकी जड़, मेरी अन्तिम और विशेष प्रिय सन्तति ! जिसके अनुराग ग्रहणार्थ फ्रांस और बर्गण्डीके राजकुमार उपाय प्रवृत्त हैं, तेरी बहिनोंके भागोंसे बढिया भागकी प्राप्तिके निमित्त तू क्या कहा चाहती है ? कह ॥

कारडैलिया--महाराज ! कुछ नहीं ॥

लियर्--कुछ नहीं ! ॥

कारडैलिया--कुछ नहीं ! ॥

लियर्--कुछ नहींसे कुछ नहींकी प्राप्ति होगी । फिर कह ॥

कारडैलिया--यह मेरा दुर्भाग्य है कि, मैं अपने हृदयान्तर्गत विचारोंको मुखमें नहीं खैंचसक्ती मैं मेरे धर्मानुकूल श्रीमानोंसे स्नेह रखती हूं, न इससे अधिक और न न्यून ॥

लियर्--ऐं, कारडैलिया, यह क्या ! तेरे वचनको सुधार, स्यात् यह तेरे सौभाग्यको धूरिमें मिलादे ॥

कारडैलिया--महाराज, सत्य है । आपने मुझको जन्म दिया, पालन किया और लाड़ लड़ाया है मैं भी मेरे कर्त्तव्यकर्म्म

को यथायोग्य सम्पादन करती हूं: मैं आपकी आज्ञावर्त्ती, स्नेहानुरागिणी और पूर्णतया सम्मानकारिणी बनी हूं। यदि मेरी बहिनोंका यह कथन है कि, उनका सम्पूर्ण अनुराग श्रीमानोंके पदाम्बुजों केही अर्पणहै तो उन्होंने पतियोंको क्यों रखछोड़े हैं? दैवात् जब मेरा विवाह होगा तो वह स्वामी जिसको मैं वरूंगी, मेरा आधाप्रेम और मेरी आधी सेवाका अधिकारी होगा। निश्चय, मैं मेरी बहिनोंकी नाईं कभी न वरूंगी कि, जिन्होंने सम्पूर्ण स्नेहको पिताहीके भेट कररक्खा है॥

लियर्—परन्तु क्या तेरा हृदय भी तेरी इस युक्तिके अनुकूलही है?॥

कारडै०—मेरे महाराज! हां॥

लियर्—इतनी सुवा और ऐसी कठोर?॥

कारडै०—इतनी सुवा, महाराज, और सच्ची॥

लियर्—भला ऐसाही सही। तो तेरी सच्चाई तेरा यौतुक बनेगी। श्रीभगवान् मरीचिमालीकी पवित्र किरणों, रात्रि और ग्रहोंकी—जिनपर हमारी स्थिति और नाश निर्भर है—शपथ लेकर मैं यहांसे तमाम पैतृ करता और रुधिरसम्बंधको तुझसे दूर करताहूं। आजसे सदाके लिये मुझसे और मेरे हृदयसे वंचितही भांति रह। वह जंगली हब्शी, अथवा वह जो अपनी सन्ततिके उदर पूरणार्थ चटाई बना २ कर बेंचता है मुझसे इतना आलिंगित, रक्षित और करुणा किया जावेगा जितनी तू हमारी भूतपूर्वपुत्री॥

कैन्ट—महाराज! महाराज!!

लियर्—कैन्ट चुपरह, तू मेरे क्रोध और इसके निशानेके बीचमें मत आवे। देख, यह दुष्ट मुझको अत्यन्त प्रिय थी और मेरा यहही विचार था कि, अपना सारा सुखचैन इसकी सेवा पर छोड़ देता,परन्तु अब हट और मेरी दृष्टिसे परेहोजा! हेपरमेश्वर, जितना निश्चय होकर मैं मेरे हृदयको इस कन्यासे पृथक् करता हूं वैसेही

निश्चयरूपसे मेरी मृत्युके अनन्तर आप मुझे मोक्ष दें ॥ " फ्रांस " नरेशको बुलावो। कौन जाता है ? "वर्गन्डी" को भी बुलावो ॥ कार्नवल और अलवनी सुनो, मेरी दोनों पुत्रियोंके यौतुकमें इस तृतीयांशको भी विभाजित करके मिलाओ। अहंकार जिसको वह सत्य कहकर प्रगट करती है, अब इसके लिये पति प्राप्त करानेमें सहामी होगा। मैं तुम दोनोंहीको मेरा अधिकार, उच्चपद और उन सब अन्यान्य सन्मानोंको प्रदान करता हूं जो प्रभाव और गौरवके सहचर हैं। मैं केवल एकसौ अश्वारोहीको तुम्हारे व्ययसे रखकर वारी २ से प्रतिमास तुम्हारे साथ निवास करूंगा। इसके उपरान्त, मैं 'राजा' इस नामको और अन्य उपाधियोंको संरक्षित रखता हूं राज्यशासन भूमि धनसंचय और इतर कार्यसाधनोंको, प्यारे पुत्रो ! तुम मिलकर संपादनकरो इस बातको पक्की करनेके हेतु इस मुकुटको तुम्हारे मध्यमें विभाजित करलो ॥ [मुकुट देता है] ॥

कैन्ट—महाराज, लियर नरेश ! आप सदासे मेरे सम्माननीय राजा, प्यारे पिता, स्वामी और रक्षक हैं जिनकी स्वस्तिके लिये मैं सदैव प्रार्थना करता हूं ॥

लियर—देखो, धनुषकी प्रत्यंचा तनी हुई है. तीरके मार्गसे बचे रहना चाहिये ॥

कैन्ट—यद्यपि मेरा हृदय इसके तीक्ष्ण वातसे विदीर्ण होगा तथापि इसको गिरने दीजिये। जब लियरही विक्षिप्त बन बैठा तो कैन्टको असभ्य होना युक्त है। हे वृद्ध महापुरुष ! आप क्या कररहे हैं ? और क्या आप यह विचारते हैं कि, जब प्रभावशाली पुरुष चाटूक्तिके वशीभूत होते हैं तब कर्त्तव्यकारी मनुष्य उनको सलाह देनेमें भय खाजाते हैं ? गौरवशील मनुष्योंके हीन बुद्धि होजाने पर भी मानप्रिय सत्यके अनुयायी बने रहते हैं। अपने राज्यको हस्तगतही रहने दीजिये और उत्तम २ विचारोंके साथ इस भयंकर निर्बुद्धियनको रोकिये। इस बातसे आपको निश्चित करानेमें

अपने जीवनको होम देनेपर सन्नद्ध हूं कि, आपकी छोटी पुत्री आप से थोडा प्रेम नहीं रखती है ॥

जिनके धीमे शब्द हार्दिक पोल प्रगट नहीं करते हैं वे कुछ पोछे हृदयके नहीं होते ॥

लियर—कैन्ट, यदि प्राणोंको रखा चाहता है तो बस ॥

कैन्ट—मेरे प्राणोंको तो मैंने केवल एक आड़ समझ रक्खी है जो आपके रिपुवर्गके विरुद्ध रक्खी हुई है। यदि इससे आपकी रक्षा रहे तो मुझे इसको खोदेनेमें भय नहीं है ॥

लियर—मेरी दृष्टिसे हटजा ॥

कैन्ट—महाराज ! भली प्रकार देखें और मुझे अपनी दृष्टिका इमानदार निशाना बनाये रक्खिये ॥

लियर—'अपोलो' की शपथ ॥

कैन्ट—हे नरेश ! 'अपोलो' की शपथसे मैं भी कहता हूं कि, आप वृथाही देवताओंकी शपथ लेते हैं ॥

लियर—रे क्षुद्र सेवक (कृपाणपर हाथ पटकता है.)

अलवनी } प्रिय महाशय ! क्षमाकरो, क्षमाकरो ॥
कार्नवाल }

कैन्ट—ऐसाही कीजिये (मारिये)। अपने वैद्यका वधकर उसकी भेटको अपने क्लिष्ट रोगके अर्पण करो। राज्यको पुनः हस्तगत कीजिये नहीं तो जबतक इस कण्ठसे शब्दोच्चारण होता रहेगा मैं आपको यहही कहता रहूंगा कि, आप बुरा करते हैं, बुरा करते हैं ॥

लियर—सुनरे वंचक सुनके; तूने हमारी अटूट प्रतिज्ञाको भङ्ग कराना और असह्य अभिमानके साथ हमारी मरजी और अनुमतिके पूरी होनेमें बाधक बनना चाहा है—इसलिये मैं मेरे प्रभुत्वके बलद्वारा तुझे इसका पारितोषक देता हूं इस संसार के

रोगोंसे रक्षित रहनेके लिये जो कुछ आवश्यक है उसको एकत्र करनेके हेतु मैं तुझको पांच दिवसकी छुट्टी देता हूं । छठे दिवस तुझे उचित है कि, अपनी निंदित पीठको हमारे साम्राज्यकी ओर फिरादे-यदि इतने दिवस तेरी निर्वासित देह हमारे राज्यमें सजीव मिलेगी तो वहही तेरा मृत्युकाल होगा-यहांसे अबही निकल जा "जूपिटर" की शपथ खाकर करता हूं कि, यह आज्ञा अमिट है॥

कैन्ट--अच्छा महाराज ! आपकी स्वस्ति रहे, जब आप ऐसेही बनगये तो यहां नहीं रहनाही स्वतंत्रता है और यहां रहना भी बनोवास है (कारडेलियाके प्रति) हे राजकुमारी ! जिसके ऐसे सत्य विचार और भाषण हैं ईश्वर तेरी रक्षा करे । (रीगन और गानरिलके प्रति) और ईश्वर करे तुम्हारे काम तुम्हारी लम्बी चौडी वक्तृताको सफल करें और अनुरागकी युक्तियोंके उत्तम फल प्रगट होवें । हे राजकुमारो, कैन्ट आप दोनोंको प्रणाम करता है-अब वह किसी नूतन देशमें अपनी सनातन रीत्यनुसार जीवन वृत्ति करेगा ॥ (गया)

(वाद्य--ग्लास्टर, फ्रांस, बर्गन्डी, और भृत्यसमूहका प्रवेश.)

ग्लास्टर--हे प्रभु ! फ्रांस और बर्गन्डीके राजपुत्र उपस्थित हैं ॥ (फ्रांस और बर्गन्डीका आगमन)

लियर--हे बर्गन्डीके सरदार ! हम पहिले आपहीकी ओर झुककर कहते हैं कि, आपने हमारी पुत्रीके पाणिग्रहणके लिये वैसीही कांक्षा प्रगट की है जैसी इस नरेश (फ्रांस नरेशकी ओर संकेत करके) ने दिखलाई है । इसलिये कहिये इस समय आप इस कन्याके साथमें थोड़ासे थोड़ा कितना यौतुक चाहते हैं कि, जिसके बिना आप अपनी विवाह चिन्ताको छोड़ बैठेंगे ॥

बर्गन्डी--प्रभावशील महाराज ! श्रीमान् जो कुछ देंगे मुझको उससे अधिकके लिये इच्छा नहीं है और आप स्वयंही थोड़ा न देंगे ॥

लियर--हे वर्गन्डीके सरदार ! देखो जब यह हमें प्रियथी तब हम इसको वैसेही रखते थे परन्तु अब तो इसका मूल्य घट गया है। महाशय ! वह देखो, वहांपर खड़ी है, यदि इस छोटे और अल्पाकारमें कुछ भी अथवा वह संपूर्ण आकरही (जो हमारी अप्रसन्नतासे परिच्छिन्न है) आपकी प्रसन्नताके भली प्रकार अनुकूल हो तो वह आपकी है ॥

वर्गन्डी--मुझे इसका कोई भी उत्तर नहीं सूझता ॥

लियर--क्या आप इसको जो दोषोंसे पूर्ण, हमसे वंचित, निंदित और हमारे शापरूपी यौतुकसे सम्पन्न है ग्रहण करोगे वा नहीं करोगे ? ॥

वर्गन्डी--महाराज ! क्षमा करो। ऐसी २ अवस्थाओंमें चुनाव होना असम्भव है ॥

लियर--तो ग्रहण न कीजिये,साहब। शपथ खाकर कहता हूं कि मैंने इसकी सभी किम्मत प्रगट करदी है ॥ (फ्रांसके प्रति) हे भूपाल, आपका जो अनुराग मेरे साथ है मैं उससे इतना दूर नहीं भागूंगा कि आपका संयोग इस निंदित कन्याके साथमें करदूं. इसलिये निवेदन है कि, आप अपने प्रेमको इस नीचकी अपेक्षा योग्यतर पदार्थमें लगावें। देखा इसको स्वीकारनेमें प्रकृति लज्जालुसी होरही है ॥

फ्रांस--बडे आश्चर्यकी बात है कि, यह कन्या जो अभीतक आपका उत्तमोत्तम पदार्थ आपकी प्रशंसाका आधार, वृद्धावस्थाका अवलम्बन; अनुत्तम और प्राणप्रिय थी,इस क्षणमात्रमें ऐसा विकराल अपराध सम्पादन करे कि, आपके स्नेहकी इतना तह यों उघड़ जावें। निश्चय इसका अपराध या तो अत्यन्त अस्वाभाविक होगा वा आपका पूर्व प्रकाशित प्रेम रोग ग्रसित होगया है। परंतु इस कन्याने कोई ऐसा अपराध किया है इस बातको मान लेना एक वह विश्वास है कि, जिसको विवेक शक्ति दैविक प्रयोगके बिना मेरे मनमें नहीं जचा सकती ॥

कारडैलिया—यद्यपि मैं उस चिकनी चुपड़ी कारीगरीसे रहित हूं कि, जिसके द्वारा पूरी करनेकी इच्छाके विनाही, लम्बी चौड़ी बातें बनाई जातीं हैं तथापि मैं जिस बातको सम्पादन करनेका पक्का विचार रखती हूं उसको बिना बोले चाले करती हूं इसलिये मेरा निवेदन है कि, आप यह बात विदित कर दीजिये कि कोई पातक वा अन्य कलंक, अपवित्रता वा निंद्नीय कर्मके कारण मैं आपकी दया और कृपासे वञ्चित नहीं की गयी हूं। वरन उस बातके न रहनेके कारण वाञ्चित कीगयी हूं कि जिसके न रहनेपर भी मैं भाग्यवती हूं: एक सदा प्रार्थी दृष्टि और ऐसी जिह्वा जिसके न होनेसे मैं सुखी हूं यद्यपि इसके न होनेसे आप मुझसे अप्रसन्न हुए हैं॥

लियर—मुझको प्रसन्न करनेकी अपेक्षा यदि तू जन्मही न लेती तो श्रेय होता॥

फ्रांस—ठीक, क्या यहही बात है—एक प्रकृतिकी लहरता जिससे प्रायः वे तो जिनको यह पूरी किया चाहतीहै प्रगट नहीं होसकतीं? वर्गन्डीके सरदार! इस कन्याको आप क्या उत्तर देते हैं? वह क्या अनुराग कहे जानेके योग्य हैं जो उन बातोंसे मिश्रित हैं जो इसमें सर्वथा पृथक् हैं! क्या आप इसको ग्रहण किया चाहते हैं? यह तो स्वयंही सर्यौतुक है॥

वर्गन्डी—(लियरसे) महाराजाधिराज! यदि आप मुझे केवल वह भागही दे देवें जिसको देना आपने निश्चित किया था तो मैं इसही समय कारडैलियाका पाणिग्रहण करके वर्गन्डीकी पाटरानी बनालूं॥

लियर—नहीं, कुछ नहीं. मैं शपथ लेचुकाहूं। मैं इसमें पक्का हूं॥

वर्गन्डी—तो मुझे खेद है कि, पिताके प्रेमसे वाञ्चित होकर तुमको मेरे ऐसे पतिसे भी रहित रहना पड़ेगा॥

कारडैलिया—वर्गन्डीकी स्वस्ति रहे! जिसका अनुराग द्रव्यके विचारोंसे मिश्रित है मैं उसकी पत्नी नहीं बना चाहती॥

फ्रांस--हे सुंदरी! जो धनहीन; वञ्चित और निंदित होकर भी, बहुत धनी, ग्रहण योग्य और प्रेमकी पात्र है, तुझे और तेरे गुणोंको मैं यहीं स्वीकारता हूं। यदि न्याय विरुद्ध न हो तो मैं विसृष्ट पदार्थोंको अपना लिया करता हूं। दैव! दैव! कैसा आश्चर्य है कि, इनके अत्यन्त शीतल स्नेहके कारण मेरा अनुराग प्रज्वलित अग्निके समान भड़क उठा है॥ हे भुपाल! आपकी यौतुकशून्य पुत्री, हमारे भाग्यबलसे हमारी और हमारे सुंदर राज्यकी महिषी होचुकी बर्गन्डीके सारे राजा भी इस अमूल्यकन्या को हमसे क्रय नहीं करसकते. हे कार्डेलिया! यद्यपि ये सब तुझसे अप्रसन्न हैं तथापि इन्हें प्रणाम करो इस स्थानको छोड़कर तुम एक विशेष उत्तम स्थानको प्राप्त करोगी॥

लियर--हे फ्रांसके सरदार। आपने इसको ग्रहण की है तो अब यह आपकी है क्योंकि हमारे ऐसी दूसरी कन्या नहीं है, न हम इसके मुँहके फिर कभी अवलोकन किया चाहते हैं. इस लिये चलीजा. हमारी कृपा, हमारे स्नेह, हमारी आशीषके विना निकलजा॥ बर्गन्डीके महाशय आइये॥

फ्रांस--तुम्हारी बहिनोंसे अन्तिम भेट करलो [वाद्यध्वनि फ्रांस, गानारिल रीगन, कारडेलियाके सिवाय सब गये]॥

कारडेलिया--ए मेरे पिताके रत्नों! सजल नयन हो कारडेलिया तुमसे विदा होती है तुम वास्तवमें कैसी हो इस बातका मुझको पूर्णज्ञानहै, परंतु तुम्हारी छोटी बहिनहोकर मैं तुम्हारी भूलों को भूलें नहीं कहा चाहती। अपने पिताका भला बर्त्ताव कीजिये-मैं उसे तुम्हारे प्रकाशित प्रेमको सँभालमें छोड़ती हूं। परंतु अहो! यदि वह मेरेपर कृपा रक्खे रहते तो मैं उनको विशेष उत्तम स्थानमें रक्खा चाहती। तुम दोनोंको अन्तिम प्रणाम करती हूं॥

रीगन--हमको हमारे धर्मका उपदेश न दीजिये॥

गानरिल—तुम्हारा मनन तुम्हारे स्वामीको प्रसन्न रखनेमें होना चाहिये जिसने तुमको भाग्यके दान तद्वत् ग्रहण किया है। तुमने अपने धर्ममें त्रुटि की है और अनुरागरहित होनेसे पिताके स्नेहके योग्य नहीं रहे ॥

कारडैलिया—समयके व्यतिक्रान्तसे गुप्त धूर्त्तता प्रगट हो जावेगी। जिन्होंने अपराधोंको ढके हैं अन्तमें उन्हेंही लज्जाके साथ घृणित होना पड़ेगा, भला तुम्हारा सौभाग्य बढ़े ॥

फ्रांस—आवो, प्यारी कारडैलिया, आवो (फ्रांस और कारडै-लिया गये) ॥

गानरिल—बहिन, अपन दोनोंसे सम्बन्ध रखनेवाली कई बातें हैं, जिनके विषय में तुमको बहुत कुछ कहा चाहती हूं—पिता तो आजही रातको यहांसे प्रस्थान करेंगे ॥

रीगन—यह तो निश्चितही है और पहिले तुम्हारेहीं पास निवास करेंगे। दूसरे मासमें मेरे यहां निवास करेंगे ॥

गानरिल—तुमने देखा, पिता वृद्धावस्थामें कैसे परिवर्त्तन होते जाते हैं। जो कुछ तुमने और मैंने देखा है वह थोड़ा नहीं है अपनी बहिनपर वह सदैव अत्यन्त स्नेह रखते थे और यह बात प्रत्यक्ष है कि, अब बिना सोचे विचारे उसको दूर करदी है ॥

रीगन—यह उनकी वृद्धावस्थाकी निर्बलता है। तथापि वह सदाही अपने आपसे अपरिचित रहे हैं ॥

गानरिल—और युवा अवस्थामें भी तो वह बुद्धिहीनताके साथही काम करते थे अपने वृद्ध पिता केवल क्रोधीही नहीं वरन् हठीले भी हैं जो किसी तरह समझानेसे नहीं मानते जो पुरुष युवा अवस्थामें क्रोधी होता है, वह वृद्धावस्थामें अवश्य हठीला और चिड़चिड़ा होजाता है, देखो हमको इन सब बातोंके लिये तयार रहना चाहिये ॥

रीगन—निस्संदेह जैसे इन्होंने केंटको अकस्मात् देश निकाला दे दिया, वैसाही अपना भी वर्ताव होना प्रतीत होता है ॥

गानारिल—फ्रांस नरेश भी क्रोध होकर विदा हुए हैं. मेरी तो यह राय है कि, अपन दोनों सलाहसे काम करें। यदि अपने पिता ऐसे क्रोधी स्वभावके साथ हकूमत जमावेंगे तो मुझे तो यह अच्छा मालूम न होगा ॥

रीगन—हम इस विषयपर फिर विचार करेंगे ॥

गानरिल—हमको अवश्य कुछ उपाय करना पड़ेगा और जितनी शीघ्रता होगी उतनीही उत्तम है ॥

(गयी)

द्वितीयदृश्यः—[ग्लास्टरकी दुर्ग.]

(अड्मण्ड हाथमें एक पत्र लिये आताहै.)

अडमन्ड—हे प्राकृति, तू मेरी विधाता है। मैं तेरे नियमोंका प्रतिपालक हूं-हां मैं अपने भाईसे १३ वा १४ मास छोटा हू— परन्तु मैं क्यों रस्म रिवाजोंके रोगमें पड़ूं और मनुष्योंके वहमोंके कारण मेरी भूमिसे च्युत रहूं। संकर ! क्यों ? और नीजट क्यों कहा जाऊं? जब मेरा अंग उतनाही ठोस, मन उतनाही उदार और आकार उतनाही सुडौल है जितना किसी पवित्र स्त्रीकी संततिका। सारे मनुष्य हमको नीजाट नामसे क्यों दूषित करते हैं? और संकरतासे क्यों कलंकित करते हैं? नीजाट-नीजाट! अच्छा तो, हे असंकर एडगर मैं तुम्हारी भूमिको मेरे हस्तगत करूंगा हमारे पिताका स्नेह तो जितना संकर ऐडमण्डपर है वैसाही असंकर ऐडगरसे है अहो! संकर यह शब्द कैसा विचित्रहै! भला असंकर भाई साहिब, यदि यह पत्र सफल होवे और मेरी धूर्तता विफल न जावे तो संकर एडमन्ड अवश्य असंकर एडगरके मस्तकपर पदार्पण करेगा ॥ हे मेरे देवी देवताओ, आप इस समय संकरोंकी सहाय होवें तो मैं उन्नत और धनाढ्य होजाऊं ॥

(ग्लास्टरका प्रवेश.)

ग्लास्टर–(आपहीआप) केन्ट यों निर्वासित कियागया । फ्रांस कुपित हो विदा हुवा और महाराज भी आज रात्रिको प्रस्थान कर गये । राज्यको दूसरोंके हवाले करदिया । और अपने लिये मासिक नियत करालिया ये सब विना विचारे करबैठे हैं । (अडमण्डको देखकर प्रगट) अच्छा, अडमन्ड कहो तो क्या समाचार है ? ॥

अडमन्ड–(पत्रको झटपटछुपाकर) महाराजकी स्वस्ति हो और समाचार तो कोई नहीं है ?

ग्लास्टर–फिर ऐसे व्यग्र हो वह पत्र क्यों छुपाते हो ?

अडमन्ड–महाराज, मुझे कोई समाचार मालूम नहीं हैं ॥

ग्लास्टर–तुम वह क्या कागज पढ रहे थे ? ॥

अडमन्ड–कुछ नहीं, महाराज ॥

ग्लास्टर–नहीं ? तो फिर वैसे भयके साथ इसको पाकटमें छुपानेकी क्या आवश्यकता थी ? शून्यमें शून्यत्व स्वयंको छुपानेकी ऐसी आवश्यकता नहीं रखती है । दिखलावो । यदि यह कुछ नहीं होगा तो मुझे चश्में नहीं लगाने पडेंगे ॥

अडमन्ड–महाशय, प्रार्थना करता हूं आप मुझे क्षमाकरें । यह मेरे भाईका पत्र है जिसे मैं पूरा २ नहीं पढ चुकाहूं और जितना पढागया है उससे यही प्रतीत होता है कि यह आपके देखने योग्य नहीं है ॥

ग्लास्टर–मुझको वह पत्र दो जी ॥

अडमन्ड–जो इस पत्रको देता हूं तो रोडगर अप्रसन्न होगा और जो नहीं देता हूं तो आप प्रसन्न न रहेंगे–इसके समाचार जितने मैंने समझे हैं दूषणके योग्य हैं ॥

ग्लास्टर–देखें, देखें ॥

अडमन्ड--(पत्र देखकर) मुझे आशा है कि, मेरे भ्राताने यह केवल मेरे धर्मकी परीक्षा लेनेको लिखा है ॥

ग्लास्टर--(पढता है) "वृद्ध पुरुषोंको शिरोधार्य्य रखनेकी प्रणाली हमारी आयुके सर्वोत्तम विभागको नीरस बनादेती है, जो हमारे द्रव्यको हमसे उस समय तक संरक्षित रखते हैं कि, जब वृद्ध होकर हम इसका स्वाद ग्रहण करनेमें अशक्त होजाते हैं। मुझको मालूम होने लगाहै कि, वृद्धपुरुषोंके न्याय पूज्य बन्धनके वशीभूत रहना निर्बलता और बुद्धिहीनताहै. इनकी हुकूमत बलके कारण नहीं, वरन् इनको हुकूमत करने देनेके कारणसे है. तुम मेरे पास आवो तो हम तुम इस विषयमें अधिकचर्चा करलें। यदि अपने पिता शयन किए रहें जबतक मैं उनको न जगाऊं तो तुम सर्वदा आधे धनके सुखको भोगोगे और प्रिय बने रहोगे तुम्हारे भ्राता एडगरको" ॥

ऐं! मुझे मारनेका गुप्त उपाय! "मैं जब तक उन्हें न जगाऊं तवतक शयन कररहे तो तुम आधे धनके सुखको भोगोगे"-मेरा पुत्र 'एडगर' और ऐसा करे! क्या वह अपने हाथसे ऐसा लिखसकता है? क्या वह ऐसी बातके विचारनेका मन और साहस करसकता है? यह पत्र तुम्हारे ढिग कब आया! और कौन लाया?॥

एडमन्ड--पिता, इसको मेरे पास कोई लाया नहीं इसमें यह-ही तो चतुराईकी बात है। मेरे कमरेकी खिडकीमें पडा हुआ मिला था ॥

ग्लास्टर--क्या तुम जानते होकि यह तुम्हारे भाईका लेख है?

एडमन्ड-महाराज! यदि विषय उत्तम होता तो मैं शपथके साथ कहनेका साहस करता कि यह उसहीका लेख है. परन्तु वैसा न देखकर मैं यह आशा करना चाहताहूं कि यह उसका लेख न निकले ॥

ग्लास्टर-यह उसहीका लेख है ॥

एडमन्ड-हां, पिता, लेख तो उसहीका है परन्तु मुझे आशा है कि ये समाचार उसके हृदयानुकूल नहीं हैं ॥

ग्लास्टर-क्या उसने इस विषयमें पहिले तुम्हारे मनका थाह नहीं लिया है ?

एडमन्ड-नहीं पिता, परन्तु प्रायः मैंने उसे इस बातको सिद्ध करते सुना है कि, जब पुत्र पूर्ण युवावस्थाको प्राप्त होवे और पिता क्षीण होनेलगे तो उचित है कि पिता पुत्रकी संभालमें रहे और भूमिधनकी सम्भाल पुत्रके भरोसे छोड़दे ॥

ग्लास्टर-अरे चाण्डाल, चाण्डाल ! इसपत्रमें उसका यहही विचार लिखा है ! निंदित चाण्डाल ! प्राकृतिविरुद्ध चाण्डाल, घृणा योग्य, राक्षसके समान चाण्डाल ! राक्षससेभी अधम ! बेटा, तुम जावो, और इसकी खोज करो; मैं उसको पकड़ा मँगाना चाहता हूं। निंदनीय चाण्डाल ! वह कहां चलागया है ?

एडमन्ड-मुझे भलीप्रकार ज्ञात नहीं। देखिये जब तक उसके विचारोंका पूरासुबूत आपको न मिले तबतक यदि आप अपने क्रोधको रोकरहनेसे संतुष्ट रहें तो आपको इसके हेतु एक उपाय करना पड़ेगा परंतु यदि आप उसके विचारोंको न समझकर विना विचारे उसका अप्रियकर बैठोगे तो इससे आपका बहुत धन नष्ट हो जावेगा और उसका आज्ञावर्ती हृदय खंडशः होजावेगा उसके लिये मेरे जीवनको मध्यमें रखकर मैं यह कहनेका साहस करता हूं कि उसने यह पत्र केवल मेरी भक्तिको जांचनेके अर्थ लिखा है जो श्रीमानोंके पदार्पण है, परन्तु कोई हानि पहुंचानेके विचारसे नहीं लिखा है ॥

ग्लास्टर-क्या तुम्हारा विचार यों है ? ॥

एडमन्ड-यदि श्रीमान् इस बातको उचित समझें तो मैं आपको एक ऐसे स्थानमें बिठाऊंगा जहांसे आप हम दोनोंको इस

विषयमें बातचीत करते श्रवणकर निश्चय करलेंगे। और ऐसा करनेमें आज संध्याकालसे अधिक विलंब न होगा ॥

ग्लास्टर--वह ऐसा राक्षस ?

एडमन्ड--(बात तोड़कर) निश्चय, महाराज, वह ऐसा नहींहै॥

ग्लास्टर--(उसकी बातपर ध्यान न देकर) उसके पिताके लिये नहीं होसकता जो उससे अत्यन्त अनुराग रखता है। वाह रे संसारकी विचित्र गति! ऐ एडमन्ड! तू उसको ढूंढ़ और उसके गुप्त विचारका भेद लेकर मुझे कहना,यह कार्य्यवाही तेरीही बुद्धिके अनुसारकर. मैं भी उचित विचारको प्राप्त करनेके लिये अपने आपको क्रोधरहित बनाये रक्खूंगा ॥

एडमन्ड--महाराज! मैं उसे अबही ढूंढूँगा. जहांतक मेरे उपाय दौड़ेंगे, बड़ी चतुराईसे यह कार्य्य सम्पादनकर अर्ज करूंगा ॥

ग्लास्टर--ये सूर्य और चन्द्रग्रहण जो होचुके हैं हमारे लिये भला प्रगट नहीं करते । यद्यपि प्राकृतिविद्या इनके यह और वह कारण बतलाती है तथापि देखाजाता है कि, मनुष्योंको इनके भावीफलोंसे क्लेश उठाने पड़ते हैं जैसे स्नेह ठंडे पड़जाते हैं मित्र अमित्र और भाइयोंमें भेद होजाता है राजमन्दिरोंमें वञ्चकता शहरोंमें बलवा देशोंमें संग्राम और पिता और पुत्र मेंही अनबन होजाती है. यह चाण्डाल भी इन भावीफलोंकी झपटमें है; इसलिये, देखो पुत्र पिताके विरुद्धाचरणीबन बैठा और राजाजी प्राकृतिक बंधनसे टूटपड़े जिससे पिता सन्ततिके विरोधी बने ॥ धूर्त्तता; कपट वञ्चकता और संपूर्ण दूसरी हानिकर बुराइयां हमको चिन्ता निमग्नकर श्मशानमें जातेहुए हमारी अनुयायी बनी हैं। अब एडमन्ड तुम इस चाण्डालको ढूंढो ऐसा करनेसे तुम्हें किसीबातकी हानि न होगी; सावधान होकर कार्य्यसाधन करो॥ और सुनिये: वह उदार और सच्चा स्नेही केन्ट देशसे निकालागया-उसका अपराध-ईमानदारी ? बड़ा आश्चर्य है ॥ (गया)

एडमन्ड--सांसारिक मनुष्योंका यह क्या खूब बुद्धिहीन धोखा खाना है कि, जब उनके भाग्य फूटते हैं जो प्रायः उनहीके अनुचित् कर्म्मोंके फल हैं तो वे सूर्य्य चन्द्रमा और तारा-मंडलको उनके क्लेशोंके कारण अपराधी बनाते हैं। मानों वे पूर्व निश्चित चाण्डाल, दैविक आज्ञासे निर्बुद्धि ग्रहोंकी चालके कारण लम्पट तस्कर, वञ्चक, मद्यपानी, मिथ्यालापी और व्यभिचारी हैं और जो कुछ उनमें बुरा है, सब दैविक प्रेरणासे है। एडगर-

(एडगरका प्रवेश.)

वह देखो, सुखान्तक नाटककी दुर्घटनाकी नाईं ठीक समयपर आगया है मेरा कर्तव्य इस समय चाण्डालोंके समान उदासीन होना और विक्षिप्त मनुष्यकी तरह निश्वास खेंचना है॥ (उदास वदन करके मन्दस्वरसे) हन्त! मैं ग्रहण इन विग्रहोंको पूर्वहीसे सूचित करते हैं! सा, रे, ग, म-(गाता है)॥

एडगर-भाई, एडमन्ड भाई! तुम क्या गंभीर विचार कर-रहे हो?॥

एडमन्ड--(चौंककर) हाँ भाई! मैं एक ग्रहफलका विचार कररहा था जो मैं ने कलही पढा है कि, इन ग्रहणोंके पीछे क्या २ घटना होगी॥

एडगर--क्या तुम ऐसी बातों में लवलीन होने लगे हो?॥

एडमन्ड--मैं तुमको निश्चय कराताहूं कि, जिन फलोंके लिये उसने लिखा है वे सब दैवात् होते चले जाते हैं जैसे बाप और सन्ततिमें अकस्मात मरीका फैलना, कालका पड़ना, पुरानी प्रीति-का बिगड़ना, राज्यभेद, राजा और राजकुमारोंका अशुभ होना, अनावश्यक विश्वासहीनता, मित्रोंका देशसे निकाला जाना, सेनामें बलवा होना, विवाहकी प्रतिज्ञाओंका भङ्ग होना और अधिक मैं कहांतक कहूं॥

एडगर--अभी तुम ज्योतिषविद्या कबसे अध्ययन करने लगे हो ? ॥

एडमन्ड-(बातको काटकर) सुनो तो भाई, तुम अपने पितासे अन्तिम बार कब मिले थे ? ॥

एडगर--कलही रात्रिको ॥

एडमन्ड--क्या उनसे कुछ बात चीत भी की थी ? ॥

एडगर-हां, लगातार दो घंटेतक ॥

एडमन्ड--और क्या प्रीति पूर्वक एक दूसरेसे विदा हुए थे ? क्या तुमने उनकी बोल चाल, वा मुखचेष्टासे कोई अप्रसन्नताका लक्षण न पाया ? ॥

एडगर--नहीं कुछ भी नहीं ॥

एडमन्ड--विचारोतो तुमने उनको किस बातसे अप्रसन्न किए हैं.-जबतक थोडे समयके पश्चात उनके क्रोधकी ज्वाला कुछ ठंढी न पड़जावे, मैं प्रार्थना करता हूं तुम उनके सन्मुख उपस्थित होनेसे बंध रहो। उनकी क्रोधाग्नि इस समय इतनी भभक रही है कि तुम्हारी शारीरिक हानिके बिना यह कदापि शान्त न होगी ॥

एडगर--किसी चाण्डालने मुझे हानि पहुँचाई है ॥

एडमन्ड--मुझे भी यहही डर है. अबतक उनका क्रोध धीमा न पड़जावे तबतक मेरी निवेदन मान उनके समीप जानेसे रुके रहो और मेरे कहनेसे तुम मेरे महलमें पग धारो जहांसे मैं तुम्हें हानि विना उस स्थानपर पहुँचा दूंगा जहां तुम पिताकी बातचीत सुन सकोगे. मेरी प्रार्थना स्वीकारो और चलो यह मेरी कुंजीलो यदि बाहर जावो तो शस्त्रयुक्त होलेना ॥

एडगर--शस्त्र युक्त ! ॥

एडमन्ड--हाँ भाई मैं तुम्हारे भलेकी सलाह देताहूं, शस्त्र

लेकर बाहर फिरे यदि तुम्हारे लिये अनिष्ट न विचारा गया हो तो मुझे झूंठा समझना. जो कुछ देखा और सुना गया है सो सब मैंने तुमको कह सुनाया है और सो भी पूर्णतया नहीं. इस्का संपूर्ण आकार और सारी भयकी बातें प्रगटही नहीं कीगई हैं. भलेही अब जावो ॥

एडगर–तुम मुझे शीघ्रही समाचार दोगे न ? ॥

एडमन्ड–इस कार्यमें मैं तुम्हारा प्रिय सम्पादन करनेमें प्रवृत्त हूं [एडगर गया] एक बिना विचारे विश्वास करनेवाला पिता ! और एक उदार भाई जिस्का स्वभाव हानि पहुँचानेसे इतनी दूर है कि उसे किसी बलमें वहमही नहीं होता उसकी थोथी इमानदारीपर मेरी धूर्त्तता अनायासही आरूढ़ होसकेगी ! अब मुझे मेरा काम दीखरहा है. यदि जन्म लेनेसे नहीं तो बुद्धिमानीसेही मैं भूमिग्रहण करूंगा जो वस्तु लाभदायी बनसके वे सब मेरे समीप समीचीन हैं ॥ (गया)

तृतीय दृश्य–[अलबनीका राजभवन.]

(गानरिल और उसका रसोइया, आसवाल्डका प्रवेश.)

गानरिल–क्या मेरे पिताने तुम्हें उसके विदूषकको धमकावेके कारण पीटा है ॥

आसवाल्ड–हां महाराज ! ॥

गानरिल–दिन रात वह मुझे हानि पहुँचानेमें प्रवृत्त है प्रत्येक घटिकामें वह ऐसे २ भीषण कार्य्यकर बैठता है कि, हम सब डामाडौलसे बनजाते हैं ? मैं अधिक न सहूंगी । उसके भट्टलूटेरे हुए जाते हैं और वह स्वयं तनिक २ बातोंके लिये हम्हें उलहन दिया करता है. जब उसका आहेटसे आवागमन होगा मैं उससे न बोलूंगी । मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है ऐसा कह दीजियो ॥

तुम भी यदि पहिलेकी भाँति सेवा करनेसे धीमे पड़ जावोगे तो अच्छा होगा इस अपराधकी उत्तर दाता मैं हूं ॥ [नेपथ्यमें आहेट अंगध्वनि]

आसवाल्ड--मेरे महाराज ! वह मारहा है देखो अंगध्वनि सुनाई देती है ॥

गानरिल-तुम और तुम्हारे साथी जैसी वेपरवाही तुम्हें रुचे दिखलावो जिससे तुम उसकी सेवा और स्वभावसे थके हुए प्रतीत होवो. मेरी इच्छा है कि वह मुझको इसके लिये प्रश्नकरे ? यदि वह इस वर्तावसे अप्रसन्न होवे तो मेरी बहिनके पास चला जावे जिस्के विचार इस विषयमें जो हैं वे तुमको मैं भली प्रकार जानती हूं मेरे विचारोंके सानुकूल हैं अर्थात् हुकूमत न किया जाना ॥ वह कैसा मतिहीन वृद्ध पुरुष है जो अब तक उन अधिकारोंका प्रबंध किया चाहता है जिनको वह देचुका है! मेरे जीवनकी शपथ खाकर मैं कहती हूं कि निर्बुद्धि वृद्ध मनुष्य दूसरी बेर शैशवास्थामें प्रवेश करते हैं और इस लिये चाटूक्ति तथा धमकीके साथ इनका वर्त्ताव भी होना उचित है जब चाटूक्तिका फल अच्छा होना प्रतीत न होवे. स्मरण रक्खो मैंने क्या २ कहा है ॥

आसवाल्ड—जो आज्ञा महाराजकी ॥

गानरिल—और तुम सब उसके भट्टोंका वैसा स्वागत न करो इसका फल क्या होगा इस्की तुम्हें कोई चिन्ता नहीं तुम्हारे साथियोंको ऐसाही मंत्र दो ऐसी २ बातोंसे मैं मेरे मनकी बातको प्रगट करनेका अवसर प्राप्त किया चाहती हूं और मुझे आशा है कि वह अवसर मिल जावेगा ? मैं मेरी बहिनको शीघ्रही लिखूंगी कि, वह मेरे अनुसार कार्य्य साधन करे भोजन सन्नध करो ॥ (गये)

चतुर्थ दृश्य-[उसहीमें एक भवन.]

(कैन्ट वेश बदले हुए आता है)

कैन्ट—यदि मैं अपनी शब्दध्वनिको ठीक ऐसी परिवर्त्तन करलूं

जिससे मेरा भाषण पहिचाना न जावे तो मेरा भला विचार इस काय्यंसाधन कर सकता है जिसके अर्थ मैंने मेरा स्वांग बदला। अरे निर्वासित कैन्ट! यदि तू उस पुरुषको सेवन करसके जिसने तुमको कठोर दंड दिया है तो वह समय उपस्थित होसकता है जब तेरा प्राणप्रियनाथ तुझे पूर्ण परिश्रमी पावेगा ॥

(नेपथ्यमें अंगध्वनि--लियर, भट्टों और भृत्यवर्गका प्रवेश)

लियर--मैं भोजनके लिये क्षणमात्र भी न ठहरूंगा. तुम जावो और शीघ्र तैयार करावो (एक सेवक गया) (कैन्टके प्रति) अच्छा तुम कौन हो ? ॥

कैन्ट--महाराज-एक मनुष्य ॥

लियर--तुम क्या काम करना जानते हो और हमसे क्या चाहते हो ? ॥

कैन्ट--जितना मेरी सूरतसे अनुमान किया जा सकता है उससे कुछ न्यून नहीं जानता है । जो मेरा विश्वास रक्खे उसकी सच्ची सेवा करता हूं. जो इमानदार .उससे प्रेम रखताहूं जो मति-मान और कम बोलता है उससे समागम करता हूं ईश्वरसे डरता हूं लडनाही पडे तो लड़ाईभी लेता हूं और मच्छी नहीं खाता हूं॥

लियर--तुम कैसे मनुष्य हो ? ॥

कैन्ट--एक सच्चे हृदयका मनुष्य और राजाजीके बराबर धनहीन ॥

लियर--यदि तू प्रजाहोकर इतना धनहीन है जितना राजाजी राजा होकरहैं तो तू अवश्य अत्यन्त धनहीनहै । तू क्या चाहता है?

कैन्ट--नोकरी ॥

लियर--किसकी नौकरी करेगा ? ॥

कैन्ट--आपकी ॥

लियर-क्या तू मुझे जानता है ? ॥

कैन्ट-नहीं महाराज, परन्तु आपकी आकृतिमें वह पदार्थ है जो आपमें स्वामी शब्दको उपयुक्त बनता है ॥

लियर-वह क्या है ? ॥

कैन्ट-अधिकार ॥

लियर-तुम क्या नौकरी करसकते हो ?॥

कैन्ट-ईमानदारीके साथ गोप्यबातको गुप्त रखना, अश्वारूढ़ होना, भागना, बुद्धिमें नहीं समानेवाली कथाको कहनेमें बिगाड़ देना, साधे समाचारको ऊटपटांग हांकना साधारण मनुष्य जिस बातके योग्य हैं उनमें मैं चतुर हूं और मुझमें सबसे बढिया बात परिश्रम है ॥

लियर-तेरी आयु क्या है ? ॥

कैन्ट-महाराज ! मैं इतना तरुण नहीं हूं कि गीतको सुनकर-ही तरुणीपर मोहित होजाऊं न इतना वृद्ध हूं कि निर्बुद्धि हो उसके पीछे २ लगा फिरूं । मैंने ४८ वर्ष पीछे डाले हैं ॥

लियर-अच्छा तो मेरे साथ रह और सेवा कर यदि भोजनके पश्चात मैं तुझको भली प्रकार कार्य करता हुवा पाऊंगा तो मैं तुझको मुझसे कभी दूर न करूंगा. भोजन, भोजन! मेरासेवक, मेरा विदूषक कहां है ? तुम जावो और मेरे विदूषकको यहां बुलालावो ॥

[एक सेवक गया]

(आसवाल्डका प्रवेश.)

अजी साहिब ! हमारी पुत्री कहां है ? ॥

आसवाल्ड-आपकी स्वस्ति हो-[इतना कहकर चलदिया]

लियर-यह नीच क्या कहगया ? इस गँवारको पीछा बुलावो तो. [एक भट्ट गया]. हे; मेरा विदूषक कहां है ? मुझे साक्षात ऐसा ध्यान बंधता है कि यह संसार शून्य होगया है ॥

(भट्टका प्रत्यागमन)

कहो तो, वह कुत्ता कहां रहगया?

भट्ट—महाराज, वह कहता है कि आपकी पुत्रीका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है॥

लियर—जब मैंने उसे बुलाया तो फिर वह गोला पीछा क्यों न आया?

भट्ट—महाराज, उसने गँवारू तौरसे यह उत्तर दिया कि, मैं नहीं आता॥

लियर—"मैं नहीं आता"!॥

भट्ट—हे प्रभु! सही वात क्या है इसका मुझको कुछ ज्ञान न हो परन्तु मेरे विचार में श्रीमानोंका स्वागत जिस स्नेहके साथ पहिले किया जाता था वैसा अब नहीं होता है. साधारण भृत्य स्वामीकी सेवामें जितनी हिचड मिचड करते प्रतीत होते हैं स्वयं राजकुमार और आपकी पुत्रीकी भक्तिमें भी उतनीही कमी दीख पड़ती है॥

लियर—ऐं! क्या तू यों कहता है?॥

भट्ट—हे स्वामी, मैं प्रार्थना करता हूं ऐसा कहनेमें यदि मेरी भूल हो तो आप क्षमा करें क्योंकि जब मुझ श्रीमानोंकी हानि प्रतीत होती है तो मेरा चर्ममूक नहीं वना चाहता॥

लियर—तू मुझे मेरे निज विचारकीही स्मृति कराता है, थोडे समयसे मैंही अत्यन्त बेपरवाही चीन रहा हूं, परन्तु इस वेपरवाही के होनेको उनके प्रेममें कोई कमी होजानेके कारणसे न समझकर, मैंने यह विचार किया था कि यह मेराही वहम है परन्तु मेरा विदूषक कहां है? दो दिनसे मैंने उसे नहीं देखा है॥

भट्ट—महाराज, जबसे कनिष्ट राजकुमारी फ्रांस चली गयी हैं, तबहीसे वह विदूषक तनक्षीणा मनमलीन होरहा है॥

लियर–इस विषयमें अधिक कुछ न कहो; मैंने इस बातको भलीभांति समझ रखी है। तुम जावो और मेरी पुत्रीसे कह दो कि मैं उसे कुछ कहा चाहता हूं (एक सेवक गया) तुम जावो और मेरे विदूषकको यहां बुला लावो. (दूसरा भृत्य गया)

(आसवाल्डका प्रत्यागमन)

अजी साहिब! आप इधर पधारिये फरमाइये तो मैं कौन हूं?॥

आसवाल्ड–मेरी स्वामिनीके पिता॥

लियर–अरे मेरे स्वामीके भृत्य, क्या कहा? 'मेरी स्वामिनीके पिता'? तू दो गला कुत्ता! गोला! तू पिल्ला!॥

आसवाल्ड–क्षमा करें, प्रभु, मैं इनमेंसे एक भी नहीं हूं॥

लियर–तू नीच! क्या तू मुझसे आंख मिलाता है? (मारता हुवा)॥

आसवाल्ड–महाराज मैं नहीं पीटा जाऊंगा॥

कैन्ट–और न तू गिराया जावेगा, तू चरणसे गेंद खेलनेवाला नीच (पग पकड़कर गिराता है॥)

लियर–भृत्य तू धन्य है; तू मेरी सेवा करता है; मैं तुझसे स्नेह रक्खूंगा॥

कैन्ट–आइये, महाशय उठिये चलिये! मैं आपको भेद सिखलाऊंगा:–पधारिये पधारिये,! यदि आप फिर शारीरिक ऊंचाईको मापना चाहें तो ठहर जाइये, परन्तु पधार जावें! भागिये; भागनेकी बुद्धि है या नहीं? यों॥

लियर–मेरे प्रिय भृत्य, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं: यह [आसवाल्डको] धक्के देकर निकालता है तेरी सेवाका अग्रिम है॥

[कैन्टको द्रव्य देता है]

(विदूषकका प्रवेश.)

विदूषक–(कैन्टको देखकर) मैं इसे भी किराए करलूं यह लो विदूषककी टोपी (कैन्टको विदूषककी टोपी देता है)।

लियर—अय प्रियभृत्य ! कहो तुम्हारा स्वास्थ्य कैसाहै ?

विदूषक—महाशय!तुम विदूषकटोपीको ग्रहण करोतो श्रमहो॥

कैन्ट—हे विदूषक, क्यों ? ॥

विदूषक—क्यों ! इसव्यक्तिका पक्ष करनेके कारण जो कृपापात्र नहींहै।यदि तुम(कैन्ट)पवनके झोकेके अनुसार नहीं सरझसुरझ सकोगे तो तुम्हें शीघ्रही ठंड लगजावेगी यह लो, मेरी विदूषकटोपी देखो, इस मनुष्यने (लियरने) अपनी दो पुत्रियोंको स्वदेशसे निकालकर निज इच्छाके विरुद्ध तीसरीका कल्याण किया है. इस लिये यदि तुम इसके अनुयायी बनते हो तो अवश्य मेरी विदूषक टोपीको पहिनना उचित है अय मेरे चचा ! मेरी यह अभिलाषा है कि, मेरे दो विदूषकटोपी और दो पुत्रियां हों ॥

लियर—क्यों ? ॥

विदूषक—यदि मैं अपनी सारी जीविका उनके अर्पण करदेता तो विदूषकटोपियोंको तो मैं अपनेही पास रक्खे रहता । एक तो यह टोपी है दूसरी आपकी पुत्रियोंसे माँगलीजिये ॥

लियर—देख, सावधान ! कोड़की स्मृति रहे ॥

विदूषक—सत्य वह श्वान है जिसको दूरही रहना उचित है. उसको कोडसे अवश्य मार भगाना चाहिये जब सभ्य कुत्ती अग्निके समीप तपे और सहे ॥

लियर—कैसा दुखदाई कड़ा ताना है ! ॥

विदूषक—महाशय ! मैं आपको एक वक्तृता सिखलाऊंगा ॥

लियर—सिखा ॥

विदूषक—मामा, ध्यान दो ॥

"रख पास वणो, कम लोग वता । कम बोलसदा, तवज्ञान जिता ॥
धनहाथ, उधार सदा कम दो । बहुहोउ सवार, न चाल वनो ॥
जस जीत सके, कमदाव लगा । जबज्ञान तुझे, बहुज्ञान बढा ॥
तव पास रहे तव, जानवनः । दसदो घट वीस, बचे जितना" ॥

कैन्ट-हे विदूषक ! यह तो कुछ नहीं हुवा ॥

विदूषक-तो यह विना भेट पाये वकीलकी वक्तृताके समान है तुमने मुझे इसके लिये कुछ नहीं दियाथा. मामाजी, क्या आप कुछ नहींसे कोई भी लाभ नहीं उठासकते ? ॥

लियर-नहीं रे, छोकरे-कुछ नहींसे तो कुछ नहीं होसकता है ॥

विदूषक-(कैन्टके प्रति) मेरी प्रार्थना मान इनसे कहो कि, इनकी भूमिकी आय इतनीही होती है यह एक विदूषकद्वारा कही हुई बातका विश्वास नकरेंगे ॥

लियर--एक कड़वा मूर्ख ! ॥

विदूषक--क्या आप कड़वे औ मीठे मूर्खके फर्कको जानते हैं? ॥

लियर--नहींरे, छोकरे ! मुझे सिखला ॥

विदूषक--शिक्षा जो सरदारने तुम कहँ देने धराकी दई ।
मेरे पास रखो उसे तुम चले जावो उस स्थानमें ॥
मीठा मूर्ख तुरंत और कड़वा प्रत्यक्ष देखो सही ।
रंगीला इक तो यहाँपर खड़ा दूजा मिलेगा वहां ॥

लियर-क्या तू मुझे मूर्ख बताता है रे छोकरे ? ॥

विदूषक-निजकी अन्य सब उपाधियोंको आप दे चुके हैं अब यहही उपाधि शेष है जिस्के साथ आपका जन्म हुवा था ॥

कैन्ट-हे प्रभु ! केवल यह मूर्ख नहीं है ॥

विदूषक-(अर्थको उलटा समझकर) धर्मकी शपथ नहीं-सरदार और बडे २ मनुष्य मुझेही इकेला मूर्ख नहीं रहनेदेते यदि मेरे नामपर इस्का ठेका किया जाता है तो वेभी अपना २ भाग रक्खा चाहते हैं और सभ्यस्त्रियांभी संपूर्ण मूर्खता तो मेरे अर्थ नहीं छोड़ती कुछ २ वेभी छीनती हैं, अब मामुं, मुझे एक अंडा दो तो मैं तुम्हें दो मुकुट दूं ॥

लियर- ये मुकुट कैसे होंगे ? ॥

विदूषक-जब उस अन्डेको बीचमेंसे चीरकर उसके अंदरकी सफेदीको खाजाऊंगा तव दोनों अंडेके ऊपरके मुकुट जब आपने निजमुकुटके दो बराबर खण्डकर दोनोंही भागोंको दे डाले तब आपने उसमनुष्यके समान काम किया जो अपने गधेको पीठपर बांध कीचडके पार हुवा था। जिस समय आपने निज सुवर्णसंघटित मुकुटोंको देडाले उसकाल आपके कोरे मारे मुकुटसे बुद्धि जातीरही थी। यदि इसविषयमें मैं मेरीही नांई बातें कररहा हूं तो वह मनुष्य जो इसबातको प्रथम पहिचानता है कोडे दियेजाने योग्य है ॥

लियर--अरे छोकरे ! तू कबसे इतने गीत गानेलगा है ? ॥

(गाताहै) मालव राग, प्रतिमंठताल ॥

"कम मरजीन विदूषक, थी पर तेरे। पर अव विज्ञभये सम तेरे ॥
नासकें कारि बुद्धिविकास। अस समवानर वे" ॥

विदूषक-मामुंजी ! मैं तबहीसे गाने लगाहूं जबसे आपने निज पुत्रियोंको अपनी माता बनाई है. क्योंकि जब आपने उनको च्छडी (ताडनार्थ) देडाली और अपनी पीठ उनके सोंई बनादी ॥

(गाताहै) तब सुखकारणता कारि वे सब रोई।
दुखकारि गीत, लगे हम गाई।
श्वान मारतदेख, नरेश।
अरुमतिहीन मह ॥

हे मामुं ! मैं प्रार्थना करताहूं कि, तुम्हारे विदूषकको मिथ्याभाषण सिखलानेके अर्थ एक अध्यापक नियत कर दीजिये ॥

लियर-परंतु यदि तू मिथ्याभाषण करेगा तो हम तुझे कोडे लगवावेंगे ॥

विदूषक-मुझे आश्चर्य है कि आप और आपकी पुत्रियां कैसे ॥चेमें ढलेहो. वे मेरे सत्यबोलनेपर कोडे लगवाती हैं और आप

मुझे झूंट बोलनेपर पिटवावेंगे और कभी २ मैं चुप बैठेरहनेके कारण कोडे लगायाजाता हूं। विदूषकहोनेकी अपेक्षा चाहताहूं कि मैं अन्य वस्तु हुवा होता तो भी हे मामा। मैं तुम्हारे ऐसा नहीं बनाचाहता, आपने तो निजबुद्धिको दो तरफा काटकर बांट दी और बीचमें कुछ नहीं रखाहै. वहदेखो, आपकी बुद्धिका एक टुकडा इधर आरहाहै॥

(गानरिलका प्रवेश.)

लियर--अहो, मेरी पुत्री! यह तीन तेवरी क्यों चढारक्खीहै. मेरी समझमें तो तुम थोडे दिनोंसे बहुत कुछ भौंह खरवट करने लगीहो

विदूषक--जिससमय आपको इनके ललाट खरवटकी सुरता करनेकी आवश्यकता नथी तब आप बहुत अच्छे मानव थे; परंतु आप आकारशून्य '०' रहगये। मैं आपकी अपेक्षा इससमय जियादा अच्छाहूं क्योंकि मैं एक विदूषकहूं आपतो कुछ भी नहीं हैं (गानरिलके प्रति) हां, हां, ठीक है मुझे मौन लगाना उचित है क्योंकि यद्यपि तुम कुछ कहती सुनती नहीं हो तथापि तुम्हारे मुखारविन्दकी यहही आज्ञा प्रतीत होती है.... चुप, चुप, (मुँहपर हाथ रखकर)॥

"धान पान नहिं राखे जोही।
भूख त्रास से रोवे सोही"॥

लियरको अंगुलीसे बतलाकर) यह देखो बिना चनेका फोतरा॥

गानरिल--महाराज! केवल यह आपका बुरा भला सब कुछ कहनेवाला विदूषक ही नहीं वरन् आपके अन्य धृष्ट अनुयायी भी क्षण २ में नुकता चीन्हीं और कलह किया करते हैं. ऐसे २ घोर उत्पात उठाते हैं कि, जिनका सहन नहीं होसकता। हे पिता! मैं इस आशामें थी कि, आपको भलीप्रकार निवेदन कर हानि होने के पहिले इन सब दोषोंका निषेध करालेती। परंतु आपने वयं कतिपय दिवसों पहिले जो कुछ कहा और किया है उसके कारण मुझे भय है कि, यह हलचल आपही की सलाह और अनु

मतिद्वारा होती और बढती है, परंतु यदि आप ऐसा करते रहेंगे तो यह अपराध निंदाबिहीन न रहेगा न प्रबंधका कियाजाना रोका जासकेगा और सर्वसाधारण मनुष्योंके हितार्थ जो प्रबंध किया जावेगा उसके कारण यदि आपका कुछ अप्रिय सम्पादित होजावे (जिसका होना अन्यथा लज्जाकी बात है) तो भी आवश्यकताके कारण हमारी यह कार्यवाही उचितही समझी जावेगी ॥

विदूषक-हे मामुं ! आप जानतेही होंगे कि-

"कव्वेने कोयल कहँ, चुगादिया अरुवास ।
तासें कोयल चतुरने, किया कवेकानास ॥

फिर क्या था चिराग गुल और पगड़ी गायब ॥

लियर्-क्या आप हमारी पुत्री हैं? ॥

गानरिल-देखो महाराज ! मैं चाहतीहूं कि, आप उस बुद्धिमानी के साथ कामकरें जिससे आप परिपूर्ण हैं और ऐसे स्वभावको दूर करें जो थोडे दिनोंसे आपके सत्यस्वरूपका परिवर्तन करता जाता है ॥

विदूषक-गधा क्या नहीं जानता है कि, गाड़ी घोड़ेको कब खेंचाकरती है । अहो, प्यारी ! मैं तुझपर आशक हूं ॥

लियर--क्या कोई मुझे यहां जानता है ? यह मैं लियर नहीं हूं क्या लियर यों चलाकरता है ? यों बोलाकरता है ? उसकी आंखें कहां हैं ? स्यात् उसकी मनकी शक्ति निर्बलपड़गयी है ! एं! क्या मैं जागृतदशामें हू ? नहीं नहीं ऐसा न होगा । कौन ऐसा है जो कहसके कि मैं कौन हूं ? ॥

विदूषक--लियरकी परिछाया ॥

(उसकी बात न सुनकर)

लियर्-वा मैं ही इसका अनुसंधान करूं क्योंकि राज्यचिन्ह विद्या और विवेकशक्तिका आसरा और सहायता लेकर मुझको सच्चाविश्वास नहीं होसकता कि, मेरे पुत्रियां हैं ॥

विदूषक-(अपनीही धुनिमें) जिस्को वे पुत्रियां आज्ञावर्त्ती पिता बनाया चाहती हैं ॥

लियर--हे सुंदरी. गयतीका नाम क्या ? ॥

गानरील-महाराज ! इस प्रकारका आचरण ठीक उस भाँतिका है जैसे आपके अन्यान्य नूतनताने प्रार्थी हूं कि आप मेरे विचारोंको भलीप्रकार समझें । आप वृद्ध और अर्च्य हैं तो आपको बुद्धिरखनाभी योग्य है ॥ देखिये, आप सौ २ भट्ट और भृत्य रखते हैं जो ऐसे शठ; ऐसे असंयमी और ऐसे उत्पाती हैं कि हमारी राजसभा उनके दुराचरणोंके कारण लुटेरोंकीसी सराय दिखाई पड़ती है । इनका भी मनुष्योंकी "खावो, पीवो, चैन करो" ऐसी २ बातोंने हमारे सुंदर राजभवनको सराय वा वाराङ्गनागृह बना-दिया है । ऐसे निर्लज्जकर्म्मोंका शीघ्र प्रबंध होना आवश्यक है । इसलिये मेरी प्रार्थना स्वीकार आप निजभृत्यसमुदायको घटादेवें. अन्यथा मुझे स्वयं इनको कमकरना पडेगा और शेषभृत्य जो आपकी सेवा करेंगे ऐसे मनुष्य होने उचित हैं जो आपकी वृद्धाव-स्थाके सुयोग्य और अपने आप और श्रीमानोंसे भलीप्रकार परिचितहों ॥

लियर--दुरात्मा और दुष्ट ! अच्छा, अरे हो ! हमारेघोड़ोंपर काठी करो और हमारे भृत्योंको एकत्र करो शीघ्र शीजारः ! मैं तुझे न सताऊंगा अबभी मेरे एक दूसरी पुत्री विद्यमान है ॥

गानरिल--आप मेरे मनुष्योंको पीटते हैं और आपके दुष्ट बागीभृत्य उनसे बड़ोंके साथ सेवक योग्य आचरण करते हैं ॥

(अल्बनीका प्रवेश)

लियर--जो अपनी भूलको विलंब करके पहिचानता है उसे निस्सन्देह दुख उठाने पडते हैं (अल्बनीके प्रति) अय महाशय ! आप आगये ? कहिये आपकी भी ऐसीही इच्छा है ? मेरे घोड़ोंको तैय्यार करो रे ! (कुछ सोचकर) अहो कृतघ्नता तू पत्थर

समान हृदयवाली राक्षसी ! सन्ततिमें प्रगट होनेपर तू सामुद्रिक विकरालजीवोंसेभी अधिक भयावनी होजाती है ॥

अल्बनी–महाशय, धैर्य धारण करो ॥

लियर–(गानारिलके प्रति) तू निंदनीय दुरात्मा ! तू मिथ्या कहरही है ? मेरे मनुष्य बहुत योग्य हैं जो अपने धर्मकी संपूर्ण बातोंसे परिचित है और अपने नामके बड़प्पनको भलीप्रकार संरक्षित रखते हैं ॥ अहो ! ऐसा थोड़ा अपराध कारडेलियामें कैसा विद्रूप प्रतीत हुवा था जिसने धूम्ररथके समान मेरे स्वभावको इसके जमेहुए स्थानसे चिगादिया, मेरे हृदयसे संपूर्ण प्रेमको निचोड़ इसमें औरभी क्षार मिलादिया ॥ अरे लियर ! लियर ! लियर ! इस द्वारको ठोक जिसने तेरी नादानीको प्रवेश किया (मस्तकमें मारता है) और तेरी प्रिय विवेकशक्तिको निकाल बाहर फेंका ! आवो मेरे सेवको चलो ॥

अल्बनि–महाराज ! मैं निर्दोषी हूं क्योंकि मैं आपके कोपके कारणसे अनभिज्ञ हूं ॥

लियर–स्यात्, महाराज, आप ऐसेही होंगे ॥ (ऊंचा सिर करके) सुन, प्राकृति. सुन; हे प्रियदर्षी, मेरी निवेदन स्वीकार ! यदि तू इस दुष्टजीवको फलवती बनाया चाहती है तो तेरे इस विचारको बंध रख और इसके गर्भाधानमें वंझड़पनको प्रवेशकर । संपूर्ण श्रोतोंको सुखादे और इसके निकृष्ट उदरसे एक बालक को भी न निकाल जो इसका सन्मान करे ! परन्तु यदि तू इसको माता बनायाही चाहती है तो इसका सन्ततिको द्वेष परिपूर्ण बना जो जीवित रहकर इसका अस्वाभाविक विरोधी और क्लेशकारी बना रहे । युवावस्थामें इसके मुखपर झुरियां और निरंतर रुदन करा २ कर इसके कपोलोंमें सोते बनावे और इसकी संपूर्ण मातृक चिन्ता और उपकारोंको हँसी और निंदामें उड़ावे जिससे इसको विदित होजावे कि, सन्ततिका कृतघ्न होना सर्पदंष्ट्रसे भी अधिक तीक्ष्ण होताहै ! चलो, चलो ? (गया)

अलबनी-तुमको अपने पूज्य देवोंकी शपथ है, मुझे इसका कारण बतावो।

गानरिल-आप इसका कारण जाननेके लिये व्यग्र न हूजिये और उसको वृद्धावस्थामें जैसे उसका मन चाहे करने दीजिये॥

(लियरका पुनःप्रवेश.)

लियर-अहह! मेरे पचास अनुचरोंको एकही फटकारमें उड़ादिये! एकही पक्षमें?॥

अलबनी-महाराज! बात क्या है?

लियर-तुमसे कहूंगा (गानरिलके प्रति) मुझे बड़ी लज्जाहै कि, तू मेरे मनुष्यत्वको यों डिगासके और ये सुतप्त अश्रु जो रोकरो २ भी गिरेजाते हैं तेरे कारण बहें. ईश्वर करे तेरा सत्यानाश हो! पिताके शापके प्रहारसे तेरी प्रत्येक इन्द्री ऐसी क्षत होजावे कि, फिर कभी चिकित्साके योग्य न रहे। (आँखोंपर अंगुली रखकर) वृद्ध मतिहीननेत्रो! यदि इस कारणसे तुम फिर रुदन करोगे तो मैं तुम्हें निकाल डालूंगा और उस नीरके साथ जो तुम डाल रहे हो, बालू सजल करनेके हेतु फेंकदूंगा॥ ऐं, क्या इसका यह परिणाम हुआ? अस्तु। अब भी मेरे एक दूसरी पुत्री है जो मुझे निश्चय है, दयालु और सुखदायी है जब वह तेरी इस बाधाको श्रवण करेगी तो उसके नखोंसे तेरे शृगाल स्वरूपको छिन्न २ कर डालेगी तू स्वयं देखलेगी कि, मैं उस स्वरूपको फिर धारणकर लूंगा जिसे तू सदाके लिये दूर कियाहुवा समझती है। तू अवश्य देखेगी, तुझे निश्चय रहे।

गानरिल-स्वामी, आपने देखा?॥

(लियर, कैन्ट, भृत्यवर्गका गमन.)

अलबनी-हे गानरिल! जो पूर्ण स्नेह मैं तुम्हारे साथ रखताहूं उसके कारण ऐसा पक्षपाती नहीं बना चाहता कि:-

गानरिल-प्रार्थना करती हूं आप शान्ति रखें। अरे आस्वाल्ड!

हो ! (विदूषकके प्रति) तुम, तुम, जो विदूषक होनेकी अपेक्षा अधिक शठ हो, तुम्हारे स्वामीके पीछे भागो ॥

विदूषक–मामा लियर ! मामा लियर ! ठहरो तो, विदूषकको भी तुम्हार साथ ले चलो ॥

चला कभी नर आइकै, धरै लोमरी कोय ।
अस पुत्री अरु पाइकै, बांधि राख है सोय ॥
बाँधे राख है सोय ताज भेरी ले आवे ।
और शीघ्रही जाय, करे क्रय फाँसी लावे ॥
निहचै हन्तव्य ये, खेंच सो लगा करिगला ।
यह जानजिय यह लो, विदूषक पीछेही चला ॥ (गया)

गानरिल–मैं इस मनुष्यको उत्तम सलाह देचुकी हूं सौ २ भट्ट ! ऐं ! सौ २ भट्ट सर्वदा सन्नद्ध रखने देना अवश्य सलाह और रक्षाकी बात है ? प्रत्येक स्वप्न; प्रत्येक कर्णभन्कार, प्रत्येक मिथ्याविचार, प्रत्येक शिकायत, प्रत्येक अप्रसन्नतापर वह बुढा इनके बलद्वारा निजरक्षा करके हमारे प्राणोंको मरजीपर छोड़ सकता है ॥ अरे आस्वाल्ड ! मैं पुकार रही हूं न ! ॥

अलबनी–उचित है उससे तुम अधिक भयभीत हो ॥

गानरिल–अधिक विश्वास करनेकी अपेक्षा भयभीत रहनेमें जियादा बचाव है मुझे उचित है कि, उन हानियोंको जिनका मुझे भय है दूर करूं और स्तब्ध किये जानेके भयसे छूटूं । मैं उसके दिलकी बात जानती हूं । जो २ बातें उसने कही हैं मैंने सब मेरी बहिनको लिखदी हैं । इस बातके अनुचितपनका दिखला देनेपर भी यदि वह उसे और उसके सौ भट्टोंको आवास देगी तो–

(आस्वाल्डका प्रवेश.)

अरे आस्वाल्ड ! क्यों मेरी बहिनके नाम वह पत्र लिख दिया ? ॥

आस्वाल्ड–हाँ, महाराज ॥

गानरिल—आदमी साथ लेकर और अश्वारूढ हो अभी जावो मेरे विशेष भयसे उसको भलीभाँति परिचित करदो और साथमें तुम निज बुद्धि बलसे ऐसी २ बातें बतलावो कि, जिनको वह बात औरभी पक्की होजाये; जावो और पीछे आनेमें बिलंब न करो (आ-स्वाल्डका गमन) हे प्रभु, देखिये, आपकी यह कोमल और धीरो कार्य्यवाही, यद्यपि मैं इसे दूषित नहीं बताती तथापि क्षमा मांग-कर यह कहा चाहती हूं कि, इस हानिकर कोमलताके कारण आपकी जितनी प्रशंसा होती है उसकी अपेक्षा बुद्धिकी कमीके हेतु आप अधिक निंदित किये जाते हैं ॥

अल्बनी—मैं नहीं कह सकता कि, तुम्हारे नेत्र कितने भविष्य काळदर्शी हैं, परंतु हां, प्रायः हम चौंवे हुवा चाहते हैं और दुवे रह-नेकी भी पड़जाती है ॥

गानरिल—तो फिर ?

अल्बनी—अच्छा, अच्छा, देखें क्या फल निकलता है[गमन]

पंचमदृश्यः—[अल्बनीके भवनके सन्मुख एक चौक.]

(लियर, कैन्ट और विदूषकका प्रवेश.)

लियर—इस पत्रको ले तुम शीघ्र ग्लास्टरकी कोठी जावो. इसे देखनेसे मेरी पुत्रीके जो प्रश्न हों उनके उत्तर देनेके अतिरिक्त तुमको चाहिये एक शब्द भी अधिक न कहो। यदि तुम जल्दी न करोगे तो मैं तुम्हारे पूर्वही वहां पहुँच जाऊँगा ॥

कैन्ट—महाराज ! इस पत्रको पहुँचानेके पूर्व मैं कभी निद्रा न लूंगा ॥ [गया]

विदूषक—यदि मनुष्यकी बुद्धि उसकी एडीमें होती तो क्या इसमें छाले पड़जानेका भय न हो ? ॥

लियर—भय अवश्य होता।

विदूषक--तो आप निश्चिन्त रहें क्योंकि आपकी बुद्धिको ढीले जूते नहीं पहिनने पड़ेंगे ॥

लियर--एं, एं, एं, ॥

विदूषक--आप देखेहींगे, आपकी दूसरी पुत्री आपका स्वागत करेगी; क्योंकि यद्यपि वह इस पुत्रीके इतनी सदृश है जितना "क्रैब" "अपिल" के सदृश है तथापि मैं कहसकता हूं सोही कह सकताहूं ॥

लियर--तू क्या कह सकता है रे छोकरे ? ॥

विदूषक--ये दोनों पुत्रियां परस्परमें ऐसी तुल्य हैं जैसे एक "क्रैब फल" का स्वादु दूसरे "क्रैबफल" के स्वादुके समान होता है ॥ क्या आप कह सकते हैं कि, मनुष्यकी नासिका उसके मुखके मध्यमें क्यों रक्खी गयी है ?

लियर--नहीं ॥

विदूषक--यों रक्खी गयी है कि, उसके नेत्र नासिकाके दोनों ओर रहे, जिस्से वह जिस वस्तुको सूंघ न सके उसे देख लेवे ॥

लियर--(उदास होकर) मैंने उसे (कारडेलियाको) हानि पहुँचाई है ॥

विदूषक--क्या आप कह सकते हैं कि "आयस्टर जीवधारी" अपने लिये विवर किसतरहसे बनाता है ?

लियर--नहीं ॥

विदूषक--और न मैं कह सकता हूं परंतु मैं कह सकता हूं कि घोंघा क्यों घर रखता है ॥

लियर--क्यों ? ॥

विदूषक--अपने मस्तकको नीचे देनेके लिये; इसलिये नहीं कि, पुत्रियोंको देडाले और अपने शृंग घरबिना रक्खे ॥

लियर—मेरे स्वभावको मैं भूल जाऊंगा; ऐसा दयालु पिता । क्या मेरे घोड़े सन्नद्ध होगये ? ॥

विदूषक—आपके गधे (सेवक) उनको तय्यार कर रहे हैं ? सप्त ऋषिके तारे सातही हैं इस बातका एक अच्छा कारण है ॥

लियर—इसलिये कि, वे आठ नहीं हैं ? ॥

विदूषक—(मुसक्याकर) निःसंदेह यह ही कारणहै आप तो अच्छे विदूषक होसकते हैं ॥

लियर—ऐसे बलात्कारसे छीनना अहो राक्षस तुल्य! कृतघ्नता॥

विदूषक-हे मामाजी ! यदि आप मेरे विदूषक होवे तो मैं आपको उचित समयके पूर्व वृद्ध होजानेके लिये पिटवाता ॥

लियर—यह क्यों ? ॥

विदूषक—आपको मतिमान होनेके पहिले वृद्ध होना न चाहिये था ॥

लियर--हे ईश्वर ! मुझे विक्षिप्त न होने दे. न होने दे ! ॥ मुझे सचेत रख । मैं विक्षिप्त नहीं हुवा चाहता ॥

(एक सभ्यका प्रवेश.)

कहो ! क्या घोड़े सन्नद्ध हैं ? ॥

सभ्य—महाराज ! तय्यार हैं ॥

लियर--और छोकरे ! ॥ [सबका गमन]

(जवनिका गिरती है.)

प्रथम अङ्क समाप्त ॥

द्वितीय अङ्क २.



प्रथम दृश्य-[ग्लास्टरकी कोठी.]

(एड्मन्डका प्रवेश और क्यूरन उससे भेटता है) ॥

एडमन्ड--क्यूरन ! तुम्हारी स्वास्ति हो ॥

क्यूरन--और महाशय ! आपकी भी स्वस्ति रहे. मैं आपके पिताके पाससेही आरहा हूं और उनको सूचितकर आया हूं कि, ड्यूक कार्नवाल और उनकी पत्नी रीगन आज रात्रिको यहां उनके गृह आवेंगे ॥

एडमन्ड--ऐसा क्यों ? ॥

क्यूरन--यह मुझे विदित नहीं है. आपने समाचार तो सुन रक्खेहोंगे; अर्थात् उन अफवाहोंको; क्योंकि अभीतक ये सब कर्ण-भन्कारेंही हैं ॥

एडमन्ड--नहीं नहीं; मैंने नहीं सुनी हैं. कहो तो क्या२ हैं ? ॥

क्यूरन--कार्नवाल और अल्वनीके मध्य, सम्भव है शीघ्रही संग्राम हो. क्या आपने इस विषयमें कुछ नहीं सुना है ? ॥

एडमन्ड--नहीं एक शब्द भी नहीं ॥

क्यूरन--तो आप शनैः सुनलेंगे, अच्छा, महाशय आप सुखी रहें ॥ (गया)

एडमन्ड--क्या आजरात्रिको ड्यूक यहां आवेंगे ? वो समीचीन है ! अहहा!यह तो अत्यन्त समीचीन है !! उनके यहां आनेसे तो मेरा कार्य्य स्वयं सिद्ध हो जावेगा। मेरे पिताने मेरे भ्राताको स्तब्ध करनेके हेतु द्वारपाल नियत करादिये हैं. अब मुझे एक

अप्रिय कर्म्मसम्पादन करना पड़ेगा. ईश्वर करे, मेरे सौभाग्यका उदय शीघ्रही हो ! ए भाई ! एकवात है. नीचे उतरो, भाई ! भाई!

(एडगरका प्रवेश.)

पिताने तुम्हारे पकड़वानेको रक्षक नियत करदिये हैं अय भाई ! इस स्थानसे दूर भागजावो. तुम्हारे गुप्तवासके समाचार दिये गये हैं. अभी यह रात्रिका अवसर भी अच्छा है. क्या तुमने कार्नवालके विरुद्ध कुछ नहीं कहा है? वह यहां ऐसी रात्रिके समय बड़े वेगसे आरहा है और रीगन भी उसके साथ है अथवा क्या तुम कार्नवालका पक्षकर अल्वनीके विरुद्ध नहीं बोले हो ? विचारो, विचारो॥

एडगर–मुझे निश्चय है मैंने एक शब्द भी मुखसे नहीं निकाला है ॥

एडमन्ड–देखो, पिताके आनेकी आहट सुनाई देती है. मुझे क्षमा करो. बहानेसे मुझे तुम्हारेपर कृपाण निकालना पड़ता है तुम भी कृपाण निकालो और निज रक्षा करते हुए प्रतीत होवो और अच्छी प्रकार लड़नेकी चेष्टा करो (उच्चस्वरसे) आधीन होकर मेरे पिताके सन्मुख चलो अरे हो, यहां मशाल लावो. (धीरेसे) भाई ! अब भाग जावो. (चिल्लाकर) मशाल ! मशाल, मशाल ! ! (धीरेसे) अच्छा तुम्हारी रक्षित रहे–(एडगर का गमन) अब मैं थोड़ासा रक्ताङ्कित होलूं तो अवश्य मेरे बीभत्स प्रयत्नका विश्वास होजावेगा [कृपाणसे भुजाको क्षत करता है] मैंने मद्यपोंको तमाशे करते समय इससे भी अधिक करते देखा है. हे पिता, हे पिता, पकड़ो, पकड़ो ! क्या कोई भी सहायता नहीं है ?

(ग्लास्टर और भृत्य मशालें लिये आते हैं)

ग्लास्टर–अरे एडमन्ड, वह दुष्ट कहां है ? शीघ्र बतला ॥

एडमन्ड–यहीं अँधियारेमें वह खड़ा था उसका तीक्ष्ण कृपा-

ण निकाला हुवा था, दुष्टमंत्रोंको सर सराता हुवा ? चन्द्रमादेवको सहायी बना रहनेकी प्रार्थना करता हुवा ॥

ग्लास्टर-परंतु वह कहां है ?

एडमन्ड-महाराज, देखिये तो कैसा रुधिर बह रहा है ? ॥

ग्लास्टर-परंतु वह नीच कहां है ?

एडमन्ड-महाराज, इसही राहसे भागा है ॥ जब वह किसी भी उपायसे ॥

ग्लास्टर-अरे हो! उसका पीछा करो; शीघ्र उसके पीछे भागो (थोड़े सेवक गये) किसीभी उपायसे क्या ?

एडमन्ड-श्रीमानोंके वध हेतु मुझे न फोड़सका; परंतु मैंने उसे समझाया कि, पिता और सन्तति कैसे २ और कितने प्रबल बन्धनोंसे सम्बन्धित हैं और बदला लेनेवाले देवता पितृघ्न पुरुषोंपर बिजलियां गिराते हैं. महाराज, संक्षेपसे, जब उसने देखा कि मैं उसके प्राकृति विरुद्ध कर्मोंका विरोधी और घृणा करनेवाला हूं भयंकर रूपसे अपने सन्नद्ध कृपाणद्वारा मेरे रक्षा शून्य शरीरपर हमलाकर इस भुजाको क्षत किया; परंतु जब उसने देखा कि मैं साहस पूर्वक युद्ध करनेको सन्नद्ध हूं अथवा मेरी उच्च स्वरकी टेरसे भयभीत होकर वह बड़े वेगके साथ यहांसे भागगया ॥

ग्लास्टर-उसे खूब भागने दो इस भूमिमें तो वह बिना पकड़े जानेके न रहसकेगा और जब पकड़ा जावेगा तब-वध वह उदार ड्यूक जो मेरे स्वामी शिरोधार्य और रक्षक हैं आज रात्रिको यहां पधारते हैं. उनकी आज्ञासे मैं यह प्रकाशित करादूंगा कि जो नर उसका पता लगावेगा वह हमारे धन्यवादोंका पात्र होगा पश्चात, वह घातक नीच जलादिया जावेगा; परंतु यदि कोई मनुष्य उसको छुपालेगा तो वह यमपुर यात्री बनेगा ।

एडमन्ड—जब मैंने उसे उसके विचारोंसे रोकना चाहा तो उसे अपने दुष्कर्मोंको सम्पादन करनेमें पक्का पाया तब मैंने उसको दुर्वचन कहे और धमकाया कि, मैं उसके विचारोंको प्रगट कर दूंगा उसने उत्तर दिया तू भूमिधन पानेके अयोग्य नीजात ! क्या तू यह समझता है कि यदि मैं तेरे विरुद्ध बनबैठूं तो तेरे साहस धर्म्म वा योग्यताके थोड़ेसे विश्वासके कारण तेरे शब्दोंपर विश्वास किया जावेगा ? नहीं ॥ देख तेरी इस विदित कीहुई बातको मैं मिथ्या प्रकटकर यह प्रकाश करदूंगा कि, ये सब बातें तेरीही घटना दुष्टता और धूर्त्ततासे हुई हैं. तू सम्पूर्ण संसारके मनुष्योंको मूर्ख समझियो यदि वे उन लाभोंको न समझसके जो मेरी मृत्युके होनेसे तेरे हाथ लगसकते हैं और जिन लाभोंकी आशाने तुझे मेरे व... स्यात्...य समन्वित-प्रबल उत्साह दिया है ॥

कार्नवाल-... हैं ॥ नीच ! क्या वह अपने पत्रको भी अस्वीकृत करेगा ग्लस्टर-जो ऐसे कु... नहीं रहा. (नेपथ्यमें वाद्यध्वनि) सुनो यह ड्यूकके आनेका वाद्य है इनके यहां आनेका कारण मुझे ज्ञात नहीं है मैं संपूर्ण बन्दरगाहोंपर पहरेवालोंको रखदूंगा; इस उपायसे वह नीच कदापि न बचसकेगा. इसकी आज्ञा मुझे ड्यूक देदेवेंगे। इसके उपरांत मैं उसके चित्रको दूरपरे सब स्थानोंमें भिजवाऊंगा जिससे संपूर्ण प्रजा उसके स्वरूपसे परिचित रहे ॥ और अय मेरे सच्चे और प्राकृतिक सपूत पुत्र तुझको मेरा उत्तराधिकारी बनानेके हेतु मैं प्रयत्न करूंगा ॥

(कार्नवाल, रीगन और भृत्यवर्गका प्रवेश.)

कार्नवाल—मेरे मान्यवर मित्र ! अबही जब हम इधर आरहे थे तब विचित्र समाचार हमारे सुननेमें आये हैं ॥

रीगन-यदि यह कथा सत्य हो तो अपराधीको जितना दंड दिया जावे थोड़ा है. कहिये महाराज, आपका स्वास्थ्य तो अच्छा है ?॥

ग्लास्टर--अहो देवी ! मेरा जीर्णहृदय फटा जाता है, फटा जाता है ॥

रीगन--ऐं ! क्या मेरे पिताके दत्तकपुत्रने आपके वध हेतु प्रयत्न किये हैं ? उस आपके एडगरने ? ऐं ! ! !

ग्लास्टर--हे देवी, मैं लज्जावश इस बातको प्रगट नहीं किया चाहता ॥

रीगन–क्या वह उन उत्पाती भट्टोंकी गोष्ठीमें नहीं था जो मेरे पिताकी सेवामें हैं ?

ग्लास्टर--मुझे इसका कुछ ज्ञान नहीं है ॥ हन्त, विधि ! कैसा अनिष्ट !

एडमन्ड–हाँ, महाराज, यह उनहीके न फोड़सके [illegible] -ने-
ति कैसे २ और छित [illegible]
में था ॥

रीगन–तो उसके वञ्चक होजानेमें ला लेनेवाले देवता [illegible] है
उन्हींने उसको ऐसे वृद्धपुरुषके वध हेतु [illegible] है कि, इनके भूमि-धनसे निज व्ययको पूरा करें । आज दिनान्त समय, मेरी बहिनने मुझे इस विषयमें सूचित करदिया है और सलाह दी है कि, यदि वे मेरे गृह आवें तो मुझको उचित है कि, मैं वहांपर उनसे न मिलूं ॥

कार्नवाल--प्यारी रीगन ! तुझे निश्चय रहे, मैं भी उनसे न मिलूंगा । हे एडमन्ड, मैंने सुना है कि तुमने अपने पिताकी सेवा आज्ञाकारी पुत्रकी नाईं की है ॥

एडमन्ड--महाराज, ऐसा करना तो मेरा धर्म है ॥

ग्लास्टर–इसने उसका भेद लेना चाहा था और उसको स्तब्ध करनेके उपायमें इसे यह आघात पहुँचा है ॥

कार्नवाल–उसका पीछा भी किया गया है वा नहीं ? ॥

ग्लास्टर–महाराज ! पिछा तो किया गया है ॥

कार्नवाल--यदि वह पकडा जावे तो फिर कभी उसके द्वारा हानि किये जानेका भय न हो सकेगा. तुम्हारी सिद्धिके साधनमें मेरे अधिकारसे जितना लाभ ग्रहण किया चाहो, निस्संदेह करो। अय एडमन्ड-जो इस समय अपने धर्ममें और आज्ञावर्ती रहनेके कारण पूर्ण प्रशंसाके योग्य है, तुम्हें हम अपनाते हैं. ऐसे गहन विश्वासपात्रोंकी हमें अत्यन्त आवश्यकता है. सबसे पहिले हम तुमको हमारा सहचर बनाते हैं ॥

एडमन्ड—मेरी अयोग्यता चाहे जितनी हो, मैं इमानदारीके साथ आपकी सेवा किया करूंगा.

ग्लास्टर—इसके लिये मैं श्रीमानोंको धन्यवाद देता हूं ॥

कार्नवाल—स्यात् आप हमारे यहां आनेके कारणसे अनभिज्ञ हैं ॥

रीगन—जो ऐसे कुसमय और अँधियारी रात्रिमें यहां चले आये हैं। हे ग्लास्टर महाशय! एक गुरु और गहनकार्यके साधनमें हमें आपकी सलाह लेनी है। मेरे पिता और बहिन दोनोंने मुझे उनके परस्पर विग्रहके विषयमें लिखा है जिनका उत्तर मेरे ही भवनसे देना अधिक समीचीन होता; परंतु वे दोनों दूत उत्तराभिलाषी यहांही उपस्थित हैं। अहो, हमारे वृद्ध सुमित्र! आप धैर्य धारण करो और हमारे कार्यार्थ अपनी आवश्यकीय सलाह शीघ्र प्रदान करो ॥

ग्लास्टर—देवी, मैं आपकी सेवामें उपस्थित हूं और श्रीमानोंका स्वागत करता हूं (गमन)

द्वितीय दृश्य--[ग्लास्टरकी कोठी.]

(कैन्टका प्रवेश; सामनेसे आस्वाल्ड आता है.)

आस्वाल्ड--मित्र, तुम्हारी स्वस्ति हो; क्या इस भवनसे सम्बन्ध रखते हो?॥

कैन्ट--हाँ ॥

आस्वाल्ड--फिर बतावो तो मैं घोड़ेको कहां बांधूं ? ॥

कैन्ट--पङ्कमें ॥

आस्वाल्ड--यदि मुझसे स्नेह रखते हो तो कृपाकर बतावो॥

कैन्ट--मैं तुझसे स्नेह नहीं रखता ॥

आस्वाल्ड--बहुत अच्छा, तो मैं तुम्हारी कोई परवाह भी नहीं करता ॥

कैन्ट--यदि मैं तुझे "लिप्सबरी" की सीतामें डाल देता तो तू अवश्य मेरी परवाह करने लगता ॥

आस्वाल्ड--तुम मेरेसे ऐसा वर्त्ताव क्यों करते हो ? मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं हूं ॥

कैन्ट--अरे ! मैं तुझे जानता हूं ॥

आस्वाल्ड--तुम मुझे क्या जानते हो ? ॥

कैन्ट--नीच; दुष्ट, खिन्न अस्थिका भक्षक; शठ, अहंकारी, ओछा, भिक्षुक, साथ मुद्रावाला, मलीन, तीन आभूषणवाला, उनके मोचे पहिननवाला नीच; कायर, पिटकर चिल्लानेवाला; दर्पणमें मुँह देखनेवाला, नीच टहल करनेवाला, मुँहको रंगनेवाला, दुरात्मा; एक ऐसा नीच कि, जिसको मैं ठोंक २ कर हूहू कराऊंगा यदि तू अपनी इन सच्ची उपाधियोंके एक अक्षरके लिये भी नाहीं करेगा ॥

आस्वाल्ड--अहो. तुम कैसे विकराल मनुष्य हो जो इसप्रकार मुझे धृकते हो जो न तुम्हें जानता है और जिसे न तुम जानते हो ॥

कैन्ट--और तू कैसा बुद्धिहीन निर्लज्ज है जो कहता है कि, तू मुझे नहीं जानता; अरे दो दिन भी नहीं हुए हैं जब मैंने तुझे औंधा पटक २ महाराजके सामने ठोंका था। अरे नीच!कृपाणको निकाल

यह रात्रिका समय है तथापि चन्द्रमा चमक रहा है। मैं इस चन्द्रिकामें तेरी खिचड़ी बनाऊंगा; तू निंदनीय दुरात्मा, जो दाढ़ी, मूँछ कतरानेको नाइयोंके पीछे २ फिरा करता है, निकाल, शीघ्र कृपाणको निकाल ॥ [कृपाण निकालता है]

आस्वाल्ड—चल परे हो, मेरा तुझसे कोई काम नहीं ॥

कैन्ट—तू नीच, कृपाणको निकाल, तू श्रीमानोंके विरुद्ध पत्रियां लेकर आया है? तू एक तुच्छ निर्बुद्धि स्त्रीके पक्षमें उसके प्रभाव समन्वित पिताके विरुद्ध काम करता है. अरे नीच, कृपाण निकाल, नहीं तो मैं तेरा ऐसा शोला बनाऊंगा कि- नीच कृपाण निकाल, आसन्मुखहो ॥ (हाथ पकड़ खेंचता है) ॥

आस्वाल्ड—बचावो, बचावो; हाय, मैं मरा, रक्षाकरो रक्षाकरो ॥

कैन्ट—अरे गोले! हाथकर; ठहर, नीच, ठहर, तू कज्जल लगानेवाला नीच, तू प्रहार नहीं करेगा-॥ [पीटता हुवा]

आस्वाल्ड—बचावो, बचावो; हाय मैं मरा; रक्षाकरो, रक्षाकरो॥

(कृपाण निकाले हुए एडमन्ड, कार्नवाल, रीगन, ग्लास्टर और सेवकगण आते हैं.)

एडमन्ड—एं, एं! यह क्या बात है? ॥

कैन्ट—आइये, महाशय, यदि आप इच्छा रखते हैं तो आप आइये; मैं आपको लड़ना सिखलाऊंगा आइये, आगे आइये ॥

ग्लास्टर—शस्त्र! शस्त्र, यह क्या बात है?

कार्नवाल—प्राणोंका भय करो और धैर्य धारण करो; जो अब प्रहार करेगा, मारा जावेगा ॥ यह क्या बात है? ॥

रीगन—हमारी बहिन और राजाजीके प्रेषित दूत ॥

कार्नवाल—तुम्हारे कलहका क्या कारण है? ॥ कहो ॥

आस्वाल्ड-महाराज! मेरा तो श्वांस भरा हुवा है॥

कैन्ट-इसमें कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि तुमने तो लड़ाईमें बड़ा परिश्रम किया है! तू कायर नीच, तू नीजाट, तुझे दरजीने बनाया है॥

कार्नवाल-तू बड़ा विचित्र पुरुष है. क्या दरजी मनुष्यको बनाता है॥

कैन्ट-हाँ, महाराज, दरजी, चित्रकार, वा खिलावट, चाहे उस्ने दो घड़ि मात्रही कम खिखाहो, तो भी इसे ऐसा विद्रूप नहीं बनाया होता॥

कार्नवाल-कहो, कहो, तुम्हारे मध्य विग्रह कैसे हुवा?॥

आस्वाल्ड-महाराज, यह प्राचीन घातक, जिसके प्राण मैंने इसकी श्वेतदाढीपर दयाकर छोड़े हैं-

कैन्ट-(क्रोध करके) तू भेंड़! तू निरावश्यक अक्षर! महाराज, यदि आप आज्ञा दें तो इस पक्के नीचको चरणदलितगारा बनादूं॥ मेरी श्वेतदाढीपर दयाकरे! तू निंदित पशु॥

कार्नवाल-(कैन्टसे) चुपरह, नीच जन्तु! तुझसे सादर नहीं रहा जाता?॥

कैन्ट-महाराज, यह बात सत्य है, तो भी क्रोधी मनुष्य क्षमा योग्य है॥

कार्नवाल-तेरे क्रोधका कारण क्या है?॥

कैन्ट-यह है कि, ऐसा वेइमान गोला कृपाण धारण करे॥ ऐसे २ मुसक्याते हुए दुष्ट (जैसा यह है) इंदुरके समान प्रायः पवित्र और अखंड प्रेम बन्धनके दो टुकडे करडालते हैं अपने स्वामियोंके उत्तेजित स्वभावोंको दुगुने भड़काते हैं; अग्निपर तेल छिड़कते हैं और उनके शीतल विचारोंपर हिमतुषार वर्षाते हैं.

हाँ में हाँ और नमें नां मिलाकर ऐसे २ नीच पवनदिक् प्रदर्शक यंत्रकी नाईं अपने स्वामियोंकी रुखमें अपनी रुख लगाते रहते हैं और श्वानोंके सदृश उनके पीछे २ फिरनेके अतिरिक्त कुछ नहीं जानते हैं. (आस्वाल्डको) तेरे चेचकग्रस्त कुत्सित मुखपर मरी पड़े ! क्या तू मेरे शब्दोंपर मुसकयाता है मानों मैं मूर्ख हूं ? अरे सारस, यदि मैं तुझसे "समर" क्षेत्रपर भेट करता तो तुझे कैकिल २ कराता हुवा "कैमीलाट" पर्य्यन्त भगाजाता ॥

कार्नवाल—अरे वृद्ध कैंठ ! क्या तू विक्षिप्त होगया है ? ॥

ग्लास्टर—तुम दोनोंकैसे लड़ पड़े सो कहो न ॥

कैन्ट—मेरे और ऐसे नीचके बीच जितना वैरभाव है, दो प्रतिकूल पदार्थोंमें इतनी प्रतिकूलता नहीं होसकती ॥

कार्नवाल—तू इसे नीच क्यों कहता है ? इसका क्या अपराध है ? ॥

कैन्ट—इसका स्वरूप मुझे नहीं भावता ॥

कार्नवाल—स्यात् मेरा, इनका और इनका भी नहीं भावता ॥

कैन्ट—महाराज, सत्य २ कह देना मेरा काम है. मैंने मेरे अच्छे दिनोंमें, यहां इस समय जितने मनुष्य विद्यमान हैं, इन सबके मुखोंसे उत्तम मुख देखे हैं ॥

कार्नवाल—तू बड़ा ढीठ और बेपरवाह मनुष्य है । सच मुच, तू खुशामदी नहीं करसकता है ! बड़ा ईमानदार और साधु आदमी है ? और अवश्यही सत्यवक्ता है । परंतु मैं तेरे ऐसे कई मनुष्योंको देख चुका हूं जो ऐसी साधुता और सच्चाईके पड़देमें अत्यन्त धूर्तता और धोखाबाजी सम्पादन करते हैं ॥

कैन्ट—महाराज, सत्यही, परमेश्वरकी शपथके साथ और आपकी कृपाकटाक्षसे, जिसका प्रताप सूर्यकी तेज चमकीली किरणोंकी नाईं—

कार्नवाल–(रोककर) यह क्या बक रहा है ॥

कैन्ट–मैं अपनी सच्चीबातको उडाना चाहता हूं जिसे आप अच्छा नहीं समझते । मुझे निश्चय है महाराज, कि मैं चाटूक्ति कहनेवाला नहीं हूं जिसने आपको मीठी बातें कहकर धोखादिया है वह मनुष्य स्यात् वंचक होगा ॥ परन्तु मैं वंचक नहीं हुवा चाहता, चाहे आप मुझसे प्रसन्न रहें वा अप्रसन्न ॥

कार्नवाल–तुमने इसका क्या अपराध किया है ?

आस्वाल्ड–मैंने उसको कोई हानि नहीं पहुँचायी । थोड़े दिन व्यतीत हुए हैं, श्रीमान् इसके स्वामीने किसी भूलके कारण मुझे ताड़ना की थी; उस समय, इसने उनका पक्षकर और उनके क्रोधकी स्तुतिकरके मुझे पीछेसे ढकेलकर गिरादिया । जब मैं नीचे गिरपड़ा और निंदित और धिक्कृत किया गया तब यह बड़ी लंबीचौड़ी साहसकी बातें बनाने लगा और एक आधीनकृत मनुष्यपर हमलाकरनेके हेतु महाराजने इसको योग्य कहा और इसकी प्रशंसाकी ऐसे भयंकर पुरुषार्थके जोशमें, यहां आकर अब मेरेपर कृपाण निकाली है ॥

कैन्ट–आत्मश्लाघा करनेमें इस नीच और कायरकी अपेक्षा 'अजैक्स[1]' तो कुछभी नहीं है ॥

कार्नवाल–काठ लेआवो ! तू पक्का प्राचीन नीच, तू वृद्ध आत्मश्लाघी ! मैं तुझे सिखलाऊंगा ॥

कैन्ट–महाराज, आयुके बहुत बड़ी होजानेके कारण मैं सिखलाए जानेके अयोग्य हूं मेरे अर्थ आप काठ न मँगवावें. मैं महाराजाधिराजका सेवक हूं और उन्होंने मुझे यहां उनके निजकार्य्य साधनके लिये प्रेषित किया है. उनके दूतको काठमें रखनेसे आप मेरे स्वामीका निरादर और निजशत्रुता प्रगट करेंगे ॥

---

१ यूनानियोंमें एक बड़ी ताकतवाला अभिमानी पुरुष, ईसाके बहुत पहिले हुआया ।

कार्नवाल-काठ लेआवो ! मैं मेरे प्राणों और रड्प्पनकी शपथ खाता हूं कि, यह काठमें दो प्रहरदिन चढे पर्यन्त रहेगा ॥

रीगन-दो प्रहरदिन चढे पर्यन्तही महाराज ! वरन्, संध्या होनेतक और सारी रात्री भी.

कैन्ट--क्यों देवी ! यदि मैं तुम्हारे पिताका श्वान होता तो भी तुम्हें मेरा ऐसा बर्तावा न करना चाहिये था ॥

रीगन-परन्तु इनके सेवक होनेके कारण तुम्हारा ऐसा बर्ताव किया जावेगा ॥

कार्नवाल-यह उसही ढांचेका मनुष्य है जिसके विषय अपनी बहिन सूचना देचुकी है. लावो, काठ लेआवो (काठलाया-गया) ॥

ग्लास्टर-श्रीमानोंको प्रार्थना करता हूं कि, आप ऐसा न करें. इसका अपराध भारी है और महा राजाधिराज इसके स्वामी स्वयं इसे बुरा कहेंगे. यह थोड़ासा दंड जो आपने विचारा है ऐसा है जो अत्यन्त क्षुद्र और निंदनीय नीच पुरुषोंको लूटने और अन्य साधारण न्याय प्रतिकूल कर्मोंके कारण दिया जाता है. राजा-जी इसबातसे बुरा मानेंगे कि, उनके दूतको यों रुकवाकर उनका इतना तिरस्कार किया है ॥

कार्नवाल-इस बातका उत्तरदाता मैं हूं ॥

रीगन-मेरी बहिन इस बातसे और भी अधिक बुरा मान सकती है कि, उसका सेवककी यों मानहानि किया जावे और यों पीटा जावे । काठमें रखदो [कैन्ट काठमें रखागया] आइये, महाराज, चलें ॥ [ग्लास्टर और कैन्टके सिवाय सब गये]

ग्लास्टर-हे मित्र ! मुझको तेरे कारण भारी खेद है। यह ड्यूककी खुशी है । इनके स्वभावको यह संपूर्ण संसारको विदित है । इनकी इच्छाको रोकना और दबाना अत्यन्त दुष्कर है, तथापि मैं तेरे अर्थ निवेदन करूंगा ॥

कैन्ट--महाराज, कृपाकर निवेदन न करें। मैं चिरकालसे नहीं सोया हूं, और भ्रमणभी थोड़ा नहीं हुवा है। इसलिये कुछ कालके लिये सोया चाहता हूं; पश्चात् गीत गाऊंगा। सज्जन मनुष्यका सौभाग्य भी नष्ट भ्रष्ट होजाता है। आपको स्वस्ति रहे॥

ग्लास्टर्--इसमें तो ड्यूकहीका अपराध है। महाराज, इससे बुरामानगे (गया) ॥

कैन्ट--हाय, ऐसे धार्मिक महिपालको इस साधारण कहावतकी सत्यता प्रगट करनी पड़ती है कि, दुःख, सुखके साथ निरन्तर लगा रहता है। अहो; इस अधःलोकके प्रकाशक भगवान् मरीचिमाली! प्रगट हूजिये कि, आपकी सुखदाई किरणोंकी सहायतासे इसपत्रको पढलूं! दुःखासीन मनुष्योंके अतिरिक्त दैविक प्रेरणाका अनुभव कौन करसकता है? मुझे मालूम है कि, यह पत्र "कारडेलिया" का है जिसे, दैवकीकृपासे, मेरे ऐसे वेषके समाचार मिलगये हैं। वह अवश्य इस विपत्तिसे उबारेगी और हानियोंको मिटावेगी। अरे भारीनेत्रो! तुम जागनेसे खूब थकगये हो, अब क्यों इस लज्जा योग्य दृश्यको अवलोकन करते हो? लक्ष्मी-तुम्हारी स्वस्ति हो! एकबारतो फिरभी कृपाकरो और अपने चक्रको घुमावो [सोता है]

तृतीय दृश्य-[एक बन]

(विक्षिप्तके वेषमें एडगरका प्रवेश.)

एडगर्-सुना गया है कि, मैं अपराधी विदित करादिया गया हूं और आज अन्वेषकोंकी दृष्टिसे एकवृक्षके कोटरमें प्रवेश करके कठिनतासे बचसका हूं। कोई भी बन्दर खाली नहीं है; कोई भी स्थान नहीं है जहां पहिरे वाले असाधारण दृष्टिके साथ मुझे स्तब्ध करनेको सन्नद्ध न हो। जबतक मैं छिपारह सकताहूं तबतकही मेरी प्राणरक्षा है। इसही हेतु मैंने ऐसा क्षुद्र और मलीन स्वरूप धारण करना विचारा

है जिसके साथ दरिद्रता मनुष्योंसे घृणाकरके उनको पशुवत् बनादेती है। मुखपर कीचड़कटिमें कम्बल, केशोंमें गांठें लगाकर और नग्न होकर मेह और आँधीका सामना करूंगा। ऐसा करनेके हेतु मेरे लिये ग्रामीण विक्षिप्तों और भिखमंगोंके दृष्टान्त प्रस्तुत हैं जो ठिठरी हुई मृतकवत् नग्नभुजाओंमें सूईयों काष्ठ, कंटक और 'रोजमरीवृक्ष' की टहनियोंको आरोपित करते हैं विकराल स्वरूप-को धारण करके गरजते हुये स्वरसे ग्रामीणोंको कभी बुरा कभी भला कहकर अपनी रोटी कमाते हैं । और "दरिद्र टर्लीगाड" । 'दरिद्र टाम !' के नामोंसे अपनेको प्रसिद्ध करते हैं। ये नाम फिर भी कुछ हैं 'एडगर' नाम तो अब किसी अर्थका नहीं रहा [गया]

चतुर्थदृश्य-[ग्लास्टरकी दुर्गके सन्मुख-केन्ट काठमें.]

(लियर, विदूषक और सभ्यका प्रवेश.)

लियर-आश्चर्यकी बात है कि, वे यों चले जावें और मेरे दूतको पीछा न भेजें।

सभ्य-मुझे ज्ञात हुवा है कि गतरात्रिको उन्होंने इसप्रकार चले जानेका कोई विचार प्रगट नहीं किया था ॥

केन्ट-अहो उदारस्वामी ! आपकी स्वस्ति रहे ॥

लियर-एं! क्या ऐसी लज्जाको तूने आनन्द समझ रक्खा है?

केन्ट-महाराज ! नहीं ॥

विदूषक-है है है ! इसने तो निर्दयी बन्धन पहिन रक्खे हैं अश्वोंको शिरसे बांधते हैं, श्वानों और भालूको ग्रीवासे, बन्दरोंको कटिसे और मनुष्यको चरणसे ॥ जब मनुष्य बहुतही दुलत्तियें फेंकता है तब वह काठमें दिया जाता है ॥

लियर-वह कौन है जिसने मुझको पहिचाननेमें इतनी भूल की है कि, तुझे यहां स्तब्ध करादिया?

कैन्ट-वेही दोनों आपके पुत्र और पुत्री ॥

लियर-नहीं ॥

कैन्ट-हां ॥

लियर-मैं कहता हूं, नहीं ॥

कैन्ट-मैं कहता हूं, हां ॥

लियर-नहीं, नहीं, उन्होंने नहीं किया होगा ॥

कैन्ट-हाँ, उन्होंनेही किया है ॥

लियर-'जूपिटर' की शपथसे कहता हूं, नहीं ॥

कैन्ट-"जूनो"[१] की शपथसे कहता हूं, हाँ ॥

लियर--उन्होंने ऐसा साहस नहीं किया वे नहीं करसकते. नहीं किया होगा ॥ जान बूझकर ऐसा घोर अत्याचार करना वध से भी अधिक बुरा है, जितना शीघ्र होसके मुझको समझाकर कहो उन्होंने किस हेतुसे तुमको (जो हमारा भेजा हुवा दूत था) इस वर्त्ताव के योग्य ठहराया ॥

कैन्ट-प्रभु ! इनके भवनपर उपस्थित होकर जब मैंने अपने धर्म्मानुकूल जानुबल हो, श्रीमानोंके पत्र इनके हाथमें दिये, उसही काल, उस स्थानसे मेरे उठनेके पूर्वही, एक प्रश्वेत परिप्लुत दूत जिसका शरीर शीघ्रताके कारण भभक रहा था, हवकता हुवा वहां आकर, अपनी स्वामिनीके प्रणाम मालूम किये और उसके पत्र सौंपे उन्होंने भी इन पत्रोंको तुरंतही पढे, यद्यपि ऐसा करनेसे मेरे कार्य्यमें विलम्ब पड़ा । समाचारोंको पढतेही उन्होंने सेवकोंको पुचारा और अश्वारूढ हो प्रस्थान करदिया; मुझे क्रूर दृष्टिसे अवलोकनकर,सावकाश उत्तर प्राप्त करनेके अर्थ पीछेसे आनेकी आज्ञा देगये । पश्चात् उस दूतसे, जिसके स्वागत होनेसे मुझको निश्चय है,

---

१ यूनानियोंकी देवी; ज्यूपीटरकी पत्नी; ज्यूपीटर जूनोको हिन्दुओंके इन्द्र, इन्द्राणी कह सकते हैं ।

मेरा अपमान हुआ है। इस स्थानपर समागम हुवा। यह दूत वही नीच गोला था जिसने कतिपय दिवस पहिले श्रीमानोंके विरुद्ध वैसी दुष्टता प्रगट की थी। इसको देखकर मैंने, क्रोधके वशीभूत होकर, कृपाण निकाली; इसने कातरताके साथ चिल्ला २ कर सम्पूर्ण गृहको माथे करलिया, तब आपके पुत्र और पुत्रीने इस अपराधको ऐसी लज्जाके योग्य ठहराया जो मैं यहां भोग रहाहूं॥

विदूषक—शीतकाल अभी व्यतीत भी नहीं होचुका है यदि वन हंसियां इस ओर उड़जावें।

क्योंकि—कन्याधारी पिताके, होवें पूत कुपूत।
धनधारी मानो पिता, राखें पूत सपूत॥

तो भी तुमको निजपुत्रियोंसे इतनी मुद्रा प्राप्त होंगी कि, तुम उनको एक वर्ष पर्य्यन्त भी न गिन सकोगे॥

लियर—अरे, हाँ! यह "मादर रोग" मेरे हृदयकी ओर उठा चला आता है! 'हिस्टारिका पासियो' नीचे उतर, हां, प्रचण्ड व्याधि तेरा स्थान तो नीचेही है? कहो तो, वह पुत्री कहां है?॥

कैन्ट—महाराज यहां 'अर्ल' के साथ अन्तरमें॥

लियर—यहांही ठहरो, मेरे पीछे न आना [गया]

सभ्य—क्या इस अपराधके अतिरिक्त तुमने अधिक अपराध किया है?॥

कैन्ट—कोई नहीं। राजाधिराजके साथ इतने थोड़े सेवक क्यों?

विदूषक—निश्चय, यदि तू इस प्रश्नके हेतु काठमें रक्खा जाता तो समीचीन होता॥

कैन्ट—क्योंरे, विदूषक?

विदूषक—तुझको उचित था कि, पिपीलिकासे पाठ सीखता वह तुझको सिखा देती कि शीतकालमें परिश्रम नहीं किया जाता है। जो मनुष्य अंधे नहीं होते, वे नेत्रों और नासिकाद्वारा अपनी

राह ढूँढ लेते हैं परन्तु जिनके नेत्र नहीं होते, वे नासिका द्वाराही हतभाग्य मनुष्योंको सूँघकर उनसे दूर होजाते हैं। जब कोई भारी चक्र ऊंचे पहाड़से नीचे गिरे तो उसको पकड़कर अपनी ग्रीवाका छेदन नहीं कराना चाहिये. परंतु यदि कोई बड़ा चक्र पहाड़पर चढता हो तो उचित है कि, उसको अपना सहारा दो इसलिये, देख, जब कोई दूसरा बुद्धिमान मनुष्य तुझे अधिक समीचीन शिक्षा दे तो मेरी शिक्षाको फेर देना । मैं चाहता हूं कि (स्वार्थ-तत्पर) सेवकोंके सिवाय कोई दूसरा इस विदूषकका (पागलाना) शिक्षाको ग्रहण न करे ॥ सुन-

जो नर सेवे तोहि लाभहित शोभाहेतु करे सन्मान ।
जाय भाग सो वृष्टि समयमें तू रह जावे विष तूफान ॥
खड़ा रहेगा सत्य विदूषक यद्यपि भाग चले मतिमान ।
सेवक बुद्धिनाश भये भागें विदूषक बड़ा क्षार इमान ॥

कैन्ट-अरे विदूषक ! ऐसी २ बातें तूने कहां सीखी हैं ? ॥

विदूषक-मूर्ख, काठमें नहीं ॥

(लियर ग्लास्टरके साथ आता है.)

लियर--(क्रोधसे) मुझसे बातें नहीं किया चाहते ? बीमार हैं ? थक गये हैं ? सारीरात भ्रमण किया हैं ? केवल कपट, उत्पात और दुष्टताकी बातें हैं । जावो और उनका ठीक २ उत्तर लावो ॥

ग्लास्टर-महाराज, आप ड्यूकके क्रोधी स्वभावसे भली-भाँति परिचित हैं । वह अपने विचारोंमें कैसे ध्रुव और पक्के रहते हैं॥

लियर-(जोरके साथ) तुम सबपर मरीपड़े ! क्रोधी ? कैसा स्वभाव ? अरे ग्लास्टर, ग्लास्टर ! मैं ड्यूक कार्नवाल और उसकी भार्य्याके साथ बातें किया चाहता हूं ॥

ग्लास्टर-हां, प्रभु ! मैंने उनको ऐसाही सूचना दी है ॥

लियर-(क्रोधसे) सूचना दी है ! मर्द, तू मेरी बात समझता भी है?

ग्लास्टर-महाराज !

लियर-राजाधिराज स्वयं "कार्नवाल" से कुछ कहा चाहते हैं। प्रिय पिताकी मरजी अपनी पुत्रीके साथ बातें करनेकी है। उनको उचित है कि, मेरी सेवामें उपस्थित होवे। क्रोधी? क्रोधी ड्यूक? उस क्रोधी ड्यूकसे कह दो कि-परन्तु नहीं अभी नहीं। स्यात् वह रुग्नही हो। आरोग्यावस्थामें जो कर्म्म हमारा कर्तव्यधर्म है, वहहीन दशामें उसको छोड़नाही पड़ता है। जब हमारी प्रकृति दब जाती है, तो मन भी शरीरके साथमें पीडित होता है, उस समय हम अपने आपमें नहीं रहते। मैं धैर्य्य धारण करूंगा; यह कैसी मेरी हठीली टेव है कि जिसके वशीभूत हो मैंने रोगी मनुष्योंको निरोग समझ लिये। (केन्टकी ओर देखकर) परन्तु हन्त ! अहो महत् दुःख ! क्यों, यह यहां क्यों? इस बातसे मुझे निश्चित होता है कि, ड्यूक और उसकी भार्य्याका यहां न आना केवल छल है। छोड़ो, मेरे सेवकको छोड़ो। जावो और कह दो कि, मैं इनसे अभी बातें किया चाहता हूं। देखो, उनको कह दो कि, बाहर आकर मेरी बात सुनें नहीं तो उनके गेह कपाटपर ऐसे ढोल बजाऊंगा कि उनकी निद्रा भागती फिरेगी॥

ग्लास्टर-मुझे तो आप दोनोंके बीच रख बनेरहनेमेंही प्रसन्नता है॥ [गया]

लियर-अरे, हृदय ! अरे उठते हुए हृदय ! रह नीचेही रह॥

विदूषक-हे मामा ! इस हृदयके सांही पुकारे जावो, देखो पुकारे जावो। स्यात् इस प्रकार पुकारते रहनेसे यह ऊपर न आवे॥

(कार्नवाल, रीगन, ग्लास्टर और भृत्योंका प्रवेश.)

लियर-आप दोनोंकी स्वस्ति हो॥

कार्नवाल-श्रीमानोंकी स्वस्ति रहे॥[केन्ट स्वाधीन कियागया।]

रीगन-मुझे श्रीमानोंके दर्शनोंसे बड़ा आनंद हुवा है॥

लियर--हाँ,रीगन मैं जानता हूं कि, तू आनंदित है. औरयह भी जानता हूं कि, तू क्यों आनंदित है। यदि तू प्रसन्न न होती तो मैं अब भी तेरी माताको जो श्मशानमें है,व्यभिचारिणी कहकर प्रकाशित करदेता। (केन्टके प्रति देखकर) अहो, क्या तुम छुट गये ? अच्छा, अच्छा॥ प्यारी रीगन, तेरी बहिन तो कुछ नहीं है, हे रीगन, देख उसने निर्दयी हो, गीधनीके समान तीक्ष्णदाँत यहां मारे हैं (हृदयपर हाथ रखकर) हे रीगन! न मुझमें कहनेकी सामर्थ्य है और न तू विश्वास करेगी कि, उसने कैसी दुष्टतासे हा रीगन! (रोता है)

रीगन-महाराज! धैर्य्य धारण करो। मुझे आशा है कि, मेरी बहिनने अपने धर्मको पालनेमें न्यूनता नहीं की है; केवल आपही उसकी योग्यताको नहीं समझे हो॥

लियर--(आँसू पोंछकर) कहो तो यह कैसे ?

रीगन-मेरी बहिन अपने धर्म में थोड़ीसी भी चूके, ऐसी बात विचारमें नहीं आसकती. महाराज, दैवात् यदि उनने आपके अनुचरोंको उत्पात करनेसे रोके हैं तो ऐसा करना उन २ कारणों और उत्तम विचारोंसे हुवा है कि, वह सर्वथा दोषरहित है॥

लियर--उसे मेरा शाप लगेगा॥

रीगन--महाराज! आप वृद्ध हैं। उचित है कि! आप किसी बुद्धिमान व्यक्तिकी बुद्धिके अनुसार कार्य्य करें जो आपकी अवस्थाको स्वयं आपसे भली प्रकार जानता हो। इसलिये कृपाकर आप मेरी बहिनके पास चले जाइये और उसको कह दीजिये कि आपने उसको क्षति पहुँचाई है॥

लियर--उसकी क्षमा मांगूं ? तुम देखो तो सही, तुम्हारे कुल-

तिलकके लिये ऐसा करना कैसा उपयुक्त होगा. (जानु टेककर) "प्रिय पुत्री ! मैं स्वीकारता हूं कि, मैं वृद्ध हूं वृद्ध मनुष्य निरावश्यक हैं घुटने टेककर, मैं निवेदन करता हूं कि, आप कृपाकर मुझे खाने-को भोजन, पीनेको पानी और सोनेको भूमि दें" ॥

रीगन—महाराज ! रहिये, रहिये । आप अनुचित करते हैं। आप मेरी बहिनके समीप चले जावें ॥

लियर—(उठकर) रीगन, नहीं, कभी नहीं । उसने मेरे अनुचरोंकी संख्या आधी करदी है, मेरेपर काली, पीली हुई है, उपंके समान, अपनी जिव्हासे मेरे इस हृदयको काटा है । उसका सर्व नाश हो ! हे डाकिनी, भूतिनी, पिशाचिनियो ! तुम सब उसकी युवा हड्डियोंको टुकडे २ करके उसको पंगु बनादो ! ॥

कार्नवाल--धिक्, महाराज, धिक् !

लियर--हे तीक्ष्ण बिजुलियो, तुम्हारी अंधी करनेवाली झलोंको उसके घृणित नेत्रोंमें डालो हे दलदलके फ़हिसे, तुम सब उसके ऊपर गिरो और उसकी सुंदरता और अहंकारको नष्ट करदो ! ॥

रीगन--ईश्वर रक्षा करे; जब आप मेरेपर क्रोध करेंगे तब मुझे भी ऐसेही शाप देंगे ॥

लियर--नहीं, रीगन, तू मेरे शापके योग्य न बनेगी । तेरी सुशील प्रकृति तुझे ऐसी कठोर न बनावेगी । उसके नेत्र भयावने हैं परन्तु तेरे शीतल और सुखदाई हैं। तू ऐसी नहीं है कि मेरे सुखों की ईर्षा करे, मेरे परिजनोंको घटावे, मेरा सामना करे, मेरे धनमें कमी करे वा मेरे घरपर मेरे सामने अर्गला लगावे ॥ तू प्रकृति सम्बन्ध, सन्तति धर्म; दयालुता और कृतज्ञतासे अधिक परिचित है, तू उस आधे राज्यको नहीं भूली है जो मैंने तुझे दिया है ॥

रीगन—तात्पर्यकी बातें करें ॥

लियर—मेरे सेवकको काठमें किसने रक्खा था? [नेपथ्यमें वाद्य]

कार्नवाल—यह क्या वाद्य है ? ॥

रीगन—मुझे मालूम है, मेरी भगिनीके आनेका वाद्य है उसने निज पत्रमें यहां शीघ्रही आनेकी बात लिखी सो सत्य हुई ॥

(आस्वाल्डका प्रवेश)

क्या तुम्हारी स्वामिनी आई है ? ॥

लियर—यह ऐसा गोला है कि, अपनी स्वामिनीकी कृपासे फूल २ कर ढोल होरहा है । अरे नीच ! तू मेरी दृष्टिसे दूर रह ॥

कार्नवाल—(क्रोधसे) महाराज आपका अभिप्राय क्या है ?

लियर—मेरे सेवकको काठमें किसने दिया? रीगन, मुझे पूर्ण आशा है तू इस विषयमें कुछ भी नहीं जानती है। परन्तु यह कौन आरही है ? अहो ईश्वर ! ॥

(गानारिलका प्रवेश)

यदि वृद्ध मनुष्योंपर आपकी कृपा है यदि आपके दयालु राज्यमें आज्ञापालन धर्म मना नहीं है यदि आप स्वयं पुरातन हैं तो मेरी सहायता करें निज पार्षदोंको यहां भेजकर मेरा पक्षधरें (गानारिलके प्रति) इस दाढीको देखकरभी लज्जित नहा होता ? अहो रीगन! क्या तू इसके साथ अंकभर मिलती है ? ॥

गानारिल—मिलै क्यों नहीं महाराज ! मैंने आपका क्या अपराध किया है ? निर्बुद्धि और वृद्ध मनुष्य जिनको अपराध समझते हैं वे सर्वथा अपराध नहीं होते हैं ॥

लियर—अरी, भुजाओ, तुम बड़ी कठोर हो ! क्या अब भी न गिरोगी ? मेरा भृत्य काठमें क्यों रक्खा गया ?

कार्नवाल—महाराज! इसे तो वहां मैंने रक्खाथा, परन्तु इसका दुराचरण बहुत अधिक दण्डके योग्य था ॥

लियर-(क्रोधसे) तुमने, तुमने ! क्या तुमने रक्खा था।

रीगन--हे पिता ! शिथिल हैं; कृपाकर आप ऐसा करें आप मेरी बहिनके घर चले जावें और एक मासके पश्चात् आधे परिजनके साथ मेरे पास चलेआवें। यह मेरा घर नहीं है और यहां मेरे पास वह सामान भी नहीं है जो आपके सत्कारके अर्थ आवश्यक है ॥

लियर--क्या इसके साथ चलाजाऊं और पचास मनुष्य कम करके ? नहीं, नहीं, ऐसा करनेकी अपेक्षा तो मैं उर्वत्याग करके निर्जन जंगलकी प्रचंड वायुको सहूंगा और शृगाल और उल्लूओंके साथ निवास करूंगा। दरिद्रनरोंको ऐसाही करना पड़ता है। परंतु क्यों इसके साथ फिर जाऊं ? इससे तो उत्तम यहही है कि, मैं उस कुपित फ्रांस नरेशके सिंहासनके सन्मुख चला जाऊं और घुटने होकर सेवककी नाईं इस क्षुद्र शरीरकी वृत्तिके लिये याचना करूं। इसके, साथ फिर जाऊं ? ऐसा करनेकी अपेक्षा तो तुम मुझको इस निंदित गोलेका गोला और सेवक बननेके लिये कहो ॥ [आस्वाल्डकी ओर अंगुली करके]

गानरिल--जैसी महाराजकी इच्छा हो ॥

लियर--हे पुत्री ! कृपाकर तू मुझे विक्षिप्त मत बनादे; मेरी बच्ची मैं तुझको न सताऊंगा। तेरा कल्याण हो। न मैं तुझसे कभी मिलूंगा, न तुझे कभी देखूंगा; परंतु तो भी तू मेरे शरीरकी अंश है मेरा रक्त है, मेरी पुत्री है अथवा तू वह रोग है जो मेरे मांससे उत्पन्न हुवा है जिसको "मेरा है" ऐसा कहनाही पड़ता है तू एक गूमड़ा है एक मरी उचक आघात है एक सूजाहुवा फोड़ा है जो मेरे रक्त उपद्रवके कारणसे पैदा हुवा है; परंतु मैं तुझे क्यों बुरा कहूं। अच्छा, जब चाहे तुझे आपेमें मैं उसको नहीं बुलाया चाहता; मैं मेघराजको तेरेपर बिजुलियां गिरानेकी प्रार्थना नहीं करता और न उस प्रशान्त न्यायकर्ता "जोवे" के प्रति तेरी क थ

१ जोव-यूनानियोंका इन्द्र इस देवताको जूपीटर भी कहते हैं

कहूंगा. जब तुझसे होसके सुधर जाना; अवकाश मिलनेपर अच्छी बनजाना ॥ मैं धैर्य धारण करसकता हूं मैं रीगनके पास रहसकता हूं मैं और मेरे सौ भट्ट ॥

रीगन—नहीं. महाराज. इतने नहीं रहसकते । मुझे आपके इतने शीघ्र चले आनेकी आशा न थी । और न मैं आपके योग्य स्वागतके लिये सुसज्जित हूं । महाराज, आप मेरी भगिनीकी बातें मान लीजिये क्योंकि जो आपके क्रोधी स्वभावको बुद्धिद्वारा चलाया चाहते हैं वे अवश्य आपकी वृद्धावस्थापर विचार किया चाहेंगे । और इसलिये-परंतु वहही अपने कर्तव्यसे भलीभाँति परिचित है ? ॥

लियर—क्या यह बात सम्यक् विचारके साथ कही गयी है ?॥

रीगन—महाराज ! मैं इस बातको पुष्ट करसकती हूं । देखिये क्या पचास अनुचर ? क्या ये थोड़े हैं ? आपको अधिक अनुचरोंकी क्या आवश्कता है ? इतने बडे समूहपर क्या इतना व्यय न होगा अथवा क्या इससे हानिकी सम्भूति नहीं हैं ? इतने मनुष्य एक गृहमें और दो मनुष्योंकी हुकूमतमें कैसे रहसकते हैं ? बहुत दुर्लभ है प्रायः असंभव है ॥

गानरिल—हे प्रभु ! क्या आप इसके वा मेरे सेवकोंद्वारा सेवन नहीं किये जासकते हैं ? ॥

रीगन—क्यों नहीं महाराज ! और यदि वे आपकी आज्ञा पालन करनेमें ढीले मालूम होंगे तो हम उन्हें हटक देंगी । अब मुझे एक भय भी होने लगा है; इस लिये यदि आप मेरे पास चले आवें तो कृपाकर पचीसही मनुष्य साथ लावें. अधिक मनुष्यों-का न मैं विचार करूंगी और न आवास दूंगी ॥

लियर—मैंने तुम दोनोंको सब कुछ देडाला ॥

रीगन—और आपने अच्छे अवसरपर दे डाला है ॥

लियर—मेरे राज्यकी रक्षक और भरोसे पात्र बनादी मैंने केवल इस समूहको अपना अनुयायी बने रहनेको रक्षित रक्खा था। रीगन, क्या मैं तेरे पास २५ मनुष्यही लेकर आऊं। क्या तूने ऐसा कहा है ? ॥

रीगन—और फिर भी यहही कहती हूं मेरे पास अधिक न लावें॥

लियर—दुष्ट जीव भी प्रिय दरसते हैं जब अन्य जीव उनकी अपेक्षा अधिक दुष्ट प्रतीत होते हैं। अत्यन्त निकृष्ट न होना फिर भी प्रशंसनीय है (गानरिलके प्रति) मैं तेरे साथ चलूंगा। तेरे पचास फिर भी पचीसके दूने हैं और इसलिये तेरा स्नेह भी उसके स्नेहसे दुगुना है ॥

ग्लास्टर—महाराज! सुनिये. आपको पांच, दस वा पचीसकी भी क्या आवश्यकता है जहां इनसे दूने चौगुने मनुष्योंको आज्ञा है कि, आपकी टहल करें ? ॥

रीगन—एक मनुष्यकी भी क्या आवश्यकता है ? ॥

लियर—(रोता है) अहो! आवश्यक होने, न होनेकी दलील न करो हमारे अति क्षुद्र भिक्षुकोंके पास अतिक्षुद्र वस्तु भी अनावश्यक है. यदि प्राकृतिको आवश्यकतासे अधिक न दिया जावे तो मनुष्यका जीवन पशु जीवनके तुल्य सस्ता होजावेगा। तू एक सभ्य देवी है। यदि शरीरको उष्ण रखनाही आवश्यक था तो फिर प्राकृतिको ऐसे रत्नजटित वस्त्रोंकी आवश्यकता नहीं है जो तू पहिने हुए है और जो तुझे बहुत गर्म भी नहीं रखसकते हैं ॥ परंतु उस आवश्यकता—हे परमेश्वर, धैर्यकी है, जिसकी मुझे इस समय बड़ी आवश्यकता है हे. ईश्वर! हे करुणाकर! मेरेपर कृपादृष्टि करो: मैं अनाथ, वृद्ध, अत्यन्त दुःखी और अत्यन्त बूढा हूं। नाथ! मैं बड़े क्लेशमें हूं। हे नाथ! यदि आपही इन पुत्रियोंके कठोर मनोंको इनके पिताके विरुद्ध करते हैं तो मुझे ऐसा निर्बुद्धि मत बनाये

कि कातरताके साथ इसका सहन करूं. मुझे उदार क्रोधसे परिपूर्ण करो और इन अश्रु विन्दुओंसे जो केवल स्त्रियोंके शस्त्र हैं, मेरे मानव कपोलोंको दूषित न करो? हे प्राकृति विरुद्ध सूकरियो, देखो तुम दोनोंसे मैं ऐसे बदले लूंगा कि, संपूर्ण संसार भी-मैं ऐसे २ काम करूंगा-परंतु वे क्या काम हैं इससे मैं अभीतक परिचित नहीं हूं परंतु वे काम संसारमें भय उपजानेवाले होंगे; तुम विचारती हो कि, मैं रुदन करूंगा नहीं मैं कभी रुदन नहीं करूंगा। तथापि मेरे रुदन करनेके हेतु पूर्ण कारण विद्यमान है परंतु मैं रोऊंगा इससे पहिले इस हृदयको एक लक्ष खंडोंमें खिन्न २ हो जाना पडेगा। अरे विदूषक, मैं विक्षिप्त होजाऊंगा॥

(लियर, ग्लास्टर, कैन्ट, विदूषकका गमन)

[प्रबल आँधी]

कार्नवाल-हमको अन्तरमें चलना चाहिये। आँधी आनेवाली है॥

रीगन--यह भवन छोटा है. वह बूढा और उसके मनुष्य यहां भलीप्रकार निवास नहीं करसकते॥

गानरिल-यह उसहीका दोष है-उसहीने अपना सारा आराम गुमाया है और उचित है कि, वह निज बुद्धिहीनताका स्वादु चखे॥

रीगन--केवल उसे तो मैं प्रसन्नतापूर्वक स्थान देसकती हूं. परंतु उसके अनुचरोंमेंसे एकको भी नहीं रखसकती॥

गानरिल-मेरा भी यहही विचार है-ग्लास्टर महाराज कहां गए हैं?॥

कार्नवाल-उसही बूढेके साथ गये हैं वे आये॥

[ग्लास्टरका प्रवेश.]

ग्लास्टर-राजाजी बड़े क्रोधमें हैं॥

कार्नवाल--और किधर जारहे हैं? ॥

ग्लास्टर--वह अपने अश्वारोहीयोंको पुकार रहे हैं। परंतु यह नहीं मालूम कि, किधर जावेंगे.

कार्नवाल--इनको स्वइच्छानुकूलही काम करनेदेना उत्तम है. यह इनहीके कृत्य हैं ॥

गानारिल--महाराज! इनको ठहरनेके लिये कदापि प्रार्थना न करें ॥

ग्लास्टर--अहो शोक! रात्रि आई जाती है और ठंडी पवन बड़े वेगसे बहरही है॥कईकोसोंतक झाडीका नामतक भी नहीं है ॥

रीगन--महाराज! हठीले मनुष्योंके शिक्षक उनहीकी हानियोंको होना उचित है जिनको वे स्वयं अपने लिये उत्पन्न करते हैं। कपाट बंदकर दीजिये। उसके साथमें निराश अनुचरोंका झुंड है; उसके कान भी पोले हैं। बुद्धिमानीके साथ हमको चाहिये कि, डरें स्यात् उनके उभारनेसे वह कुछका कुछ कर देंवे ॥

कार्नवाल--महाराज, कपाट लगवादीजिये। यह एक भयानक रात्रि है। मेरी 'रीगन' की सलाह बहुत ठीक २ है। आइये आंधीमेंसे आजाइये ॥ [सब गये]

(जवनिका गिरती है)

दूसरा अंक समाप्त.

तृतीय अङ्क-३.



प्रथमदृश्य-[एक मैदान.]

(आँधीकासमन-केन्ट और एक सभ्यका पृथक् २ राहसे आना)

कैन्ट-इस घोर आँधीके सिवाय यहां दूसरा कौन है?॥

सभ्य-एक मनुष्य जो आँधीकी नाईं विकल और अत्यन्त दुःखी है ॥

कैन्ट-मैं तुम्हें जानता हूं ॥ राजाधिराज कहां हैं ? ॥

सभ्य-इस प्रकोपित तत्वके साथ युद्ध कररहे हैं । पवनको अनुमति देरहे हैं कि, वह पृथ्वीको जलधिमें डालदे अथवा पयोधरके लहराते हुए पयको विस्तीर्ण करदे कि, पदार्थोंका परिवर्तन वा नाश होजावे ॥ अपने धवलकेशोंपर अश्रु बहा रहे हैं जिनको वह अधीर पवन प्रकोपसे अंधा होकर खेंचता है और तिरस्कार करता है। उनके सूक्ष्म ब्रह्मांडके प्रबलयुद्धके सामने इधर उधरके वह और पवनका संग्राम कुछ भी नहीं है। ऐसी रातमें जबरी भी दबकता फिरता है, जब सिंह और बुभुक्षित शृगाल भी अपने २ केश शुष्क रखते हैं, वह नरेश शिरोवेष्टन विनाही भागते फिरते हैं और हताश होगये हैं ॥

कैन्ट-परन्तु उनके पासमें कोई दूसरा भी है ?

सभ्य-विदूषकके सिवाय और कोई नहीं और वह उनकी हृदयविदारक हानियोंको हास्यकथनद्वारा भुलानेमें प्रयत्न कररहा है ॥

कैन्ट-हे महाशय ! तुम्हारे साथ मेरा परिचय है और इस परिचयके भरोसे एक गहन कार्यको तुम्हारे सुपुर्द किया चाहताहूं,

यद्यपि परस्पर बुद्धिमत्ताके साथ वे इसे प्रगट नहीं होनेदेते हैं तथापि मैं कहता हूं कि अल्बनी और कार्नवालके मध्य विग्रह है। इनकी सेवामें ऐसे २ मनुष्य उपस्थित हैं जो फ्रांसके राजदूत और समाचार प्रेषकों (खबरनवीस) के अतिरिक्त नहीं प्रतीत होते हैं और यह नियमकी बात है कि ऐसे २ प्रत्यक्ष भृत्य उन पुरुषोंके पास सदैव रहा करते हैं जिनके ग्रह उच्चस्थानमें पड़ते हैं। ये हमारे राज्यके भेदिये इन ड्यूकोंके उत्पातों और दुष्ट स्वभावोंकी वा उस कठोरवर्त्तावकी जो उस दयालु नरेशके साथ किया जाता है अथवा किसी दूसरी अधिक गहन निश्चरताकी जिसके स्यात् ये सब प्रगट चिन्ह हैं, जो २ बातें उनको मालूम हुई हैं उन सबकी सूचना भेजते रहते हैं- अब इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक सेना फ्रांस प्रदेशसे इस विभिन्न साम्राज्यमें आई है और हमारी असावधानीका उत्तम अवसर पाकर किसी उत्तमोत्तम बंदरमें सुगुप्ततया पदार्पण किया है और शीघ्रही अपनी ध्वजाको प्रगटमें फहरानेवाली है । अधुना आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि यदि आप मेरा विश्वास करके, *डोवर' को तुरतही प्रस्थान करनेका साहस करें और वहांपर श्रीमानोंके अस्वाभाविक और विक्षिप्त कारक क्लेशोंकी ठीक २ सूचना देवें तो आप कई व्यक्तियोंसे धन्य २ किये जावेंगे ॥ मैं एक उच्चकुल और सद्वंशका सभ्य हूं और सच्चे समाचारोंपर विश्वास करके यह कार्य्य आपको सुपुर्द करता हूं ॥

सभ्य—मैं आपसे फिर बात चीत करूंगा ॥

केन्ट—नहीं, कोई आवश्यकता नहीं । मैं मेरे प्रगट स्वरूपसे बहुत विशेष हूं. इस बातकी सच्चाईके अर्थ आप इस थैलीको खोलें और इसके अन्तरकी वस्तु ग्रहण करें । यदि आप कार्डेलियासे मिलें जिससे मिलनेमें आप कोई संशय न रखें तो आप यह अंगूठी

---

* डोवर-इंग्लेंडके दक्षिणमें जहाजोंके ठहरनेका एक नगर है ।

उसको दिखला देवें और वह बता देगी कि मैं कौन हूं। अहो, कैसा भयंकर तूफान है ! मैं श्रीमानोंको ढूंढने जाता हूं ॥

सभ्य–मुझे आपका हाथ दीजिये। क्या आप और कुछ भी कहा चाहते हैं? ॥

कैन्ट–एक शब्दभी नहीं। परंतु सबसे उत्तम कार्य्य अभीतक बाकी है। वह यह है कि श्रीमानोंके अन्वेषणहेतु आप इधर गमन करें और मैं इधर जाता हूं और जो उनके पास प्रथम पहुँच जावें वह दूसरेको टेरकर सूचित करदे ॥ (अलग २ गये)

द्वितीयदृश्य–[वनका दूसरा भाग.]

(आंधीकासमन)

(लियर और विदूषकका प्रवेश.)

लियर–हे पवनदेव, हे मारुत भगवान्, खूब फटकारे लगावो और अपने कपोलोंको फुलावो, कोप करके खूब सनसनावो ! हे नदी, नालो, तुम सब बहते रहो जबतक हमारे मन्दिरोंके शिखर न भाग जावें, और वायुदिग्प्रदर्शकयंत्र न डूब जावें; हे गंधकके घ्राणवाली और मनोवेगके समान शीघ्र नाशकरनेवाली बिजुलियो, हे 'ओक' विभेदक वज्रपातकी अग्रिम सूचको, मेरे श्वेत मस्तकको भस्मकरडालो ! और हे सबको डिगमिगानेवाले वज्र इस टोस गोलाकार पृथ्वीको खण्डशः करदे, विधाताके ढांचोको तोड़कर संपूर्ण बीजोंको नष्ट करदे जिनसे मनुष्यकी उत्पत्ति होती है ! ॥

विदूषक–हे मामा ! खुले मैदानमें इस मेघजलकी अपेक्षा तो सूके घरमें राजसभाका चरणामृत (चाटूक्ति) ही अधिक उत्तम है; प्रिय मामा ! अन्तरमें चलो और निज पुत्रियोंसे क्षमा मांगो यह रात्री तो न बुद्धिमान् मनुष्यकी परवाह करती है और न मूर्खकी ॥

लियर--हे पवन ! खूब पेटभरकर चलो, हे बिजलियो, गिरती रहो, हे मेह, बरसता रह। मेह, बिजली, वज्र वा पवन मेरी पुत्रियां नहीं हैं। इसलिये, हे तत्वो, मैं तुम्हें निर्दयी होनेका कलंक नहीं लगाता हूं। तुमको मैंने राज्य नहीं दिया है, तुमको मैंने अपनी सन्तान कहकर नहीं पुकारा है और न तुम मेरे आधीन हो-इसलिये तुम जितनी हानियां मुझको पहुंचाना चाहो पहुंचाते रहो: हे परमेश्वर देखो, मैं एक तुम्हारा दास, एक दीन, निस्सत्व, बलहीन जीर्ण मनुष्य यहां खड़ा हूं: परंतु मैं तुमको क्षुद्रसहायक अवश्य कहूंगा क्योंकि तुमने मेरी पुत्रियोंके साथ सलाह करके मेरे ऐसे जीर्ण और श्वेतमस्तकके साथ (सिरपर हाथ रखता है) ऐसी घोर लड़ाई ठानी है अहो ! अहो ! यह कैसी क्षुद्र बात है.

विदूषक—सच है जिसके सिरको नीचे देनेके लिये घर होता है उसको उत्तम शिरोवेष्टन भी होता है जो मनुष्य हृदयको गाढा करनेके एवजमें अपनी अंगुलीको घिस २ कर गाढी करना चाहता है उसको अंगुलीमें छाले होजाते हैं और वह दिनरात इसकी पीड़ासे जागता रहता है देखो जो इस संसारमें ऐसी कोई भी रूपवती सुंदरी नहीं है, जो दर्पणमें मुंहको न चिड़ाती हो॥

लियर—नहीं, नहीं, मैं धैर्यका नमूना बनूंगा. मैं कुछ भी न बोलूंगा॥

(केन्टका प्रवेश.)

केन्ट—यह वहांपर कौन है ?॥

विदूषक—परमेश्वरकी सपथ एक तो बुद्धिमान् है और एक मूर्ख है॥

केन्ट—अहो शोक ! महाराज, क्या आप यहां हैं उन जीवोंको भी ऐसी रात्री प्रिय नहीं होती जो रात्रीमें सदैव प्रसन्न रहते हैं. इस कुपित नभोमण्डलने अंधकार भ्रमणशील जन्तुओंको भी भयभीत

करदिया है और वे अपनी २ दुरोंमें भागगये हैं जबसे मैंने स्वरूप सँभारा है तबसे मुझको स्मरण नहीं होता है कि मैंने कभी विजुलियोंकी ऐसी चमचमाहट, ऐसे बीभत्स वज्रपात, ऐसा मूसलधारमेह, और पवनके ऐसे घर्राटे सुनेहों. मनुष्यकी सामर्थ्य नहीं है कि ऐसी विपत्ति और ऐसे भयको सहसके ॥

लियर--जिन प्रबल देवोंने इसभयंकर संतापको हमारे सिरोंपर रख छोड़ा है उन्हें उचित है कि वे अपने शत्रुओंको इस अवसरमें ढूंढलें: अरे नीच, तेरे अन्तरमें अप्रगट पाप भरेपड़े हैं जिनके लिये न्यायद्वारा तुझे दंड न मिला, देख अब तू कम्पायमान हो; अरे हत्यारे मनुष्य, तू प्रतिज्ञाभङ्गकरनेवाले और तू थोथे धार्मिक व्यभिचारी, जा, छुपजा अरे नीच, तूने छुप २ कर और वेश बदलकर मनुष्योंके प्राण हरे हैं, अब तुझको कपकपाना चाहिये. अरे डट २ कर भरे हुए पातको ! अपने छुपानेवाले घरोंको तोड़डालो और बाहर निकलकर इन आह्वाहन करनेवालोंसे क्षमा मांगो. मैंने तो इतने पाप नहीं किये हैं जितने दूसरोंने मेरे विरुद्ध किये हैं.

कैन्ट--अहा दुःख ! अहो नग्नशिर ! हे मेरे कृपालु स्वामी, समीपमें एक कुटि है जो आपको इस अंधकारसे बचासकेगी. आप वहां आराम करें ॥

लियर--मेरी मति विक्षिप्त हुई जाती है. अरे छोकरे ! अरे मेरे छोकरे ! तेरा स्वास्थ्य कैसा है ? क्या शीतसे बाधित है ? मैंही ठंडसे मराजाता हूं. अहो मेरे मित्र, यह कुटि कहां है ? हमारी आवश्यकताकी करतूति भी आश्चर्य जनक है जो क्षुद्रपदार्थोंको बहुमूल्य बनादेती है. आवो आवो; तुम्हारी कुटिमें चलें. अरे विदूषक और भृत्य, इस हृदयमें अब भी एक स्थान है जो तुम्हारे लिये दुःखित है ॥

विदूषक--(गाता है)

होवे प्रतिदिन सबन लोकमोंके संताप,
ज्ञानीनर संतोषसे, भोगें आपही आप ॥

लियर--सच है, भाई ॥ अब चलो. इस कुटिमें चलें ॥

(लियर और केन्टका गमन.)

विदूषक—मैं यहांसे खिसकनेके पहिलेएक भविष्यवाणी कहूंगा.

जो नर सेवक मंदिरकेरे, विपद अलर अरुवके घनेरे.
जो नर सुराखेंचनेहारे, मदिरा मांहि नीरको डारें।
अरु ऊंचे पदसोहिं जोही, निज दरजिन कर शिक्षक होई ।
राजद्रोहि नर जो बन बैठें, हुतभुक मांहिं जाय नहीं पैठें।
कुत्सित नारि प्रेमरसलाने, अग्नि चिठाय न जाय जलाने ।
न्याय कुक्षिमधि जो घट जाई, होय सत्य नाहिंझट इकाई ।
भट अनुचररु उधार विहीना, सुभट कोट नहीं धनहीना ।
सेवकतर नरके समुदाई, नर झुंडनमें जुरे न सांई ।
तब "अल्बीयन राज्यमें" मचे चलवली खूब ।
पदही सो चालें फिरें, दीन होय वा भूप ॥

यह भविष्यवाणी "मरलिन" कहेगा; क्योंकि मैं तो उसके जमानेसे बहुत पहिले हुवा हूं. (गया.)

(तृतीय दृश्य–[ग्लास्टरकी कोटी.]

(ग्लास्टर और अडमन्डका प्रवेश.)

ग्लास्टर–शोक ! अहो दारुण दुःख ! एडमन्ड; मैं इस प्राकृति विरुद्ध वर्तावसे दुःखी हूं. जब मैंने उस (नरेश.) पर कुछ दया प्रगट करनेके लिये उन (रीगन और कार्नवाल) से प्रार्थना की तो उन्होंने मेरे गृहके अधिकारोंको मुझसे छीन लिये और सर्दैव अप्रसन्न रहनेका भय देकर मुझको मना करदिया है कि, उस नरेशकी किसी प्रकारकी भी सहायता वा रक्षा न की जावे ॥

एडमन्ड--वह उनकी निष्ठुरता और प्राकृतिविरुद्धता है.

ग्लास्टर-कुछ परवाह नहीं,तुम कुछ मत कहो; इन ड्यूकोंके मध्य विग्रह होगया है. इनके लिये इससे भी बुरी एक दूसरी बात है. आज रात्रिको मुझे एक पत्र मिला है. इसका विषयमें कुछ कहना

सुनना बड़ा हानिकर है इस पत्रको मैंने अपने गुप्तावासमें रखकर ताला लगादिया है. महाराजाधिराजकी इन क्षतियोंका बदला अवश्य लिया जावेगा सेनाका कुछ भाग इस भूमिमें आचुका है. हमको राजाजीका पक्ष करना उचित है. मैं उनको ढूंढूंगा और सुगुप्ततया उनका पोषण करूंगा. तुम ड्यूकके निकट जाकर बात चीत करो कि, मेरी इस उदारताका उसको परिचय न होसके. यदि वह मेरे लिये पूछे तो कह दो कि मैं रुग्न और शय्याशीन हूं अपने स्वामीकी मैं अवश्य रक्षा करूंगा, चाहे ऐसा करनेसे मेरा वध भी होजाय और मुझको भी यहही भयदिया गया है कि, यदि मैं राजाकी कुछेक भी सहायता करूंगा.तो हनन किया जाऊंगा. ए एडमन्ड! कई नई २ बातें होनेवाली हैं. कृपाकर सावधान रहना॥ (गया.)

एडमन्ड-(आपहीआप) वह ड्यूक शीघ्रही इस उदारतासे परिचित किया जावेगा, जिसको सम्पादन करनेसे आप मना किये गये थे और उस पत्रसे भी॥ यह एक उत्तम और योग्य सेवा होगी और इससे मुझको वह वस्तु प्राप्त होगी जो मेरे पिताके हाथसे निकल जावेगी और वह वस्तु सर्वस्वसे न्यून नहीं है. वृद्धमनुष्य गिरते हैं और नवयुवक शिखर चढते हैं॥ (गया.)

चतुर्थ दृश्य-एक मैदान-एक कुटीके सन्मुख.

(लियर, कैन्ट.और विदूषकका प्रवेश.)

कैन्ट-हे स्वामी! वह स्थान यह है; हे मेरे प्यारे स्वामी!प्रवेश कीजिये। ऐसी आँधी और ऐसी रातकी ऐसी झपटें, ऐसे खुले मैदानमें, नहीं सही जासकती॥ (आँधीका समन.)

लियर-देखो तो मुझे यहांपर इकेलाही रहनेदो॥

कैन्ट-मेरे कृपालु स्वामी! यहां प्रवेश कीजिये॥

लियर-क्या मेरे हृदयके टुकडे किया चाहता है?

कैन्ट—मैं चाहता हूं कि, पहले अपने हृदयको खंड खंड करसकूं: महाराज ! अन्तरमें पधारिये ॥

लियर—देख, यह झगड़ालु कठोर पवन हमारे शरीरमें पार हुवा जाता है और तू समझता है कि, इससे अत्यन्त कष्ट होता है ऐसा तेरे लिये अवश्य होता होगा, परंतु जिस स्थानमें अधिक क्लिष्ट रोग लगे हुए हैं वहां छोटे २ रोगोंकी स्थिति भी मालूम नहीं होती. यदि किसी स्थानमें तेरी रीछसे भेट हो तो तुझको उससे अवश्य भागना चाहिये परंतु यदि तेरे बचावकी राह कुपित समुद्रकी तरफ हो तो उचित है कि, तू उस रीछका सामना करें. जब मन स्वाधीन होता है तब शरीर भी कोमल होजाता है मेरे मनकी उद्विग्नताने उस दुःखके सिवाय जो इसको लगा हुवा है मेरी इंद्रियोंसे सम्पूर्ण अन्य दुःखोंको खेंचलिया है । अहो सन्ततिकी कृतघ्नता ! हें, क्या यह ऐसी बात नहीं हुई कि, यह मुंह इस हाथको चबा डाले ? परंतु मैं उचित दंड देदूंगा. नहीं, अब मैं अधिक रुदन न करूंगा । ऐसी रात्रीमें मुझे बाहर निकालकर कपाट लगादेना वरसे जावो महाराज वरसे जावो. मैं सब सहलूंगा ऐसी रात्रीमें जैसी यह है ! अरी रीगन, ! अरी ! गानरिल ! तुम्हारे उदार पिताने तुमको सर्वस्व देडाला है—अहो ! यहही तो विक्षिप्त होनेकी राह है ; इस बातको छोड़ देनी चाहिये इसका अधिक विचार नहीं करना चाहिये ॥ (रोता है.)

कैन्ट—मेरे प्यारे प्रभु ! यहां प्रवेश कीजिये ॥

लियर—कृपाकर इस कुटीमें तुमही जावो और स्वयं आराम करो । यह तूफान मुझको उन बातोंके विचारोंसे रोंके रहेगा जो मेरे लिये अधिक दुःखदायी हैं ॥ खैर, मैं भी चलूंगा । (विदूषकके प्रति) अरे छोकरे ! इसमें तू जा पहिले तूही जा । तू बिना घरका दीन—पहिले तूही प्रवेशकर । मैं प्रथम प्रार्थना करूंगा और फिर सोऊंगा ॥

(विदूषक कुटीमें पैठता है.)

हे दीन और नग्न अनाथो ! जिनको इस निर्दयी अंधकारके आतपको भोगना पड़ता है, तुम चाहे जहां हो, सुनो; तुम्हारे गृह विहीन मस्तक और शुष्क हाथ, पग, तुम्हारे फटे टूटे चिथड़े ऐसे मौसममें जैसा यह है तुम्हारी रक्षा कैसे करते होंगे ? अहा शोक! मैंने इस बातकी पहिले चिन्ता न की। अरे धनान्ध अभिमानियो ! इस औषधका पान करो:-तुम स्वयं उन २ दुःखोंको भोगो जो ये अनाथ सहरहे हैं कि, जिससे तुम्हारे पुष्कल संचयको उन अनाथों- में बांट सको और देवताओंको अधिक न्यायकारी सिद्ध करसको.

एडगर-(नेपथ्यमें) एक दमड़ी ! एक दमड़ी ! दीनटाम !

(विदूषक कुटीसे निकल भागता है.)

विदूषक--हे मामा, हे मामा ! यहां न आवो, यहां न आवो, यहां भूत है. [मुझे बचावो मुझे बचावो.]

कैन्ट--मेरा हाथ थांभले। (चिल्लाकर) वह वहां कौन है ? ॥

विदूषक--भूत, भूत ! वह अपना नाम दीन "टाम" बत- लाता है ॥

कैन्ट--तू कौन है, जो इस कुटिमें बड़बड़ा रहा है ? निकल बाहर आ ॥

(विक्षिप्तके वेशमें एडगरका प्रवेश.)

एडगर--हटो, हटो-वह दुष्ट भूत मेरे पीछे २ आरहा है। "शीतवायु बहै 'हाथर्न' मांहीं"। हूं ! तुम ठंडसे मरतेहो तो पर्यङ्क- पर जावो और उष्ण हो लो ॥

लियर--क्या तूने अपनी पुत्रियोंको सर्वस्व दे डाला था? और क्या अब तेरी यह दशा होगयी है ?

एडगर--दीन टामको कोई पैसा देवेगा ? मुझको वह दुष्ट भूत

अग्नि और जलमें होकर, पानी और ;प्यके सिवाय,मनुष्य कुछ भी
कीचडमें होकर घसीट लाया है. जिस्करके देखो. तू रेशमके लिये
और फांसी मेरे मंदिरकी बैठकके पीछे, ऊनके लिये भेड़ोंका, सुगंध
रावडीकी थालीमें विष रखदिया था.। हैं. अहो, हम तीनोंमें तो
बातका अभिमानी बनादिया है कि गरतो तुमही हो.तुम्हारे जैसेनग्न-
चढकर चार इंच चौडी पुलपर भागूं नहीं है; अरे मांगे हुए पदार्थो,
याको धोखा देनेवाला मनुष्य समझकरछदो । वस्त्रोंको फाडता हुआ..
प्राणोंकी स्वस्ति हो ! टामको शीतबाध ऐसी दुखदाई रात्रीका व्य-
थक, थक, थक, । आँधीसे, टूटेहुए तार
बचावे. दीन टामको कुछ पुण्यमें दो । त हुए साक्षात अग्निदेव आरहे
हैं; लो, अब मैं उसको वहां पकड ारहे हैं.]
और वहीं इधर उधर भागता है ॥ नी करके) देखो, इस दुष्ट

संध्या झालर नादके समयसे
(अंधकारक। स शब्द होनेतक भ्रमण करता

लियर—हैं ! क्या इसकी पुत्रियों हैं; होट तिरछे करदेता है
है ? क्या तू पासमें कुछ भी न रक्खस पृथ्वीके दीन जीवोंका नाश
देडाला ?

विदूषक—नहीं, नहीं, देखो, उस आए तीनही बार ।
नहीं तो हम सबहीको लज्जित होना उसकी लार ॥
लियर—ईश्वर करे, सारी मरी, गावो आवो ।
मनुष्योंपर गिरनेके लिये रखीगयी हैं: सब खाजावो ॥
कैन्ट—हे राजन् ! इसके कोई पु मनुजाये कहँ हित ।
लियर—अरे वंचक, तेरा वध हो "सैन्ट होल्ड वित" ॥
रिक्त कोई दूसरा इस ऐसी बुरी अ
था. (एडगरकी प्रति) महाशय ! क्य
कि निर्वासित पिताओंको अपनी देद ऐसी रात्रीमें किसे ढूंढते हो ?
हो ? तुम्हारे क्या नाम हैं ?

१ इंगलेंडमें पुराने जमानेमें विक्षिप्त मनुष्य भ
लेते थे और 'घाव' करलेते थे.

चाहिये?"युक्तोऽयं दंडः"क्योंकि इसही देहने तो इन पेलीकनके समान कन्यायोंको सरजी है ॥

एडगर–पीलीकक, पीलीकक गिरिपर अहो–हल्लु, हल्लु, ल्लू, अहो !

विदूषक–यह शीतरात्री तो हम सबको मूर्ख और विक्षिप्त बनादेगी ॥

एडगर–दुष्टभूतसे सावधान रहो, माता पिताकी आज्ञा मानों, प्रतिज्ञाका भलीप्रकार पालन करो और टामको शीत बाधा करता है.

लियर–तुम पहिले क्या थे ?

एडगर–मैं[2] एक बड़ा अभिमानी सेवक था जो केशोंको कंधी करता था, टोपीमें प्यारीके मोजे रखता था, जितनी बातें, उतनीही शपथ खाता था और शीघ्रही उनको तोड डालता था, मदिरासे मेरा पूरा अनुराग था. पासा खेलनेमें मेरी बड़ी रुचि थी, स्त्रियोंके साथ प्रेम करनेमें तुर्कोंको भी मात करता था; थोथा प्रेमी, कानोंका पोला और [illegible]घातक था; आलस्यमें सूकर, चोरीमें शृगाल, खानेमें भेडिया, पागलपनमें कुत्ता, और मारनेमें सिंह था. (विदूषकसे) स्त्रियोंके जूतोंकी चरड़ मरड और रेशमी वस्त्रोंकी सरसराहटसे अपने दीन हृदयको धोखेमें न डालना, बोरहोंके खातेवहीमें अपना नाम न लिखवाना और फिर दुष्टभूतकी परवाह न करना ॥

"शीतवायु बहै हाथॅन म[illegible]ाहीं,–मोनि, सुचम, हा, मन, नो, गाई।
'डाल्फिन' पुत्र मौनधर [illegible]कहु,–अहह ! पुत्र जानतेहि देहु ॥

(अंधकारका समय)

लियर–ऐसे नग्नशिरके साथ, इस नभोमंडलकी ऐसी असीम आतपको सहनेकी अपेक्षा तो [illegible] शवागारही चले जाना तेरे लिये

१ एक पक्षीविशेष. जो अपने [illegible]ना बाप पक्षियोंको मारडालते हैं. २ विक्षिप्त जनकी नाईं अर्थ शून्य वक्तृताकी ग[illegible]यी है. ३ एक तरहकी झाडी.

अधिक उत्तम होता क्या ऐसे नग्न मनुष्यके सिवाय, मनुष्य कुछ भी नहीं है? देखो, भली प्रकार विचार करके देखो. तू रेशमके लिये कीड़ेका, चर्म्मके लिये अन्य जीवोंका, ऊनके लिये भेड़ोंका, सुगंध द्रव्यके लिये बिल्लीका अनुग्रहीत नहीं हैं. अहो, हम तीनोंमें तो मिलाव करादिया गया है, शुद्ध वस्तु तो तुमही हो. तुम्हारे जैसे नग्न-जीवके सिवाय मनुष्य और कुछ भी नहीं है; अरे मांगे हुए पदार्थो. दूर दूर रहो! देखो तो यह बटन खोलदो। वस्त्रोंको फाड़ता हुआ..

विदूषक—हे मामा, शान्त रहो; ऐसी दुखदाई रात्रीका व्यतीत करना दुस्तर है—वह देखो चलते हुए साक्षात अग्निदेव आरहे हैं—[ग्लास्टर एक मशाल लिये हुए आरहे हैं.]

एडगर—(ग्लास्टरकी ओर तर्जनी करके) देखो, इस दुष्ट भूतका नाम 'फ्लीबरटी जीबट' है; यह संध्या झालर नादके समयसे चलना प्रारंभ करके कुक्कुटके प्रथम शब्द होनेतक भ्रमण करता है। यह नेत्रमें फूला डाल देता है; होंठ तिरछे करदेता है और गेहूंपर इलण डाल देता है और पृथ्वीके दीन जीवोंको नाश करता है॥

"वितहोल्ड सैन्ट" खेत महि, आए तीनही बार।
रात-भूतसे मिल गये, औ नो उसकी लार॥
औ नो उसकी लार, उतरकर आवो आवो।
अनुमति दीनी तेहि, शपथ तुम सब खाजावो॥
कबहु नसो नहीं जाय, किसी मनुजाके कहँ हित।
औ भागो अब जाहु, कही यह "सैन्ट होल्ड वित"॥

कैन्ट—श्रीमान् कैसे हैं?

लियर—वह कौन है?

कैन्ट—अरे तुम कौन हो? और ऐसी रात्रीमें किसे ढूंढते हो?

ग्लास्टर—और तुम यहां कौन हो? तुम्हारे क्या नाम हैं?

एडगर[1]—मेरा नाम तो दीन टाम है जो तैरते हुए मण्डूक, विषैले मण्डूक और विषमरी, को भक्षण करता है; जो उस दुष्ट भूतके कुपित होजानेपर, क्रोध करके, आचारकी एवज, गोबर खाजाता है, जीर्ण मूषक और खाईमें गिरे हुए कुत्तोंको निगल जाता है;

अछेड़ सरोवरकी काईको पीता है; जिस गांवमें जाता है, वहीं खूब कोड़े खाता है, काठमें दियाजाता है और दूसरे दंड भी दिया जाता है. जिसके पास तीन कटिवस्त्र, छः शरीरवस्त्र, सवारीके लिये अश्व और शिकारके लिये शस्त्र थे परंतु—]

घोंस सही चूहे सही, लघुकुरंगकर डार।
भोज्य टामके ये रहे, तीन बरस औ चार ॥

मेरे अनुयायीसे सावधान! अरे, स्मल्किन[2] शान्ति, अरे भूत, शान्ति.

ग्लास्टर—क्या श्रीमानोंके पास अधिक उत्तम सहचर नहीं है?

एडगर—(क्रोधकरके) अँधियारेका राजा एक सभ्य है उसको 'मोडो' कहते हैं और 'माहु'

ग्लास्टर—हे प्रभु! अपने शारीरिक अंश इतने नीच होगये हैं कि यह अंश अब उसहीकी निंदा करने लगे हैं जिसने इनको पैदा किया है॥

एडगर—दीन टाम शीतसे बाधित है॥

ग्लास्टर—मेरे साथ अन्तरमें आवो; मेरा धर्म नहीं मानता है कि मैं आपकी पुत्रियोंकी सारी कठोर आज्ञाओंका पालन करूं. यद्यपि उसकी अनुमति मेरे घरके कपाट बंद करदेने और आपको ऐसी अनिष्टकारी रात्रीमें बाहर रख छोडनेकी है तथापि मैंने आपका अन्वेषण करने और वहां ले चलनेका साहस किया है जहां अग्नि और भोजन सन्नद्ध मिलेंगे.

---

१ एडगरकी वक्तृता प्रायः सबही अर्थ शून्य है। २ भूतोंके नाम विशेष.

(एडगरकी तरफ देखकर.)

लियर–प्रथम मुझको इस वैज्ञानिक से बातें करलेने दो। गाजका क्या कारण है?

कैन्ट–हे मेरे प्रियस्वामी! इनकी बातें मान लीजिये और उस घरमें चलिये.

(एडगरकी तरफ.)

लियर–इस विद्वान्को मैं एक बात कहूंगा। तुम किस शास्त्रमें पारङ्गत हो?

एडगर–भूतको उतारने और कीड़ोंको मारनेमें ॥

लियर–(एडगरको) एक बात आपसे सुगुप्ततया पूछने दीजिये–

कैन्ट–(ग्लास्टरको) हे महाराज! इनको चलनेके लिये एक बार फिर हठ कीजिये॥ इनकी मति विक्षिप्त हुई जाती है॥

(अंधकारका समन.)

ग्लास्टर–(कैन्टसे) इसमें आश्चर्यही क्या है? इनकी पुत्रियां इनको मारनेके उपाय खड रही हैं. अहो! उस उत्तम कैन्टको, उस दीन निष्कासित पुरुषसिंहने पहिलेही चितादिया था कि यह बात योंही होगी! तू कहता है श्रीमान् विक्षिप्त हुए जाते हैं. परंतु हे मित्र, मैं तुझे कहता हूं कि मैं स्वयं विक्षिप्तसा होरहा हूं. मेरे एक पुत्र था परंतु अब मैंने उसको मेरे स्वाधिकारसे च्युत कर दिया है। अभी थोड़ेही दिन बीते हैं कि वह मेरे प्राणोंका ग्राहक बना था. ए मित्र! मेरा उसपर स्नेह था. स्यात् किसी पिताने पुत्रपर अधिक स्नेह न किया होगा. मैं तुझे सत्य सत्य कहता हूं इस दुःखसे मेरी मति मारी मारी फिरती है अहो यह कैसी भयंकर रात्री है (लियरके प्रति) मैं श्रीमानोंके प्रति प्रार्थना करता हूं–

लियर-(उसे रोककर) अहो महाशय, क्षमा कीजिये। (एडगरसे) हे उदारतत्वदर्शी आप मेरे साथ रहें॥

एडगर-टाम शीतसे बाधित है॥

ग्लास्टर-(एडगरसे) अरे भाई, तू अन्तरमें चलाजा; इस कुटिमें प्रवेश; वहां उष्ण हो ले॥

(कुटिकी ओर जाता है.)

लियर-आवो, आवो सब अन्तरमें चलें--

कैन्ट--(रोककर) स्वामी इस ओरको-

लियर--(एडगरको पकड़कर) इनके साथ। मैं अपने विज्ञान विशादरके साथही रहूंगा.

कैन्ट--(ग्लास्टरसे) हे महाराज, आप इनहीकी मरजी रखें इस मनुष्यको भी साथ चलने दीजिये.

ग्लास्टर--(कैन्टसे) तुम उसको साथ लेकर आगे बढो.

कैन्ट--अरे भाई, आ तू भी हमारी साथ होले॥

लियर--आवो, विद्वान् महाशय, आवो॥

ग्लास्टर--बोलो मत, बोलो मत, चुपरहो॥

एडगर--चाइल्ड[१] रोलैन्ड चलि आये, प्रकाशहीन दुर्गमें धाए 'फाइ, फो, फम' शब्द सुखलावे,-ब्रिटिश नर रुधिर गंध यह आवे,॥

पंचम दृश्य-ग्लास्टरकी कोठी.

(कार्नवाल और एडमन्डका प्रवेश.)

कार्नवाल-तुम्हारे पिताके गृहसे विदा होनेके पूर्वही मैं अपना बदला लूंगा॥

१ केवल अर्थ शून्य वाक्य हैं जैसे कि विक्षिप्त मनुष्यके होते हैं.

एडमन्ड--प्रभो! मेरी भारी अपकीर्ति यह होगी कि प्राकृति स्नेह स्वामि भक्तिके आगे कैसा दबगया है. इस बातको विचारनेसे मुझे कुछेक भय होता है॥

कार्नवाल--मुझको अब सूझने लगा है कि यह तुम्हारे भ्राता का केवल दुष्टस्वभावही नहीं था जिसके कारण वह अपने पिताका वध किया चाहता था परंतु तुम्हारे उत्तेजक आत्मियगुण भी उसमें हेतु हुए हैं जो उसकी निंदनीय शठताके कारण और भी समर्धित रूपसे प्रकाशमान हैं॥

एडमन्ड--मेरा सौभाग्य भी कैसा द्वेषी है कि मुझे न्यायशील होते भी पछिताना पड़ता है! यह वह पत्र है. कि जिसके लिये उसने मुझको कहा था और जो प्रगट करता है कि वह फ्रांस नरेशके फलित लाभोंसे जानकार था। हे ईश्वर! यह वञ्चकता क्यों हुई वा मुझे इसके जाननेवाला क्यों बनाया॥

कार्नवाल--सुनो तो, तुम मेरे साथ मेरी प्रियाके पास चलो॥

एडमन्ड--यदि इस पत्रके समाचार सत्य हों तो एक भारी कार्य्य आपको करना है.

कार्नवाल--निश्चित हो वा अनिश्चित, तुमको तो तुम्हारे पिताकी जायदादके अधिकार मिलगये-अपने पिताको ढूंढो शीघ्रही हमारे पास उपस्थित करो॥

एडमन्ड--(आपही आप) यदि वह उस राजाको आशा भरोसा करता हुवा मिल जावे तो इनको संदेह औरभी अधिक बढ़ जावेगा। (प्रगट) यद्यपि मेरे रुधिर और मेरे कर्तव्यमें भारी झगड़ा होरहा है तथापि मैं स्वामि भक्तिमें तत्पर हूं॥

कार्नवाल--तुम्हारेपर मेरा बड़ा भरोसा है और तुम अपने पितासे भी मुझे अधिक स्नेही पावोगे॥ (गये.)

छठा दृश्य--ग्लास्टरकी कोठीके खेतके पास एक मकान.

(ग्लास्टर, लियर, कैन्ट, विदूषक और एडगरका प्रवेश.)

ग्लास्टर--खुली पवनसे तो यहांही ठीक है. आनंदके साथ यहां रहो, तुम्हारे सुखमें जितनी वृद्धि होसकेगी करूंगा और यहां लौटकर आनेमें भी विलंब न करूंगा ॥

कैन्ट--महाराजकी मानसिक शक्तियां अधीरताके कारण नष्ट होगयी हैं. परमेश्वर आपको आपकी कृपालुताका एवजा दे.

(ग्लास्टरका गमन.)

एडगर--मुझको तो 'फ्रैटरैटो' बुला रहा है; कहता है कि 'नीरो' अंधयारी झीलमें धीमरका काम करता है (विदूषकको) अरे निर्दोषी, तू ईश्वरकी आराधना कर और दुष्ट भूतसे सावधान रह ॥

विदूषक--हे मामा, कृपाकर मुझको यह बतावो कि विक्षिप्त मनुष्य सभ्य होता है वा भट्ट ॥

लियर--राजा होता है, राजा होता है ॥

विदूषक--जो पिता अपने पुत्रकी सँभालके लिये एक सभ्य नियत करता है वह एक भट्ट है परन्तु जो अपनेही सामने अपने पुत्रको सभ्य बना देता है उसको विक्षिप्त भट्ट समझना चाहिये ॥

लियर--अभी एक सहस्र जलते हुए लोहेके डंडे लाकर इन (पुत्रियोंपर) रखेजाय ॥

विदूषक--जो भेडियेके पलाऊ होने, अश्वके आरोग्य रहने और बालकके प्रेममें विश्वास करे, वह पागल है॥

लियर--(अपनी धुनिमें) ठीक ऐसाही किया जावेगा; मैं इनको

ही पकडवाऊंगा (एडगरसे) अहो विज्ञन्यायकर्त्ता ! आवो, हां आसन ग्रहण करो। (विदूषककी प्रति) और, आप यहां राजें-हे शृगालीनियो !

एडगर-(शून्यमें अंगुलीकरके) इधर देखो तो जहां वह ड़ी देखरही है ! अहो, भट्टारिके ! रोबकारीमें क्या तुमको नोंकी आवश्यकता रहेगी ?

पाट नदी, "वैसी" ! मोपै आजा-

विदूषक-फाट रहै नौकामहं, योग्य मूकता ताहि।
साहसनहिं वह करखके, आनेको तव पांहि ॥

एडगर-वह दुष्टभूत दीनटामके ढिग कोकिलाकी बोली बनाकर आया करता है "होपडैन्स" टामके पेटमें मच्छियोंके लिये चिल्लाया करता है ! अरे कालेपार्शद, टर्र २ न कर, मेरेपास हां तेरे लिये भोजन नहीं है ॥

केन्ट-हे राजन्, आपका स्वास्थ्य कैसा है ? क्या भयभीत नहीं होरहे हो, क्या आप लेटेंगे और तकियोंपर आराम करेंगे ?

लियर-मैं प्रथम इनकी रोबकारी सुनूंगा. गवाह पेशकरो (एडगरसे) हे न्यायक, आप विराजें (विदूषकसे) और आप न्यायकरनेमें इनके सहायक हैं: आप इनके समीपमें बैठें. (केन्टकी प्रति) और आप शरिस्तेदार हैं, आप भी विराजें।

एडगर- हम न्यायपूर्वक जांच करेंगे।

अहो सुखीगोपाल तू, जागत रहा कि सोय।
तेरी छागी भेड़का, गमन खेतमें होय ॥
छोटे तव मुखविवरसे, शब्द एक जो होय।
तेरी छागी भेड़से, अन्न हानि नहिं कोय ॥
पुर ! पुर ! देखो, वह मार्जारी भूरी है ॥

---

१ एक का [illegible] नाम. २ [illegible].

लियर—पहिले इसेही पकडो । यह गानरिल है. इस मानव-वर सभाके सामने मैं शपथ लेकर कहता हूं कि, इसने उस महाराजा अपने पितापर पादप्रहार किया था ॥

विदूषक--अहो, भट्टारिके ! इधर आवो; क्या तुम्हारा नाम गानरिल है ?

लियर--वह नाहीं नहीं करसकती ॥

विदूषक—(गानरिलकी आवाजमें) क्षमा प्रार्थी हूं, मैंने तो आपको तिपाई समझकर टुकरा दिया था ॥

लियर--और यह दूसरी है जिसकी तीक्ष्ण दृष्टि इसके हियेके भंडारको प्रगट करती है, उसे धरो, धरो, जाने न पावे। शस्त्र, शस्त्र, तलवार, अग्नि ! इस स्थानमें भी घूंस । अहो पाखंडी न्यायक ! तूने उसको क्यों वचकर जाने दिया ?

एडगर—तुम्हारे पांचों प्राणोंका कल्याण रहे !

कैन्ट—हा ! कैसी शोचनीय दशा है ! हे राजन् ! आपके उस धैर्य्यका अव क्या हुवा जिसे धारण रखनेका आप इतना अभिमान रखते थे ?

एडगर--(आपही आप) मेरे अश्रु महाराजकी सहानुभूतिमें अव इतने वेगसे गिरने लग गये हैं कि मेरा गुप्तवेश प्रगट होजानेका भय है ॥

लियर--देखो तो वे छोटे २ श्वान, "ट्रे" "ब्लैंच" "स्वीटहार्ट" सारेही मेरी ओर भोंक रहे हैं ॥

एडगर--(कूदकर) टाम, अपने मस्तकको उनकी ओर यों चलावेगा और कहेगा अरे विल्लो भागजावो ॥

काले धौळे श्वान औ दन्त विषैले सोय ।
भाँति भाँतिके आय सब, ठाडे रहे जो कोय ॥
अपने सिरसे मैं उन्हें, मारूंगा यों जाय ।
ह्वया ह्वया करते भोंकते, भगा देऊंगा ताय ॥

थक, थक, धक, धक । सीसा ! आवो जागरणोंमें मेलोंमें और बजारोंमें चलें; अरे दीन टाम तेरा श्रृंग शुष्क है ॥

लियर-अच्छा तो रीगनको काटो फाड़ो और देखो कि इस्के हृदयमें क्या है प्राकृतिमें वह कौन कारण है जिस्ने इसके हृदयको ऐसा कठोर बनादिया है ? (एडगरकी प्रति) हे भद्र ! मेरे सौ भटोंमें आपकोभी नियुक्त करता हूं. केवल मैं आपके वस्त्रोंकी चाल ढालको पसन्द नहीं करता हूं; हाँ, आप यह भलेही कहें कि यह 'फारस' की चालकी पोशाक है; परन्तु तो भी इसे बदल डालो तो ठीक हो ॥

कैन्ट-हे मेरे प्यारे स्वामी ! अब थोड़े कालपर्य्यन्त यहां शयन करके आराम कीजिये.

लियर-तूष्णीं स्थीयतां; तूष्णीं स्थीयतां, पड़दे लगादो । अच्छा ठीक ठीक हम प्रातःकालही ब्यालू करेंगे अच्छा, अच्छा, अच्छा. [सोता है.]

विदूषक-और मैं मध्याह्नको शय्याशायी होऊंगा ॥

(ग्लास्टरका प्रवेश.)

ग्लास्टर-हे सुहृद: यहां आ. वे नृपाल मेरे स्वामी कहां हैं ?

कैन्ट-महाराज यहां यह हैं परन्तु आप इन्हें न छेड़ें इनकी मांसिक शक्तियां क्षीण होचुकी हैं ॥

ग्लास्टर-(कैन्टके प्रति) हे मेरे प्यारे मित्र ! कृपाकर इनको हाथोंमें उठालो; इनको वध करनेका जो विचार हुवा है. उस्को मैंने छुपकर सुन लिया है. बाहरमें एक डोली सुसज्जित है जिसमें इनको बिठाकर तुम 'डोवर' की ओर लेजादो और यहां तुम्हारा स्वागत होगा और तुम्हारी रक्षा कीजावेगी। अपने स्वामीको शीघ्र उठाओ; यदि एक क्षणमात्र भी विलंब करोगे तो इनके प्राण, तेरे और उन सबके प्राणोंके आप जो इनको बचाना चाहेंगे; अवश्य हरण किये जावेंगे. उठावो, शीघ्र उठावो और मेरे पीछे २ चले आवो और मैं तुमको तुरंत ऐसे स्थानपर पहुंचा दूंगा जहांसे तुम स्वयं चले जासकोगे ॥

कैन्ट--संतप्त और दुःखी नरेश सोरहे हैं. इस निद्रासे फिर भी इनके विभिन्न अंगोंमें शान्ति होजाती और यदि अवसर न मिला तो इनकी चिकित्सा होना असंभव होजावेगा. (विदूषककी प्रति) अरे आ, अपने स्वामीको लेचलनेमें सहायी हो. तुझको पीछे रहना उचित नहीं है ग्लास्टर आवो, आवो, चलो ॥

(एडगरके सिवाय सब गये.)

एडगर--जब हम अपनेसे वड़ोंको हमारे जितने दुःख भोगते देखते हैं तब हम अपने दुःखोंको भूल जाते हैं इकेले मनुष्यको जब दुःख होता है तो उस्का मन बहुत व्याकुल होजाता है और खेल क्रीड़ाओंमें कदाचित् नहीं लगसकता है. परन्तु जब बराबर दुःखी मनुष्य इकट्ठे होकर एक दूसरेके दुःखको वटाते हैं तो मनका भारीपन और उद्विग्नता कम होजाती है । मेरीही दशा देखो कि राजाधिराजके घोर संतापको देखनेसे मुझे अपने दुःखोंकी परवाह नहीं रहीं हैं जो अपकार उस्की संततिने उस्के साथ किया है पिताने मुझको वैसीही हानि पहुँचाई है । अब मुझे यहांसे चलना चाहिये क्यों कि यह मनुष्योंके आनेका शब्द इसही ओर बढ़ा आता है और मैं अपने सत्य स्वरूपको कदापि प्रगट न करूंगा जबतक मेरे पिता याथातथ्यको समझकर मुझसे प्रीति करना न चाहे ईश्वर करे राजाधिराज शांतिपूर्वक रक्षास्थानमें पहुँच जावें । अब मुझे छुपना चाहिये. [जाता है]

(सप्तमदृश्य--ग्लास्टरकी दुर्ग.)

(कार्नवाल, रीगन, गानरिल, एडमन्ड और अनुचारोंका प्रवेश.)

कार्नवाल--(गानरिलसे) अपने पतिके पास बहुत शीघ्र जावो और उनको यह पत्र दिखादो. फ्रांसनेरशकी सेना इस देशके किनारे लगगयी है । कोई जावो और उस चाण्डाल ग्लास्टरको ढूढकर यहां लावो [थोडे सेवक गये.]

रीगन—उसे तुरंत फांसी देना चाहिये ॥

गानरिल—अथवा उसकी आँखें निकलवालेना चाहिये.

कार्नवाल—तुम सब उसको मेरे भरोसे छोड़दो. एडमन्ड, तुम हमारी साळीके साथमें जावो क्योंकि जो बदला हम तुम्हारे वंचक पितासे लिया चाहते हैं वह तुम्हारे देखने योग्य नहीं है. तुम डयूक महाराजके पास जावो और युद्धके लिये शीघ्रही तय्यारियां करनेके लिये उनको सलाह दो ॥ हम भी संग्रामके लिये सन्नद्ध हैं और हलकारोंद्वारा समाचार जल्दी २ आतेजाते रहेंगे. प्यारी हिन, तुम्हारी स्वस्ति हो ! (एडमन्डसे) ग्लास्टर महाराज आपकी भी स्वस्ति हो ॥

(आस्वाल्डका प्रवेश.)

कहो, कहो, वह नरेश कहां हैं ?

आस्वाल्ड—बडे ग्लास्टरने उनको यहांसे भेजदिये हैं अनुमान ३५ या ३६ भट्ट उनको जोरशोरसे ढूँढनेमें लगेहुए थे. नरपतिके साथ उस सबकी भेट डोवरके दरवाजेपर हुई उनके साथमें कतिपय सरदार थे ! वे सब डोवरकी दुर्गमें प्रवेशे हैं और वहां शस्त्रधारी सुहृदोंसे समन्वित होनेका अभिमान रखते हैं.

कार्नवाल—जावो, अपनी स्वामिनीके लिये अश्वोंको सुसज्जित करो ॥

गानरिल—हे महाराज, और हे बहिन आप दोनोंकी स्वास्ति रहे ॥

(गानरिल, एडमन्ड, आस्वाल्डका गमन.)

कार्नवाल—जावो, उस वंचक ग्लास्टरको ढूँढो और तस्करकी नाईं उसके पुट्ठे बांधकर मेरे सन्मुख उपस्थित करो ॥ (थोडे सेवकगये.) यद्यपि नीति विरुद्ध हम उसके प्राणलेनेकी आज्ञा नहीं देसकते हैं

तो भी क्रोधके कारण हम इसको ऐसा दंडदेंगे जिसको साधारण मनुष्य निंदेंगे परन्तु जिसके लिये हमारी कोई हानि न होगी ॥ परन्तु यह कौन आरहा है ? वही वंचक ?

(दो तीन सेवक ग्लास्टरको पकडेहुए लाते हैं.)

रीगन—यह वही कृतघ्न शृगाल है ॥

कार्नवाल—इसकी मुरझीहुई भुजाओंको बांधलो ॥

ग्लास्टर—आप यह क्या किया चाहते हैं ? मेरे मित्रो, देखो तुम मेरे महमान हो; आप मेरा अनिष्ट न करें.

कार्नवाल—मैं कहता हूं, इस दुष्टको बांधलो ॥

(ग्लास्टरकी भुजाओंको बांधते हैं.)

रीगन—खूब जोरसे, खूब जोरसे-निकृष्ट वंचक ।

ग्लास्टर—निर्दयी स्त्री, मैं वञ्चक और दुष्ट नहीं हूं.

कार्नवाल—इसको इस कुर्सीसे बांध दो-और चाण्डाल अब तू देखेगा कि-

[रीगन ग्लास्टरकीदाढी खेंचती है.]

ग्लास्टर—हे परमेश्वर ! दाढीका खेंचना तो महादुष्कृति है॥

रीगन—इतनी श्वेत और ऐसा वंचक !

ग्लास्टर—दुराचारिणी स्त्री, ये केश जिनको तू मेरे होठोंसे खेंचती है सजीव होकर तुझको दूषितकरेंगे-मैं तुम्हारा सत्कार करने वाला हूं. लुटेरोंकी नाई मेरे सम्माननीय स्वरूपको इसप्रकार न बिगाडो तुम्हारी क्या इच्छा है ?

कार्नवाल--अच्छा साहिब, बतावो तो वे क्या पत्र थे जो कतिपय दिवस पहिले तुमको फ्रांससे मिले थे ?

रीगन—सत्य २ उत्तर देना; क्योंकि हम सब जानते हैं ॥

कार्नवाल--और इन वंचकोंके विषयमें तुमने क्या विचार बांधे थे जो अबही हमारे साम्राज्यमें आये हुए हैं ? ॥

रीगन--तुमने उस विक्षिप्त राजाको किसके हाथ सौंपा दिया है ?

ग्लास्टर--हाँ, मुझे एक पत्र मिला है जिसमें केवल अनुमानी हुई बातें लिखी हुई हैं और जो किसी साधारण पुरुषके पाससे आया हुवा है न कि किसी विपक्षीके पाससे ॥

कार्नवाल--कपटता ॥

रीगन--और झूंठ ॥

कार्नवाल--तूने उस राजाको कहां भेजा है ?

ग्लास्टर--डोवरमें ॥

रीगन--डोवरमें क्यों ? क्या तुझे यह भय देकर आज्ञा नहीं दीगयी थी कि-

कार्नवाल--डोवरमें क्यों ? पहिले इसका उत्तर दे ॥

ग्लास्टर--मैं बँधाहुवा हूं और इस लिये जो हमले होंगे सहूंगा ॥

रीगन--अजी साहब, उसको डोवरमें क्यों भेजा है ?

ग्लास्टर--क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तेरे निर्दयी नखों-द्वारा उसके दीन वृद्ध नेत्रोंको निकलते हुए देखूं-अथवा तेरी भयानी बहिनके दांतोंको उसके आमिषमें प्रवेशते हुए अवलोकन करूं। अहो, वैसी यम लोक सदृश रात्रीमें अनाच्छादित मस्तक रहकर जिस घोर आंधीको उसने निकाली है उससे समुद्र भी आकाश पर्य्यन्त झगड़कर इन देदिप्यमान अग्नियों (तारों) को बुझा डालता; परंतु उस दीन और जीर्ण नरेशने इस नभोमंडलकी वृष्टिको सही ! यदि उस कठोर कालमें भेड़िये भी तेरे द्वारपर

धुरीते तो भी तुझको यहही कहना योग्य होता ! "अरे द्वारपाल कपाट दूर करदे" परन्तु मैं ऐसी पुत्रियोंको देखूंगा कि इनसे भली प्रकार वदला लिया गया ॥

कार्नवाल--तू देखेगा तो कभी नहीं। भृत्यो, कुरसीको थांभे रहो। तेरे इन नेत्रोंको मैं पददलित करदूंगा ॥

(पैरसे एक नेत्रको फोडता है.)

ग्लास्टर--(सेवकोंसे) अहो, अहो जो तुम सव, जो वृद्ध होनेकी आशा रखते हो मेरे सहायी वनो ! अरे निर्दयी ! हाय ! परमेश्वर ! हाय !

रीगन--एक ओरका नेत्र दूसरेको मुंह चिढावेगा-दूसरे नेत्रको भी ॥

कार्नवाल--यदि तुम वदलेको देखो तो-

(दूसरा नेत्र फोडना चाहता है.)

पहिलाभृत्य--(क्रोधकरके) महाराज, ठहर जाइये ! मैंने शैशवावस्थासे आपकी सेवा की है परंतु अव आपको ठहर जानेकी आज्ञा देता हूं; स्यात् इससे उत्तमतर सेवा मुझसे न हुई होगी॥

रीगन--रे श्वान !

पहिलासेवक--(रीगनसे) यदि तुम्हारे होटोंपर दाढी होती तो वह अभी हिलाई जाती ॥ तुम्हारा, क्या करनेका विचार हैं ?

कार्नवाल--नीच, चांडाल ॥

(कृपाण निकालकर युद्ध करते हैं.)

पहिलासेवक--अच्छा तो आइये और अपना पारितोषक लीजिये ॥

रीगन-(एक सेवकसे) तेरी कृपाण मुझे दे; एक नीचियों सामनाकर खड़ा हो ॥

(कृपाण लेकर उसके पीछे दौडती है और मारतीहै.)

पहिला सेवक-हाय, मैं मारागया ! (ग्लास्टरसे) हे महाराज, इस दुष्टकी कुछ क्षति देखनेके लिये आपके एक नेत्र बाकी है । हाय ! [मरता है.]

कार्नवाल-स्यात्, यह नेत्र अधिक क्षतिदेखे । इसे भी बंधकरदो । (पैरसे नेत्रको दबाता है) निकल, तू क्षुद्रदृष्टी ! अब तेरी चमक कहां है रे !

ग्लास्टर-अंधियाराही अंधियारा और घोर दुःख है । अहो मेरे पुत्र, तू कहां चला गया है? प्रिये एडमन्ड! संपूर्ण स्वाभाविक प्रेमाग्निको प्रज्वलित करके इस भयंकर दुष्कर्मका बदला लेना ॥

रीगन-चलरे, वंचक और चांडाल ! तू उस मनुष्यको सहायताके लिये बुलारहा है जो तुझे घृणा करता है. उसहीने तो तेरी वंचकताको हमारे आगे प्रगटकी है और वह ऐसा बाइला नहीं है जो तेरेपर दया दिखावे.

ग्लास्टर-अहो मेरी मूर्खता ! तो फिर एडगरपर मेरा दुराचरण हुवा है । हे दयालुदेवो ! मुझे क्षमा करो और उसकी रक्षा करो !

रीगन-जावो, इसे द्वारके बाहर निकालदो । यह नासिकाद्वारा 'डोवर' की राह पहिचान लेगा ॥

[एक सेवक ग्लास्टरका हाथ पकड़कर लेगया.]

स्वामी, स्वामी आप कैसे हैं ? आप यों क्यों देखरहे हो ?

कार्नवाल-मुझे तीक्ष्ण आघात पहुंचा है प्यारी, आगे मेरे साथ चली आवो, इस नेत्र शून्यशठको बाहर निकालदो । इस

गोलेको रोडीमें फिकवादो। हे रीगन, मेरा रक्त बहा जाता है अनुचित समयपर यह आघात लगा है-तुम मुझे हाथसे थांभे रहो

(रीगनके सहारे २ कार्नवालका गमन.)

दूसरासेवक-यदि इस मनुष्यको आराम होजाय तो मैं शपथ खाकर कहता हूं कि मैं दुष्टाचरण करनेमें शंका न करूंगा॥

तीसरासेवक-यदि यह डंकिनी चिरकालतक जीवेगी और अन्तमें अपनी मौतमरेगी तो सारी स्त्रियां राक्षसी बन जानेमें क्यों शंका करेंगी ?

दूसरासेवक-चलो, उस वृद्ध ग्लास्टर महाशयके पीछेचलें और उसको उस पागलसे मिलादें; वह उसको डोवरमें पहुँचा देगा. वह पागल ऐसा पक्कापागल है कि कोईभी कार्य उसको दियाजावे वह उसको करदेता है॥

तीसरासेवक-जाओ, तुम जावो और मैं उसके रक्तस्रवित नेत्रोंको बांधनेके लिये थोडासा सण और अंडोंकी सफेदी लेकर आता हूं। परमेश्वर उसकी रक्षा करें॥ [पृथक् २ गये.]

(जवनिका गिरती है)

तृतीयाङ्क समाप्त.

चतुर्थ अङ्क ४.



प्रथमदृश्य-[एक मैदान.]

(एडगरका प्रवेश.)

एडगर-प्रगटमें प्रशंसा और पीछेसे घृणाकीजानेकी अपेक्षा तो ऐसी क्षुद्रदशाहीमें रहना अधिक समीचीन है कि जिसमें घृणा किये जानेका ज्ञान रहता है. अत्यन्तक्षुद्र, अत्यन्तहीन और सौभाग्यविनष्ट होजाना अभयदान देता है (क्योंकि ऐसा होनेसे मनुष्यको अधिक हीनदशामें गिरनेका भय नहीं रहता) और मनुष्यको बिलकुल आशातीत नहीं बनादेता है क्योंकि उच्चपदसे मनुष्य नीचे गिरता है और नीचपदसे उच्चपद पाकर सुखपाता है. परन्तु यह कौन आरहा है ॥

(एक वृद्धपुरुषके सहारे ग्लास्टरका प्रवेश.)

हैं ! क्या मेरे पिता और यों ? अरे संसार ! यदि तेरी विस्मित करनेवाली अदल बदलके कारण तू घृणित न होता तो नवयुवक कदापि वृद्ध होनेकी इच्छा न करते ॥

वृद्धपुरुष-स्वामी मैं ९० बरससे आपका और आपके पिताका जमींदार रहचुकाहूं ॥

ग्लास्टर-चले जावो. मित्र, चले जावो; तुम मेरा कुछ साधन करनेमें मेरा प्रिय नहीं करसकोगे वरन् अपने आपको हानि पहुँचाते हो ॥

वृद्धपुरुष-हा, शोक ! महाराज आप रास्ता नहीं देख सकते हैं ॥

ग्लास्टर-मेरी कोई राह नहीं है और इसही लिये मुझे नेत्रोंकी आवश्यकता भी नहीं है. जब मैं देख सकता था तब मैंने ठोकर खाई प्राय: ऐसा देखा गया है कि हमारे गुण हमको हानि पहुँचाते हैं और हमारे अवगुण हमारा सुख साधते हैं. अहो मेरे प्रियपुत्र एडगर, अपने धोखा खाये हुए पिताकी क्रोधाग्निका भक्ष्य! यदि मैं तुझको एकबार भी छातीसे लगासकूं तो इन नेत्रोंके जानेका फिर मुझको दुःख न रहे ॥

वृद्धपुरुष-हैं, यह कौन है ? (एडगरकी तरफ देखकर)

एडगर-(आपही आप) हे परमेश्वर ! यह कोई नहीं कहसकता है कि "मैंही अत्यन्त दुःखी हूं" अलबत्ता यह कहसकता है: "मैं पहलेसे अधिक दुःखी हूँ"

वृद्धपुरुष-यह तो दीन और विक्षिप्त टाम है.

एडगर-(आपही आप) और यह भी कह सकता है; "स्यात् मैं अब और भी घणा दुःखी होजाऊं," परन्तु जिस मनुष्यके लिये यह कहा जाय "यह मनुष्य अत्यन्त दुःखी है" उस मनुष्यको कदापि अत्यन्त दुःखी नहीं समझना चाहिये.

वृद्धपुरुष-अरे, तू कहाँ जारहा है ?

ग्लास्टर-क्या यह भिक्षुक है ?

वृद्धपुरुष-विक्षिप्त और भिक्षुक, दोनोंही ॥

ग्लास्टर-वह कुछ विवेकशक्ति अवश्य रखता है नहीं तो वह कदापि भिक्षा नहीं मांग सकता. गत रात्रिके अन्धकारमें भी मैंने ऐसाही एक भिक्षुक देखा था जिसके कारण मुझे यह विचार हुवा था कि मनुष्य तो एक कीडे मात्र जीवही है उस समय मुझे अपना पुत्र याद आया तथापि मैं उस समयतक उसका हितकारी नहीं था. तदअनन्तर मेरे सुननेमें कुछ औरही बातें आई हैं, अहो ! हम प्रबल देवताओंके हाथोंमें मक्खियोंकी नाईं हैं जिनको दुष्ट-बालक कौतुक निमित्त मारा करते हैं ॥

एडगर-(आपही आप) मेरे पिताकी ऐसी दशा क्योंकर हुई? खेदको छुपाकर मूर्खताका वेश धारण करना एक बड़ा दुष्कर कृत्य है. ऐसा करनेसे अपने आपको और दूसरे दुःखी मनुष्योंको दुःख होता है. महाराज, आपकी स्वस्ति हो.

ग्लास्टर-(वृद्धपु० से) क्या वह नग्न है?

वृद्धपुरुष-महाराजा, हाँ ॥

ग्लास्टर-तो अब तुम कृपाकरके जाओ और यदि मेरे हितके कारण एकवा आधे कोसपर "डोवर" की राहमें आकर मिलजाओ, तो प्राचीन प्रीतिको स्मरण करके ऐसा करो और इस नग्न प्राणीके लिये, जिसको मैं अपने साथ के चलनेकी प्रार्थना करूंगा, कुछ परिवेष्टन ले आवो ॥

वृद्धपुरुष-अहा शोक! महाराज, यह तो विक्षिप्त है.

ग्लास्टर-यह कालचक्रके परिवर्त्तनका प्रभाव है कि अंधे मनुष्योंको विक्षिप्त मनुष्य गैल बतावें—इस काममें जैसा मेरी इच्छा है वैसा करो, अन्यथा अपनी इच्छानुकूल करो-परंतु सबसे पहिले यहांसे चले जावो ॥

वृद्धपु०-मैं इसके लिये मेरे उत्तमोत्तम आभूषण लाऊंगा; ऐसा करनेसे मेरे लिये चाहे जैसा फल होवे (गया).

ग्लास्टर-अरे नग्न मनुष्य ॥

एडगर-दीन "टाम" शीतमें बाधित है. (आपहीआप) मेरी अब सामर्थ्य नहीं है कि अपने आपको सब तरहसे छुपा रक्खूं ॥

ग्लास्टर-अरे यहां आ ॥

एडगर-(आपहीआप) तथापि मुझे छुपा रहनाही पड़ेगा ॥ (प्रगट) आपकी सुदृष्टिका कल्याणहो. इनमें रक्त बहरहा है ॥

ग्लास्टर-क्या तू "डोवर" की गैल जानता है ॥

एडगर--हां, खोला और दरवाजा, गैला और गैली सब जानताहूं ॥ दीन टाम, भयके कारण बुद्धिहीन होगया है. हे उत्तम पुरुषके वृद्धपुत्र, ईश्वर उस दुष्ट भूतसे आपको बचावे दीन टाममें एकही साथ पांच भूत रहचुके हैं । 'ओबीडिक्ट' व्यभिचारका राजा "होबीडीडैन्स" मूकताका, "मांहू" तस्करताका, "मोडो" हत्याका और "फलीबरटीजैट" मुँह चिढ़ानेमें चतुर है, जो अब दासियों और टहलुनियोंमें आता है, इसलिये महाराज ईश्वर आपकी रक्षा करे ॥

ग्लास्टर--तू यहां आ और यह धन ले । तुझे ईश्वर प्रेषित विपत्तियोंने सम्पूर्ण दुर्भाग्योंके सहनेमें कठोर करदिया है मेरा हतभाग्य होना तुझे अधिक भाग्यवान् बनाता है, हे ईश्वर, सर्वदा ऐसाही किया करें । उस धनाढ्य और पापी मनुष्यको जो आपको तिरस्कार करता है और परदुःखसे अज्ञान रहनेके कारण जिसके नेत्र नहीं खुले हैं, तुरन्त आपके बलका अनुमान करादीजिये जिससे अधिकांश धनके बटजानेपर प्रत्येक मनुष्यके पास भरपूर होजावे । क्या तू "डोवर" की राह जानता है ?

एडगर--महाराज, हां ॥

ग्लास्टर--वहां एक पहाड़ी है जिसके उन्नत और झुके हुए उग्रभागका प्रतिविम्ब उस समुद्रमें गिरता है जो उस पहाड़ीके गिर्द है. और जिस प्रतिविम्बको देखनेसे भारी भय उपजता है. तू मुझे केवल उस उग्रभागतक पहुँचादे और मैं तेरी इस विपत्तिको जिसमें तू निमग्न है, मेरे किसी द्रविण पदार्थसे दूर करदूंगा. उस स्थानपर पहुँच जानेके पश्चात् मुझे राह दिखलानेकी कोई आवश्यकता न रहेगी ॥

एडगर--आप मुझे अपना हाथ सौंपें और दीन "टाम" आपको वहांपर ले चलेगा ॥ [गये]

द्वितीय दृश्य.

ड्यूक "अलवनी" के राज्यभवनके सामने ।

(गानरिल और एडमण्डका प्रवेश.)

गानरिल—महाराज, आपका स्वागत हो। मुझे आश्चर्य है कि राहमें मेरे भोले पतिके साथ अपनी भेट न हुई ॥

[आस्वाल्डका प्रवेश.]

कहो तो तुम्हारे स्वामी कहां हैं ?

आस्वाल्ड—हे प्रभु ! यहां अन्तरमें, परन्तु किसी भी मनुष्यके स्वभावका ऐसा परिवर्त्तन देखनेमें नहीं आया ॥ जब मैंने उनको उस सेनाके विषयमें कहा जो किनारे लगगई है तो वह मुसक्याने लगगये जब आपके यहां पधारनेके समाचार सुनाये तो उन्होंने उत्तर दिया कि "महत् अनिष्टम्" और जब मैंने गृह्रग्लास्टरकी वंचकता और उसके पुत्रकी स्वामिभक्तिका विवरण किया तब उन्होंने मुझको निर्बुद्धि बताया और कहा कि तूने सब बातको विपरीत समझ रक्खी है ॥ जिस बातमें अत्यन्त घृणा होना उचित था वह उनको प्रिय और प्रिय वस्तु घृणित मालूम होती है ॥

गानरिल—(एडमन्डके प्रति) तो आपको आगे बढ़ना उचित नहीं है; मेरे स्वामीका स्वभाव गायकी नाई डरपोक है और इसही लिये वह उत्साहपूर्वक कार्य्य करनेमें साहस नहीं करते हैं और अपनी उन हानियोंको हानि नहीं समझते हैं जिनको रोकनेके लिये उसको उद्यम करना पड़े. राहमें प्रगट कीहुई अपनी अभिलाषाओंके सिद्ध होजानेकी संभावना है. हे एडमण्ड आप मेरे बहनोई के पास पीछेही चले जाओ. भरती करनेमें शीघ्रता करो और उनकी सेनाको सन्नद्ध करो. मैं भी शस्त्रोंको धारण करके अपने पतिको चरखा सौंपूंगी यह विश्वासपात्र सेवक अपने बीच समाचार पहुँचाता रहेगा. यदि तुम विपत्तियोंसे नहीं डरोगे तो शी-

वही अपनी प्रियाकी अनुमतिको श्रवण करोगे. यह मुद्रिका पहन लो. [एक चल्ला देती है] अपने मस्तकको झुकावो. यह चुम्बन (यदि यह वोलनेकी ताकत रखता होता) तो आपके उत्सा- हको चौगुणा करदेगा-देखो, (आंखोंको मटकाकर) इस वातका ध्यान रहे-अच्छा, जावो तुम्हारा कल्याण हो.

एडमन्ड-मृतकपंक्तिमें भी मैं तुम्हाराही रहूंगा।

गानरिल-सदा मेरे प्राण प्यारे हो. [एडमन्डका गमन.] देखो, मनुष्योंमें भी कितना अंतर है-स्त्रीको भी ऐसेही पुरुषकी सेवा करना चाहिये-मेरा मूर्खपति मेरे शरीरका अयोग्य स्वामी है।

आस्वाल्ड-स्वामिनी, महाराज आरहे हैं-

(अल्वनीका प्रवेश.)

गानरिल-मैं कभी तो अधिक सत्कारके योग्य समझी जाती थी

अल्वनी-अहो गानरिल ! तुम उसरेणुकाके योग्य भी नहीं हो जो प्रवलपवनद्वारा उड़ २ कर तेरे मुंहपर लगती है. मुझको तेरे स्वभावका विश्वास नहीं है। जो प्राणी अपने उत्पत्ति कारणसे घृणा करता है वह अपने आपमें नहीं रहसकता। जो वृक्षशाखा अपने स्थितिकारक रसदाता वृक्षसे टूटकर पृथक् होजाती है, वह अवश्य मुरझा जाती है और जलाडिये जानेके योग्य समझी जाती है ॥

गानरिल-वस, अधिक नहीं; यह प्रस्तावना मूर्खता सूचक है॥

अल्वनी-बुद्धिमानी और भलाईके काम दुष्टोंको बुरे मालूम होते हैं. जो मनुष्य कजोड़े हैं उनको कजोड़मेंही सुगंध आती है। तुम यह क्या कररही हो ? तुमको पुत्रियां नहीं भगोरिणियां कहना चाहिये. देखो तुम्हारा यह कैसा कृत्य हुआ है ? अहो विकट विक- राल वर्णसंकरियो ! ऐसे पिताको, ऐसे दयालु और वृद्ध पुरुषको, जिसके पवित्र शीसको नृत्य करनेवाले रीछभी चाटे-उसको तुमने विक्षिप्त वना दिया है!!मेरे श्रेष्ठ भ्राता कार्नवालने,उस राजकुमार

रने, इस पुरुषने जिसका इस नृपालने इतना प्रिय सम्पादन किया, क्योंकर तुमको ऐसा करने दिया है ? यदि ईश्वर इन क्षुद्र अत्याचारोंको दबाने और रुजालेनके लिये अपने प्रत्यक्ष पार्षदोंको नहीं भेजेगा तो महासागरके विकराल जीवोंकी नाईं मनुष्य बलात्कारसे मनुष्योंकी आहट करने लगेंगे ॥

गानरिल–रे कातर पुरुष ! जो अपने कपोलोंको थप्पड़ लगाए जाने, और अपने मस्तकको हानि किये जानेके लिये धारण करता है जिसकी भृकुटिके नीचे ऐसे नेत्र नहीं है जो अपने बड़प्पनको पहिचानें और आपत्तियोंसे बचावें. जो नहीं जानता है कि ऐसे २ दुष्ट मनुष्योंपर जो हानि करसकनेसे पूर्व दंड दिये जाने योग्य हैं–अनुकम्पा दिखलाना मूर्खताका काम है. आपका सैनिक वाद्य कहां है ? क्या आप नहीं जानते हैं कि "फ्रांस" नरेश आपके सूने राज्यमें अपनी ध्वजाओंको फहरा रहा है; आपके राज्यको दबालेनेकी धमकी दे रहा है ? परंतु आप धार्मिक मूर्खोंकी नाईं बैठे २ देख रहे हैं और यों पुकार रहे हैं:–आश्चर्यकी बात है कि वह (फ्रांस नरेश) ऐसा करता है. ॥

अलबनी–भूतिनी ! अपने स्वरूपको तो देख–इतनी विरूपता पिशाचमें इतनी भयंकर नहीं दिखलाई देती जैसी स्त्रीमें ॥

गानरिल–रे थोथे मूर्ख ! ॥

अलबनी–तू परिवृत्त और आत्मश्लाघिनी नीच.........और अपने आपको राक्षसी न बना. यदि क्रोधके वशीभूत होनेमें मेरी योग्यता होती तो यह हाथ तेरे मांस, और हाड़को अलग २ कर देनेको बहुत था । तू यद्यपि आकारसे स्त्री हुई ....

गानरिल–परमेश्वरकी शपथ, अब तुम्हारा पुरुषा- ....

(एक दूतका प्रवेश)

अलबनी–क्या समाचार हैं ?

मरेहो कामने
...... है देखा
और मर ....
मारता हो॥

दूत—महाराज, "ड्यूक कार्नवाल" जो "ग्लास्टर" के दूसरे नेत्रको निकालनेमें उद्यत हुए थे, उनके एक सेवकद्वारा क्षत होकर गतासु होगये हैं ॥

अल्बनी—हैं, ! ग्लास्टरके नेत्र !

दूत—एक सेवक जिसको उन्होंने खिलाया पिलाया था, दयार्द्र हो निज कृपाणको "ड्यूक कार्नवाल" के सन्मुख घुमा करके इस कामका विरोध किया. उस सेवकके ऐसे कामसे संकुपित हो, "कार्नवाल" ने उसपर प्रहार किया और उसको मारकर गिरा दिया परंतु साथमें ऐसी चोट खाई कि थोड़े समयके पश्चात उस सेवकके पीछे २ जाना पड़ा ॥

अल्बनी—हे न्यायकर्त्ता ईश्वर, ऐसी २ संघटनाओंसे विश्वास होता है कि आप ऊपरमें विद्यमान हो; इस मृत्युलोकमें आप हमारे पातकोंका बदला यों शीघ्रही लेते हैं ! परन्तु, अहो, दीन ग्लास्टर ! क्या उसका दूसरा नेत्रभी जाता रहा ? ॥

दूत—दोनों, माहराज, दोनों। लेदेवी, इस पत्रका उत्तर शीघ्र होना चाहिये, यह आपकी वहिनने भेजा है ॥

गानरिल—(आपही आप) यों तो मैं "कार्नवाल"का मरना श्रेयस्कर समझती हूँ परन्तु विधवा होने और मेरे प्रिय "ग्लास्टर" के उसके पास होनेके कारण मेरे सम्पूर्ण विचार नष्ट होसकते हैं और वैसेभी ये समाचार बुरे नहीं हैं—(प्रकट) मैं इसको पढ़कर उत्तर भेजती हूं. (गयी)

अल्बनी—जब ग्लास्टरके नेत्र निकाले गये तब उसका पुत्र
होते है. ?
तुम यह स्वामिनीके साथ यहां आगये थे ॥
चाहिये. देख —वह तो यहां नहीं है।
राक वर्णसंक
जिसके पवि महाराज; मैंने उसको लौटकर जाते हुए मार्गमें
विक्षिप्त बना

अल्वनी–क्या वह इस दुष्कृतिसे जानकार है ॥

दूत–महाराज, भली प्रकार–उसहीने तो निज पिताके विरुद्ध समाचार दिये थे और जान बूझकर इसलिये घरसे चले आये थे कि स्वाधीनताके साथ पिताको दण्ड मिले ॥

अल्वनी–वृद्ध ग्लास्टर–मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तूने महाराजका साथ दिया–मैं अवश्य तेरे नेत्रोंका बदला लूंगा । हे मित्र, यहां आ और तू जो कुछ विशेष समाचार जानता है मुझसे कह ॥ (गमन)

तृतीय दृश्य ।

"डोवर" के निकटवर्त्ती 'फ्रांसनरेशका' डेरा ।

(केन्ट और एक सभ्यका प्रवेश)

केन्ट–क्या तुम "फ्रांस" नरेशके अकस्मात पीछे चले जानेका कारण जानते हो. ?

सभ्य–वह निज साम्राज्यमें कोई त्रुटि छोड़ आये थे जिसका विचार पीछेसे हुआ है इस त्रुटिके रहनेसे उनके राज्यमें इतना भय और हानि होनेका डर था कि उनहींका पीछा जाना अत्यन्त वांछित और आवश्यक था ॥

केन्ट–सेनाको किसके सुपुर्द करगये हैं ?

सभ्य–"फ्रांसदेश" के सेनाध्यक्ष "मांसियर ला फार" के ॥

केन्ट–क्या मेरे पत्रोंको अवलोकन करके राजरानीने कोई दुःख प्रगट नहीं किया ?

सभ्य–महाराज, हां: इन पत्रोंको हाथमें लेकर मेरे। सामने पढ़े थे और इनके कोमल कपोलोंपर प्रायः अश्रु ढलकते थे ऐसा प्रतीत होता था कि इन्होंने दुःखको जीत रक्खा है और वह दुःख किसी बड़े विपक्षीकी नाईं इनपर अपना प्रभाव दिखा चाहता है।

कैन्ट–तो, तो, राजरानीका हृदय उन पत्रोंसे पिगळ गया था ॥

सभ्य–पर क्रोधाग्निसे नहीं। धैर्य और शोक दोनों इस उपायमें प्रवृत्त थे कि कौन उसको अधिक मनोहर बना सके । आपने सूर्याथप और वृष्टि एक साथ होते देखी होगी–उनका मन्दमुसकान और अश्रुपातका एक साथ होना उस दृश्यसे कहीं बढ़कर सुन्दर था । उसके मन्द मुसकानको जो उसके पक्के होठपर क्रीड़ा कर रहा था, नेत्रोके अतिथि अश्रुविन्दुओंका कुछ ज्ञान नहीं था. पश्चात् ये आंसू टपकने लगे मानों कमलपत्रसे जलकण झर ते हैं । सारांश यह है कि यदि सारे मनुष्य इसही तरह दुःखी होते तो दुःख एक महँगी और प्रिय वस्तु होजाती ॥

कैन्ट–क्या उसने प्रगटमें कुछ भी उच्चारण नहीं किया था ?

सभ्य–हां, एक वा दोवार उसने "पिता" इस नामको हवकते हुएलिया था, मानों ऐसा करनेसे उसका हृदय दवा जाता था; फिर तो वह चिल्ला उठी; "वहिनो" अहो निर्लज्ज वहिनो ! अहो कैन्ट ! हे पिता, हे प्यारे पिता ! क्या उस अंधकारमें ! उस रात्रीमें!! दयापर भी अव क्या विश्वास रहा ? " इसके वाद उसके स्वर्गिय नेत्रोंसे पवित्र जल प्रवाहने गिरकर उसके चिल्लानेको रोक दिया और वहांसे उठकर दुःखकी आंचको इकेली सहनेके लिये चली गयी ।

कैन्ट–सत्य है, येही ग्रह हैं, येही हमारे ऊपरके ग्रह हैं जिनके कारण हमारी अवस्थाओंका हेरफेर होता है, नहीं तो एकही दम्पति ऐसी न्यारी २ प्रकारकी सन्तति उत्पन्न नहीं करसकती । क्या तुमने राजरानीसे फिर भी कोई वातचीत की है ?॥

सभ्य–नहीं ॥

कैन्ट–क्या तुम उनसे उनके पतिके चलेजानेके पूर्वही मिले थे?

सभ्य–नहीं, पीछे मिला था ॥

कैन्ट—सुनो, महाशय—वह दीन दुःखित "लियर" इस नगरमें है अच्छी अवस्थामें वह कभी २ अपनी दशाका स्मरण करता है तो अपनी पुत्रीको देखनेके लिये राजी नहीं होता है ॥

सभ्य—महाराज ऐसा क्यों ? ॥

कैन्ट—भारी लज्जाने उसको दबा रखा है—आपको याद होगा कि वह निर्दयी होकर अपनी पुत्रीसे अप्रसन्न होगये थे, और उसके स्वत्वकी भूमिको उन हृदयशून्य पुत्रियोंमें बांट दिया था ऐसी २ बातें उनके मनपर ऐसे विषैले डंक मारती हैं कि भारी लज्जावश हो "कार्डेलिया" को नहीं देखा चाहते हैं ॥

सभ्य—अहो दीन ! दीन !! ॥

कैन्ट—क्या आपने "कार्नवाल" और "अलबनी" की सेनाओंके विषय कुछ २ सुना है ?

सभ्य—हां हां, वे इसही ओर चली आरही हैं ॥

कैन्ट—महाशय मैं आपको प्रार्थना करता हूं कि आप "लियर" नरेशके पास चलें और उनकी सेवामें रहें; किसी मतलबसे मुझको अभीतक कहीं अन्यत्र जाना पड़ता है और इसहीलिये मुझको अभी तक छुपे रहनेकी आवश्यकता है जब मैं भली प्रकार विदित हो जाऊंगा तब मेरे साथ इतनी जान पहिचान रखनेके कारण आपको पछिताना न पड़ेगा कृपाकर मेरे साथ चलिये ॥ (गये)

चतुर्थ दृश्य—डोवरके पास एक डेरा ।

(नक्कारा और झंडेके साथमें कार्डेलियाविद और सैनिकोंका प्रवेश)

कार्डेलिया—हा ! यह वही मेरे पिता थे, वह अभीही लहराते हुए समुद्रकी नाईं विक्षिप्त हुए मिले थे; और २ के गीत गा रहे थे; नाना प्रकारकी झाड़ियोंसे और अन्य हानिकर घासोंसे

जो हमारे प्राणाधार अन्नके साथ २ उगा करते हैं; उनका सिर ढका हुवा था. जावो, अभी सो मनुष्य भेजो और इस प्रचुर घास क्षेत्रमें ढूंढकर उनको हमारे पास लावो (एक अफसर गया.) (वैद्यके प्रति) मेरे पिताकी विनष्ट शक्तियोंको आराम करनेमें मनुष्य बुद्धि क्या २ उपाय कर सकती है? जो उनको आराम करेगा वह मेरा सर्वस्व ग्रहण करे ॥

वैद्य—देवी, उपाय विद्यमान हैं. प्राकृतिकी धाय निद्रा है और इसहीकी उनको बहुत आवश्यकता है. निद्राको उत्तेजित करनेके निमित्त अनेक तेज जड़ी बूटियां हैं जिनके प्रबल गुणोंसे दुःखसंतप्त नेत्र लग जाते हैं ॥

कारडैलिया—हे संपूर्ण गुप्त ओषधियो और वसुंधराके सारे अप्रगट गुणो, मेरे अश्रु जलसे सिंच २ कर प्रगट होजावो! मेरे उत्तम पिताके सहायी बनो और २ उनके संतापोंको हरो! ढूंढो, उनको शीघ्र ढूंढो, उनका शीघ्र अन्वेषण करो—स्यात् निराश प्रकोपद्वारा जो विवेकशक्तिसे शून्य है, उनका जीवन समाप्त होजाय ॥

(एक दूतका प्रवेश.)

दूत—स्वामिनी, नये समाचार ये हैं कि "ब्रिटिश" सेना सुसज्जित होकर इधर आरही है—

कारडैलिया—यह बात पहिलेसे मालुम है. हमारी सेना उनके आनेकी आशा लगाए खडी है. प्यारे पिता, मैं आपहीके कार्य्यके लिये यहां प्रवृत्तहूं. इसही कारणसे "फ्रांस" नरेशने मेरे रुदन और अश्रुओं पर करुणाकी है हमारी सेना किसी भूमि लोभसे नहीं, वरण भक्ति प्रिय भक्ति और प्यारे वृद्ध पिताके सत्वोंको वापिस करनेके लिये उत्तेजित है ईस्वर करे मैं शीघ्र उनके दर्शन करूं और उनसे बात चीत करूं ॥ (गये)

पंचमदृश्य-ग्लास्टरकी दुर्ग.

(रीगन और आस्वाल्डका प्रवेश)

रीगन—परन्तु क्या मेरे बहनोईकी सेना सुसज्जित होगई है!

आस्वाल्ड—हां, महाराज.

रीगन—और वह स्वयं वहां उपस्थित है?

आस्वाल्ड—हां महाराज, परन्तु बड़ी कठिनाईसे उपस्थित हुए हैं; आपकी बहिन अधिक उत्तम सैनिक हैं.

रीगन—क्या "एडमन्ड" महाराजने घरपर तुम्हारे स्वामीके साथ कोई बात चीत नहीं की थी?

आस्वाल्ड—महाराज नहीं॥

रीगन—(मुसक्याकर) इस पत्रमें जो मेरी बहिनने उनके पास भेजा है, क्या लिखा होगा?

आस्वाल्ड—देवी मुझे ज्ञात नहीं है.

रीगन—धर्मकी शपथ है—वे यहांसे किसी गहनकार्यके लिये भेजे जा चुके हैं. ग्लास्टरके नेत्रोंको निकालनेके पश्चात् उसे जीता रखना बड़ी भूल हुई है. जहां कहीं वह जाता है, सारे मनुष्योंके हृदयोंको हमारे विरुद्ध बना देता है. मैं अनुमान करती हूं कि "एडमन्ड" उसके दुःखोंपर करुणाकरके उसके जीवनको समाप्त करने गया होगा: इसके उपरान्त शत्रुके बलाबलका भी अनुमान करेगा॥

आस्वाल्ड—तो देवी, मुझे अवश्य इस पत्रके साथ उनके पीछे जाना योग्य है.

रीगन—हमारी सेना कलके दिवस यहांसे रवाना होगी. तुम हमारेही साथ ठहर जाओ क्योंकि राहमें आजकल हानि होजानेका बड़ा भय है॥

आस्वाल्ड--हे महारानी, मैं नहीं ठहर सकता हूं क्योंकि स्वामिनीने इस कार्यको शीघ्रही साधन करनेके लिये मुझे धर्मकी शपथ करदी है.

रीगन--'एडमन्ड' को पत्र भेजनेकी उसको क्या पड़ी है? क्या तुम जवानी उसके अभिप्रायोंको नहीं कर सकते हो? स्यात् इसमें कुछ लिखा होगा-परन्तु क्या है इसका मुझको ज्ञान नहीं है. देखो मैं तुमसे बहुत स्नेह रखूंगी, तुम मुझे इस पत्रको खोलकर देख लेने दे.

आस्वाल्ड--देवी, इसकी अपेक्षा, मैं-

रीगन--मुझको विदित है कि तुम्हारी स्वामिनी अपने पतिमें प्रेम नहीं रखती है; यह बात निश्चय है क्योंकि थोड़े दिन पहिले जब वह यहांपर आई थी तब उसने एडमन्डपर भोंह कटाक्ष किये थे और तीखे २ नेत्र चलाये थे। मुझे ज्ञात है कि तुम उसके विश्वासपात्र हो॥

आस्वाल्ड--देवी, क्या मैं हूं?

रीगन--मैं बड़ी समझके साथ कह रही हूँ. तुम उसके विश्वासपात्र हो, यह बात मुझसे छिपी नहीं है. इसलिये मेरी प्रार्थना है कि तुम इस बातको ध्यानसे सुन लो; मेरे पति मर चुके हैं; एडमन्ड ओर मेरे बीच बातचीत हो गयी है. और यह अधिक समीचीन होगा कि उसका पाणिग्रहण मेरे साथ हो. और भी बातें तुमको मालुम हो जावेगी॥ जब तुम्हारी एडमन्डके साथ भेट हो तो उसको मेरे पास आनेको कह देना अपनी स्वामिनीको ये सब बातें कहते समय कृपापूर्वक उसको यह सलाह देना कि वह अपनी बुद्धिको ठिकाने रखे. अच्छा तो तुम जावो और यदि उस नेत्रहीन वंचकका कुछ पता मिले तो जो उसको टुकड़े २ करेगा वह पारितोषकका भागी होगा॥

आस्वाल्ड—देवी! मैं चाहता हूं कि मेरी उसके साथ भेंट होवे, तब मैं दिखला सकूंगा कि मैं किस समाजका अनुयायी हूं.

रीगन—तुम्हारी स्वस्ति हो ॥ (गये)

छठा दृश्य—डोवरके निकटवर्त्ती क्षेत्र.

(ग्लास्टर और ग्रामीणके वेशमें एडमन्ड आते हैं)

ग्लास्टर—हम कब उस पर्वतकी चोटीपर पहुंच जावेंगे?

एडगर—आप अब चढ़ तो रहेही हैं. देखिये अपनेको कितना परिश्रम होरहा है.

ग्लास्टर—मुझको तो पृथ्वी समतल प्रतीत होती है.

एडगर—ऐसी ढलाउ है कि देखनेसे भय आता है. क्या आप समुद्रकी तरङ्गोंको श्रवण करते हैं? सुनिये.

ग्लास्टर—निश्चय-मुझको सुनाई नहीं देती हैं.

एडगर—तो आपकी अन्य इन्द्रियांभी नेत्रोंके आतपसे अशक्त हुई प्रतीत होती हैं.

ग्लास्टर—स्यात, ऐसाही हुवा है. मुझको तेरी आवाज बदली हुई मालूम होती है और तू पहिलेकी अपेक्षा उत्तम भाषा और विषय प्रकाश कररहा है.

एडगर—यह तो आपका भ्रम है. मेरा परिवर्त्तन तो वस्त्रोंके सिवाय दूसरी बातमें नहीं हुवा है ॥

ग्लास्टर—मुझको तो तुम कोई प्रतिष्ठित पुरुष मालूम होतेहो ॥

एडगर—सुनिए, महाशय. यह वही स्थान है. यहांपर ठहरे रहिये. अहो, इतनी नीची दृष्टि फेंकनेसे कैसा भय और चक्कर आती है. काक और सारस जो बीच हवामें उड़रहे हैं तितुरके बराबर भी नहीं मालूम होते हैं. इस पर्वतके आधीदूर लटक एक मनुष्य "सम्फायर" शाकको बेचनेके लिये इकट्ठा कररहा है. अहो, यह

व्यापार भी कैसा भयावना है. वह अपने मस्तकसे जियादा बड़ा नहीं मालूम होता है. धीमर जो तटपर भ्रमण कररहे हैं; चूहेके बराबर दीखते हैं. और वह देखो, सामनेमें वह किनारे लगी हुई ऊंची २ नौका दौने जैसी मालूम होती है और उसका दौना, जिसको एक तुम्बा कह सकते हो नेत्रोंसे तो भलीप्रकार दीख भी नहीं सकता है. थर्राती हुई तरंगे जो असंख्य तटपर पड़े हुए पत्थरोंपर चीख रही हैं इतने ऊंचेपर नहीं सुनाई दे सकती. मैं अब अधिक नहीं देखा चाहता, स्यात् मुझे भौंल आजावे और मेरे नेत्र चकाचौंध होजानेके कारण, मैं सीधा लुड़कता हुवा चला जाऊं.

ग्लास्टर—अपने स्थानमें मुझको खड़ा करदो ॥

एडगर—मुझे आपके हाथको थांभने दीजिये. आप इस समय अन्तिमकूटसे एक बालिस्त इधर हैं. यदि सारे संसारकी भी प्राप्ति हो तो भी मैं यहांसे सीधा ऊंचा न उछलूंगा ।

ग्लास्टर—अब मेरा हाथ छोड़दे मित्र पहले यह डिबिया ले, इसमें एकरत्न है जो तेरे समान दरिद्री पुरुषकी सेवाका पूरा मूल्य है. ईश्वर तुझको सौभाग्यवान बनावे. तू दूर जाकर मुझको स्वस्ति कह ॥

एडगर—(कुछ दूर हटकर) अहो प्रियमहाशय, आपकी स्वस्ति रहे॥

ग्लास्टर—बहुत प्रसन्न होकर स्वीकरता हूं ॥

एडगर—(आपहीआप) मैं इनकी निराश अवस्थाके साथमें यह जो कुछ कररहा हूं; सब इनकी निराशताको दूर करनेके लियेही करता हूं ॥

ग्लास्टर—(जानु होकर) हे परमेश्वर ! आपकी दृष्टिके नीचे मैं इस संसारको त्यागकर शांतिपूर्वक अपने घोर दुःखोंको दूर करता हूं. यदि मैं, आपकी अलंघ्य रुचिसे असंतुष्ट न होकर

इस दुःखको अधिक कालपर्य्यन्त सहसकता तो मेरे निंद्रनीय जीवनका गुल स्वयं जल बलकर भस्म होजाता है प्रभु, यदि एडगर जीता हो तो उसकी रक्षा कीजिये. अच्छा भाई, तेरी स्वस्ति हो ॥ [आगेकी ओर गिरता है.]

एडगर—चलही दिये, महाराज; स्वस्ति ॥ (आपहीआप) मुझको निश्चय नहीं है कि जब प्राणधन स्वयं लूटजाना चाहते हों तब "मैं मरगया" ऐसा मनमें भरोसा होनेसे लूट सकते हैं वा नहीं यदि यह उस स्थानपर हुए होते, कि जहांपर इन्होंने अपना होना विचार रखा था सो इसही वक्त पंचतत्वको प्राप्त होगये होते. (प्रगट) जीते हो वा मरगये, महाराज ! महाराज, महाराज. बोलिये महाराज ॥ (आपहीआप) स्यात, मरही गये हों परन्तु नहीं वे हिलने लगे हैं. आवाज बदल करके प्रगट महाराज ! आप कौन हैं ?

ग्लास्टर—हट परेहो और मुझे मरने दे ॥

एडगर—यदि आप मकडीके जाले, पक्षीके पंख या हवाके अतिरिक्त कोई दूसरी वस्तु हुए होते तो इतने ऊंचेसे गिरकर आप अंडेकी नाईं खण्ड खण्ड होजाते परन्तु आप तो भारीभरकम बने हैं तो भी आप स्वास लेरहे हैं; न कोई रुधिर बहता है, आप बोलरहे हैं और जैसे के तैसे बने हुए हैं. दस मस्तूल एक दूसरेके ऊपर रखे जावें तो भी इतना ऊंचा ऊंचा नहीं बनासकते जितने ऊंचेसे आप सीधे गिरे हैं, आपका बचजाना दैविक है. आप एक बार फिर भी तो बोलिये ॥

ग्लास्टर—परन्तु मैं गिराहूं वा नहीं ?

एडगर—इस खड़िया पर्वतकी भयंकर चोटीसे आप गिरे हैं सिर उठाकर जरा देखिये तो सही. इतने नीचेसे कठोर कंठवाला लवा भी नहीं दीखसकता है न उसका चिल चिलाहट सुनाई देसकता है आप जरा ऊपरको तो दृष्टि फैलावें ॥

ग्लास्टर–परन्तु मेरे नेत्र नहीं हैं अहो, क्या दुखी मनुष्य अपने दुःखोंको मृत्युद्वारा मिटानेके लाभसेभी वर्जित है. यदि दुखी मनुष्य इसरीतिसे अन्यायियोंके क्रोधसे बचसकता और उनकी अनिष्टरुचियोंको हताश करसकता तो भी कुछ सुखकी बात होती ॥

एडगर–लाइये, मुझे आपका हाथ थांभने दीजिये. खडे हूजि-ये। ठीक। आप कैसे खडे होसके? आपको पैरोंका अनुभव है, वा नहीं? आप तो खडे रहसकते हैं!

ग्लास्टर–(खडा होकर) भलीप्रकार, समीचीनतया ॥

एडगर–बडे आश्चर्यकी बात है. उस पहाड़की चोटीपर वह कौन था जो आपसे विदा हुवा था?

ग्लास्टर–एकदीन और हतभाग्य भिखमंगा ॥

एडगर–देखो, जब मैं यहां नीचे खड़ा था तब मुझको ऐसा प्रतीत होता था कि उसके नेत्र दो पूर्णचन्द्र थे और उसके हजार नाक थे और उसके सींग वक्र और समुद्रकी तरङ्गोंकी नाईं लह-राते थे. वह अवश्य कोई देव था. इसलिये, हे सुखी बाबा! तू यह समझले कि उन निर्दोषी देवों ने; जो मनुष्योंके असंभव कर्मोंको संभव करा २ कर अपनी पूजा करते हैं–तुझे बचाया है ॥

ग्लास्टर–अब मुझको भी स्मरण होता है. तो अबसे मैं अपनी विपत्तियोंको तबतक सहता रहूंगा जबतक ये विपत्तियां स्वयं चिल्ला २ कर मुझको मरनेकी सूचना न देंगी. जिसके लिये तुम कह रहे हो उसको तो मैंने मनुष्य समझा था प्रायः वह यों पुकारा कर-ताथा "भूत भूत" उसहीने मुझको उस स्थानतक पहुँचाया था ॥

एडगर–संतोष और धैर्य्य धारण कीजिये। परंतु यह कौन आरहा है?

(वनपुष्पोंसे चित्रित लियरका प्रवेश.)

(आपहीआप) लियरनरेशके सुरक्षित नेत्र उनको मेरे पिताकी तरह कदापि संतोषित न बनासकेंगे ॥

लियर—नहीं, नहीं, सिक्का चलानेके कारण वे मेरेपर हाथ नहीं उठासकेंगे क्योंकि मैं स्वयंही राजा हूं ॥

एडगर—अहो दुःख ! यह कैसा हृदयको छेदन करनेवाला दृश्य है ॥

लियर—इस विषयमें प्राकृतिकनियम सामाजिकनियमोंसे एक हाथ ऊपर रहते हैं ॥ यह तुम्हारी अग्रिम वेतन लो ॥ देखो, वह मनुष्य शहवेकी नाईं कमान खेंचता है ॥ अच्छा, [illegible] गजको मँगावो ॥ देखो, यह देखो यह मूषक है ! चुप, चुप, यह जला भुना पनीरका टुकड़ाही काफी होगा यह लो मेरा युद्ध प्रतिज्ञासूचक मोजा, मैं इसबातकी सच्चाईको राक्षसपर भी युद्ध करके दिखा सकूंगा । लावो, वह मटिया रंगका फरसा लावो । अहा वह पक्षीतो खूब उडरहा है; वाह ! वाह ! निशानेमें, निशानेमें; आश्चर्य ! संकेत बतावो ॥

एडगर—"स्वीट मारजोरम" ॥

लियर—खिसको ॥

ग्लास्टर—मैं इस शब्दध्वनिसे परिचित हूं ॥

लियर—हा, हा, गानेरिल और श्वेतदाढीवाली ! उन्होंने मेरी कैसी २ प्रशंसा की है कि मैं जवान होनेके पहिलेही वृद्ध होगया हूं, हांमें हां और नांमें नां मिलाते रहे परन्तु हां, हां और नां, नां करके मेरे विश्वासपात्र बनना कोई भली बात भी. जब मेहने मुझे भिगोदिया और पवनसे दांत कटकटाने लगे, जब मेघराज मेरी आज्ञासे शान्त न हुए तब मैंने उनको पहिचान लिया । यह क्या बात है कि वे अपने वचनपर पक्के नहीं रहते.

उन्होंने मुझको सब कुछ बतलाया था; अब देखलो, यह उनकी झूंट है क्योंकि मैं ज्वरपीडासे नहीं बचसका हूं ॥

ग्लास्टर-इस अद्भुत शब्दध्वनिकी स्मृति मुझे भलीप्रकार है क्या यह भूपति नहीं हैं ॥

लियर-हां, सब तरहपर भूपतिहूं जब मैं नेत्र बदल कर देखता हूं तो मेरी प्रजा कांपने लगती है. जाओ मैं उस मनुष्यके प्राणदण्ड कोक्षमा करता हूं. तेरा क्या अपराध था ? व्यभिचार ? तो तू नहीं मारा जावेगा व्यभिचारके कारण वध ! नहीं, कभी नहीं ॥

ग्लास्टर-मुझे यह हाथ चूंमने दीजिये ॥

लियर-इसको साफ करलेने दो यह अमर नहीं है ॥

ग्लास्टर-अहो खिन्न २ हुए भाग्यके ढले ! क्या यह जगत यों क्षय होकर निर्जन होगा आप क्या मुझे पहिचानते हैं, महाराज ?

लियर-तेरे नेत्र तो मुझे भलीप्रकार याद हैं. क्या तू मेरी ओर तिरछी चितवन करताहै ? अरे अंधे कामदेव; तू चाहे जितने उपायकर मैं कभी तुझसे प्रेम न करूंगा, तू यह युद्धनिमंत्रण पत्र पढ़; तनिक इसकी लिपि तो देख ॥

ग्लास्टर-यदि आपके अक्षरें मरीचिमाली होते तो भी मैं इनको नहीं देखसकता.

एडगर-इसवातपर (लियरके विक्षिप्त होने) मैं किसीके कहनेसे विश्वास न करता तथापि यह वात योंही है और इसे देख २ कर मेरा हृदय फटा जाता है.

लियर-पढ़, पढ़ ॥

ग्लास्टर-क्या नेत्रोंके कोएसे ?

लियर-हं, हं, क्या तू यहां मेरे साथ है ? क्या तेरे माथेमें नेत्र और तेरे थैलेमें धन नहीं है ? तेरे नेत्र आपत्तिमें आगये और

द्रव्य ओछे मनुष्योंके हाथ पड़गया है. तो भी क्या तू इस संसारको नहीं देखता है ?

ग्लास्टर--हां, स्पर्शेन्द्रीद्वारा तो अवश्य देखरहा हूं.

लियर्--क्या पागल होगया है? सुन, आँखोंके बिनाभी मनुष्य इस संसारको देखसकता है. कानोंसे देख, देख. तेरे सामने वह न्यायक उस तस्करको कैसी तरहसे घुरकरहा है. देख अपने कानोंसे देख अब एकको दूसरेके स्थानमें खडाकरके बतला कि न्यायक कहांहै और तस्कर कहांहै. क्या तूने कभी खेतीहारके कुत्तेको भिखमँगेकी तरफ भौंकते देखा है ?

ग्लास्टर--महाराज, हां ॥

लियर्--और क्या उस भिक्षुकको उस कुत्तेसे डरकर भागते भी देखा है ? देखो, अधिकारका प्रभाव. कि अपने कामपर बैठे हुए कुत्तेकी आज्ञा भी माननी पडती है ॥ वैरी धोखा देनेवाले-को फांसी देता है ॥ फटे टूटे चिथडोंमें छोटे २ अपराध नहीं छुप सकते परन्तु चोगे और ऊनी अंगरखोंमें महापाप भी छुपजाता है, यदि पापको सोनेके पत्तरसे मढ दो तो न्यायका तीक्ष्ण बर्छा इसको छेद नहीं सकेगा; परन्तु यदि उसको पापको फटे टूटे चिथडोंमें लिपटाओगे तो बावने मनुष्यका तिनका भी उसमें पार हो जावेगा. कोई किसीको दुःख सुख नहीं देता है "कोई नहीं, जो दुख देते हैं, देवकर्म अकस्मात्" मैं तेरा उत्तरदाता बना हूं और हे मित्र ! मेरी आज्ञासे अपने शत्रुओंका मुंह बन्द करदे. कांचके नेत्र लगाकर क्षुद्र राजनीतिज्ञ कीनांई उन २ बातोंको देखता हुआ प्रतीत हो जिन्हें तू नहीं देखता है ठीक. ठीक. ठीक. ठीक. इन जूतोंको दूर करो, बडे कडे होगये हैं. ठीक ॥

एडगर्--अहो, कैसी तरहपर बुद्धि और पागलपन मिले हुए हैं ! पागलपनकी बातोंके साथमें बुद्धि और विवेककी बातें !

लियर्--यदि तू मेरे सौभाग्यको नष्ट हुआ देखना चाहता है

तो मेरे नेत्रोंको ले ले मैं तुझे भलीप्रकार जानता हूं तेरा नाम "ग्लास्टर" है तुझको उचित है कि धैर्य्य रखे हम इस संसारमें रुदन करते हुए आए हैं. क्या तुझे याद है कि जब तूने प्रथमही इस हवाको सांसमें ली थी तब तू रोया था औ चिल्लाया था, सुन मैं तुझे शिक्षा देता हूं कि—

ग्लास्टर—अहो दुःख ! ॥

लियर—जब हम जन्म लेते हैं तब हम यह विचार करके रोते हैं कि हम मूर्खोंकी इस बडी नाट्यशालामें आगये। क्याही उत्तम लकडीका टुकडा है। घोडोंके नमदेकी नाल बांधना बडी चतुराईकी बात है, अच्छा मैं इसकी जांच करूंगा और जब इन दामादोंके पास पहुँच जाऊंगा तो, मारो, मारो, मारो, मारो. मारो, मारो, ॥

(एक सभ्य थोड़े अनुचरोंके साथमें आता है)

सभा—हाय, ये तो यहांपर हैं (सैनकोंसे) इनको उठालेना- (लियरके पास जाकर) महाराज, आपकी प्रियपुत्रीने (सेवक लियरको उठाया चाहते हैं)

लियर—क्या कुछ भी बचावकी सुरत नहीं है। क्या मैं बंधुवा हूं ! हां, मैं भाग्यका एक स्वाभाविक खिलोना तो अवश्य हूं। मेरे साथ अच्छा वर्ताव करो यदि तुम मुझे छोड दोगे तो. तुझको धन मिलेगा। मेरे लिये कोई चिकित्सक भी है ? मेरी बुद्धि क्षीण होगयी है.

सभ्य—आपके लिये सब वस्तु प्रस्तुत होजावेंगी ॥

लियर—क्या कोई मेरा सहायक नहीं है ? क्या मैं इकेलाही हूं। तब तो मनुष्य शुष्क मिट्टीमें आंसु बहा २ कर क्षारकी नाई पिगल जावेगा ॥

सभ्य—महाराज—

लियर–मैं टुकहावेगो नाई वीरताकरके मरूंगा. मैं मन्तताप-न करूंगा. सुनो, सुनो, तुमलोग यह भी जानते हो कि नहीं कि मैं राजा हूं ॥

सभ्य--आप राजाधिराजहैं और हम आपके आज्ञाकारी भृत्य हैं

लियर–तो, तो, कुछ आशा है परन्तु यदि तुम इस आशाको तोडना चाहते हो तो भागे विना कभी न तोड सकोगे ॥ सा, सा, सा, सा ॥ [भागता हुआ गया–सेवक पीछे २ जाते हैं.]

सभ्य–अहो. अत्यन्त क्षुद्रनीचको भी इसदशामें देखनेसे करुणा उत्पन्नहोनी चाहिये फिर राजाके विषयतो क्या कहना चाहिये–हे नृपाळ आपकी एकपुत्री अब भी विद्यमान है। वह प्रकृति को इस घोर कलंकसे छुटकारा देती है जो इनदोनों पुत्रियोंने इसके लगादिया है. ॥ (जाना चाहता है)

एडगर–हे सभ्य महाराज–आपकी जय हो ॥

सभ्य–(ठहरकर) महाशय, जल्दी करो–आप क्या चाहते हैं ?

एडगर–क्या आपने शीघ्रही संग्राम होनेकी बात कोई सुनी है।

सभ्य--शीघ्र संग्रामका होना निश्चित है और सबको मालूम है. जो मनुष्य सुन सकता है उसने अवश्य यह बात सुनली होगी.

एडगर–कृपाकरके यह तो बतलाइये, वह फ़ौज कितनी दूरपर है ?

सभ्य--बहुत समीप है और बड़ी तेजीसे इधर आरही है.प्रहर में उसके झंडेको देखनेकी आशा की जाती है.

एडगर–महाराज, मैं आपको धन्यवाद देता हूं. बस यही पूछना था.

सभ्य--यद्यपि महाराणी किसी विशेष कारणसे यहांपरआई हैं तो भी उनकी सेना चली आरही है.

एडगर--महाराज मैं आपका अनुग्रहीत हूं. (सभ्यगया)

ग्लास्टर--हे दयालु देवो अब शीघ्रही मेरे प्राणहरण करो-ऐसा नहो कि आपकी आज्ञाके पूर्वही मेरा पापीमन आत्मघात करने केलिये मुझको ललचावे ॥

एडगर--बाबा तुम ईश्वरकी स्तुति करो ॥

ग्लास्टर--अच्छा महाशय, बताओ तो तुम कौन हो ॥

एडगर--एक अत्यन्त दीन पुरुष जो दुर्भाग्यकी फट्कारसे अत्यन्त शोचनीय होगया है और जो स्वयं दुःख भोग २ कर दूसरों की सहायता करता है ॥ मुझे तुम्हारा हाथ थामने दोतो मैं तुमको एक ऐसे स्थानमें लेचलूं जहां तुम्हारी रक्षा रहे.

ग्लास्टर--मैं तुम्हारा बहुत अनुग्रहीत हूं. ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे.

(आस्वाल्डका प्रवेश)

आस्वाल्ड--अहा सूचना दी हुई पारितोषक ! बड़े आनंदकी बात है ! अरे ग्लास्टर, तेरा यह चक्षु विहीन मस्तक मेरे सौभाग्य की वृद्धिके लिये बनाया गया था । अरे वंचक ईश्वर कीस्तुति करले क्योंकि वह कृपाण जो तेरे सिरको धड़से जुदा करेगा, निकल चुकाहै.

ग्लास्टर--(एडगरको) हे सुहृद, अब निजबलद्वारा मेरी रक्षाकर. [एडगर बीचमें पड़ता है]

आस्वाल्ड--क्योंरे, साहसी खेतीहार ! तू क्यों ऐसे वंचकको सहायता करनेका साहस करता है जिसके पकड़नेके लिये सूचना दी जाचुकी है ? हट, दूर हो, स्यात् उसके दुर्भाग्यकी छूत तेरे भी लग जावे. इसका हाथ छोड़ दे ॥

एडगर-काल, महाराज, मैं तो थांनै कोंनि छोडूं. (विदेशीकी बोली बनाकर)

आस्वाल्ड-अरे गोळे, छोड़ दे, नहीं तो तू मारा जावेगा ॥

एडगर-महाराज, थे थांके रस्ते जावो और बिचारा किस्सा णने जावाद्यो. जो मैं जीव जावा सूं डरतो होतो तो एक दिन भी जीवतो कोंनै रहतो. ई बिचारानै जावा द्यो-मैं आपनैं पैल्यांही सूं कहद्यूं छूं अक आप दूरा रो, नहीं तो दीखसी अकथांकी तरवार करड़ी छ अक म्हारो डंडो करडो छ मैं तो थांनै सांची २ कहदीनी छ.

आस्वाल्ड-अरे गोबरके ढेर, चल परे हट.

एडगर-महाराज, अवार, थांका दांत निकाळ म्हाकं छूं मैं थांकी तरवारने कोनै जाणूं छो. (युद्ध और आस्वाल्डका पतन

आस्वाल्ड-अरे गोळे, तूने तो मुझको मारदिया नीच मेरा यह धन ले. (एक थैली देता है) मेरे शरीरको गाड़ देना और जो पत्र मेरे पाकटमें हैं उनको "एडमन्ड, अर्ल ग्लास्टर" को जा देना वह तुझको अंगरेजी सेनामें मिलेगा. हाय! कैसे बुरे अवसरपर मरता हूं (मरता है)

एडगर-मैं तुझे भलीप्रकार जानता हूं: तू एक बड़ा नीच सेवक है जो निज स्वामिनीकी आज्ञाके बुरेसे बुरे कामको करनेमें भी नहीं हिचकता था ॥

ग्लास्टर-क्या वह मरगया है?

एडगर-बाबा, तुम यहां बैठो और आराम करो. मैं इसके पाकटको देखता हूं: जिन पत्रोंके विषयमें इसने कहा है: स्यात् वे मेरे सहायी हों. वह मरचुका है मुझे केवल यहही शोक है कि मैं ही इसका वध करनेवाला हुवा देखूं (पढ़ता) हाथमें लेकर सुशीलमोम: मुझे इसपत्रको खोलनेकी आज्ञा दो कि सामाजिक

नियम मुझे दूषित न करें हमारे शत्रुओंके मनकी बातोंको जाननेके लिये हम उनके हृदयको काटते हैं तो फिर उनके पत्रोंको फाड़कर पढ़ना कोई अधिक अपराध नहीं समझा जासकता है॥ (आपहीआप पढ़ता है) अपनी परस्पर प्रतिज्ञाओंकी स्मृति करो. उसको वध करदेनेके तुमको कई अवसर मिलेंगे. यदि तुम्हारे मनकी कमी न होतो अवसर और स्थानकी कोई कमी न रहेगी. यदि वह विजयी होकर पीछा आवेगा तो क्या फलसिद्धि हुई ! फिर तो मैंही उसकी कैदमें पडूंगी और मुझे उसके पर्यंङ्क पर जानाहोगा—कृपाकर उसके आलिङ्गनकी निंदनीय गर्मीसे मुझे छुडावो और अपने परिश्रम के एवजमें खाली जगहके मालिक बनो तुह्मारी भार्य्या—(मैं योंही कहना चाहती हूं)

प्रियदासी—

"गानरिल"॥अहो स्त्रियोंके चरित्र भी कैसे विचित्र हैं ! अपने धार्मिकपतिके प्राणघातका उपाय और बदलेमें मेरे भाईको ग्रहण करना !! (मृतकआस्वाल्डकी ओर देखकर) अरे तू हत्यारे व्यभिचारियोंके अपवित्रदूत—मैं तुझे यहां इस रेतमें गाडता हूं औरउचित समयपर उस 'ड्यूक' केपास जाकर यह घृणा योग्य पत्र दिखाऊंगा जिसे मारनेको ये उपाय घडे गये हैं-तेरे इस कार्य्य और इस मृत्यु के समाचार उसके लिये लाभदायी होंगे॥

ग्लास्टर—राजाजी तो विक्षिप्त होगये हैं मेरी विवेकशक्ति भी कैसी कठोर है कि इन भारी दुःखोंका स्मरण रहता है. मैं विक्षिप्त होजाता तो समीचीन होता; ऐसा होनेसे :स्मरणशक्ति विवेकशक्तिसे दूर होजाती और मैं अपने भारी दुःखोंको भूलजाता.

एडगर—बाबा, मुझे तुम्हारा हाथ थामने दीजिये (दूरपर नक्कारेका शब्द सुनकर) बहुत दूरपर मुझको नक्कारेकी धुनि सुनाई देती है आवो आवो मैं तुमको किसी मित्रके सुपुर्द करदूंगा-, गये-)

सातवाँ दृश्य-

(फ्रांसवालोंके तंबूमें एक डेरा-लियर एक पर्य्यङ्कपर सोरहे हैं-मधुर २ संगीत होरहा है-सभ्य और भृत्यसमुदाय पासमें खडे हैं)

(कारडेलिया, केन्ट और वैद्यका प्रवेश.)

कारडेलिया-हे मेरे सर्वोत्तम केन्ट ! मैं किस प्रकार आप की भलाईसे उऋण होऊंगी जो आपने मेरे साथ की है ? मेरी आयु बहुत थोडी है और मुझे कोई योग्य उपाय नहीं सूझता है ॥

केन्ट-महारानी! सेवाको स्वीकार लेनाही बडी भारी पारितोषक है जो समाचार मैंने आपके सामने प्रगट किये हैं सब सही २ और ठीक ठीक है ॥

कारडेलिया-अच्छा तो उत्तम वस्त्र तो पहिन लो। ये निकृष्ट उस दुःखदायी समयकी स्मृति दिलाते हैं इस लिये मांगती हूं कि इनको दूर करो.

केन्ट-राजरानी ! क्षमा करो इसही समय मेरा परिचय होजाने से मेरे बान्धे हुए विचार पूर्ण न होंगे इसलिये मैं आपसे यह वर दान माँगता हूं कि जबतक अवसर न आवे और मैं उचित न समझं तबतक आप मुझे जानते हुए भी अनजान बने रहें ॥

कारडेलिया-तथास्तु वैद्यजी आप महाराज कैसे हैं ?

वैद्य-अभीतक सोरहे हैं ॥

कारडेलिया-(सिर आकाशकी ओर करके) हे दयालु देवो ! मेरे पिताकी बिगडी हुई दशा और इनके स्वभावको सुधारिये जिनको उन पुत्रियोंने किस २ और पेटने बनादिये हैं.

वैद्य--यदि आपकी मरजी हो तो हम महाराजको जगावें; वे बहुत कालसे सोरहे हैं ॥

कारडैलिया--अपनी विद्या और विचारके अनुसार कार्य्य करो (सभ्यको) क्या उनको नवीन वस्त्र पहना दिये गये हैं ?

सभ्य--महाराज, हां--जब वे गहरी नींदमें थे तब हमने उनको उत्तम पोशाक पहना दी थी ॥

वैद्य--महारानी, जब हम इनको जगावें. आप समीपही रहें. मुझे इनके स्वभावके सुधर जानेमें कोई संशय नहीं है.

कारडैलिया--बहुत ठीक ॥

वैद्य--कृपाकर निकट आवें--(संगीतवालोंको) संगीत जोरसे होवे

(लियरकी ओर देखकर)

कारडैलिया--हे मेरे प्यारे पिता ! ईश्वर अनुकूल होकर मेरे होठपर वह ओषधी लगादे जो आपको आरोग्य बनासके और आपके उन भयंकर आघातोंको दूर करे जो मेरी दोनों बहिनों ने आपके बडप्पनमें लगायें हैं ! ॥

कैन्ट--दयालु और प्रिये महारानी ॥

कारडैलिया--यदि आप उनके पिता न होते तो भी उनको उचित था कि आपपर करुणा करतीं. क्या यह स्वरूप वैसी विकराल पवनके सामने किए जानेके योग्य था और यह शरीर भयंकर वज्रपातोंके नीचे खडा किया जाना चाहिये था ? अहो एक छणछणी टोपीके साथ दीन हताशकी नाई वहां जागते हुए खडे रहना ? मेरे वैरीका कुत्ता भी यदि उस रात्रिमें मेरे घरके बाहर खडा होता तो अवश्य अन्तरमें लिया जाता और मेरे प्यारे पिता, क्या क्या आप अनाथकी नाई एक टूटी फूटी कुटिमें, सूकरों और वनचारी मनुष्योंके साथमें रहे थे ? मुझको आश्चर्य यहही है कि

आपके सुकुमार प्राण तुरंत ही प्रयाण क्यों न करगये ॥ देखो तो महाराज जागना चाहते हैं इनसे कुछ बोलो ॥

वैद्य--आपही बातें करें, यह समीचीन होगा ॥

कारडैलिया--(लियरको) मेरे महाराज कैसे हैं? श्रीमानोंका स्वास्थ्य कैसा है ?

लियर--तुम मुझे शवागारसे उठाकर मेरी बड़ी हानि करती हो, तुम तो सुखी हो परन्तु मैं अग्निचक्रसे बंधरहा हूं और मेरे ही आँसू गले हुए रांगकी नाईं मुझे जलाते हैं.

कारडैलिया--महाराज क्या मुझे भी जानते हैं ?

लियर--हां, मैं जानता हूं तुम अप्सरा हो: तुम्हारी मृत्यु कब हुई थी ?

कारडैलिया--(वद्यसे) अभीतक सुरता नहीं है ॥

वैद्य--महाराज अभीतक भली प्रकार नहीं जाग चुके हैं थोड़े समयतक इन्हें न छेड़िये ॥

लियर--मैं कल कहां गया था ? अब कहां हूं ? हैं ! दिनका प्रकाश ? मुझे बड़े २ संशय है । अहो,किसी दुखियाको इस हालतमें देखकर मैं करुणाका मारा मरजाता ॥ मैं क्या कहूं ! शपथ लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है कि ये मेरे हाथ हैं भला देखूं तो सही (एक सूई चुभोकर) इस सुईसे तो मुझे पीड़ा होती है मैं चाहता हूं कि कोई मुझे निश्चय करा दे कि यह मेरी क्या दशा हुई है.

कारडैलिया--महाराज! ऊपरको दृष्टि कीजिये और आशीष पूर्वक निज करकमलोंको मेरे माथेपर रखिये: नहीं महाराज, आपको घुटने नहीं टेकना चाहिये ॥

लियर--कृपाकर मेरी हँसी मतकरो ! मैं एक बड़ा निर्बुद्धि मतिहीन और वृद्ध आदमी हूं. मेरी उमर ८० बरससे अधिक है

न इससे एक पुल कम है और न अधिक है और मैं सत्य २ कहताहूं कि मेरी बुद्धि ठिकाने नहीं है. मुझको ऐसा याद पड़ता है कि मैंने तुमको और इस मनुष्यको कभी देखा है परन्तु मुझे संशय है क्योंकि मुझे यह नहीं मालूम है कि मैं इस समय किस स्थानमें हूं और बहुत कुछ स्मरण करता हूं तो भी विचार नहीं बँधता है कि ये वस्त्र कहांसे और कैसे आये। न मैं यह जानताहूं कि गत रात्रिको मैं कहांपर था; देखो, मेरी हँसी मत करो; मैं आदमी हूं और मुझे सुरता होती है कि यह महारानी मेरी पुत्री कारडैलिया है॥

कारडैलिया--मैं वही हूं; मैं आपकी पुत्री हूं (रोती है)॥

लियर--तुम रोती हो? हाँ, ठीक है॥ कृपाकर मत रोवो. यदि तुम्हारे पास मेरे लिये विष भी होगा तो भी मैं उसको पिलूंगा. मैं जानता हूं कि तुम्हारा स्नेह मुझसे नहीं है; तुम्हारी बहिनोंने मुझे भारी हानि पहुँचाई है; स्नेह न रखनेका कारण तुम्हारे लिये है, परन्तु उनके लिये तो कोई भी कारण न था.

कारडैलिया--कोई कारण नहीं, महाराज, कोई कारण नहीं॥

लियर--क्या मैं फ्रांसमें हूं?॥

कैन्ट--महाराज, आप अपनेही राज्यमें हैं॥

लियर--मेरी हँसी मत करो॥

वैद्य--हे राजरानी, आप संतुष्ट रहैं. आप देखते हैं कि, वह भारी क्रोध अब जाता रहा है परन्तु अब इनको उस गये हुए समयका स्मरण करनेमें हानि होनेकी संभावना है. इनको अन्तरमें चलनेकी प्रार्थना कीजिये और अधिक न सताइये. यह अपने आप शान्त होते जावेंगे॥

कारडैलिया--क्या श्रीमान् उठकर चलेंगे?॥

लियर--तुमको मेरी नाईं धैर्य्य रखना चाहिये। कृपाकर अब सब भूल जावो और मुझको क्षमा करो. मैं वृद्ध और निर्बुद्धि हूं॥

(कैन्ट और सभ्यके सिवाय सब गये.)

सभ्य--महाराज, क्या यह बात सत्य है कि "डचूक कार्नवाल" यों मारे गये ?

कैन्ट--हाँ, महाशय, यह बात निश्चय है॥

सभ्य--उनकी सेनाको चलानेवाला अब कौन है ?

कैन्ट--ऐसा सुना जाता है कि, यह काम "ग्लास्टर" के सौ-जाट पुत्र करते हैं॥

सभ्य--कहते हैं कि "एडगर" "ग्लास्टर" के निर्वासित पुत्र "अर्ल कैन्ट" के साथ "जर्मनी" देशमें हैं॥

कैन्ट--किम्वदन्ती परिवर्तनशील है. अब काम करनेका समय है इस राज्यकी सेना शीघ्रताके साथ आरही है स्थगित रहे (गये)

सभ्य--रक्तस्राव होने विना, इस संग्रामका परिणाम न निकलेगा॥ (गया)

कैन्ट--मेरा अभिप्राय आजके युद्ध होचुकनेपर फलीभूत होगा चाहे अच्छाफल हो, चाहे बुरा हो (गया.)

(यवनिका गिरती है.)

चतुर्थ अङ्क समाप्त।

पंचम अङ्क !



प्रथमदृश्य-"डोवर" के निकट अंगरेजी डेरा--

(नगारा, और ध्वजाओंके साथमें एडमन्ड, रीगन ! सभ्य और सैनिकोंका प्रवेश.)

एडमन्ड-(एक सभ्यके प्रति)-"ड्यूक" के पास जाकर उनसे पूछो कि, वे अपने अन्तिम विचारपर दृढ हैं वा किसी कारणसे अपने विचारोंको बदला चाहते हैं वह सर्वदा अपने विचारोंको बदला करते हैं और वारंवार अपने आपको धिक्कार दिया करतेहैं; उनका पक्का विचार अब क्या है यह बात पूछकर शीघ्र चले आवे(सभ्य गया)

रीगन-बहिनका सेवक आस्वाल्ड तो हो ही चुका प्रतीत होताहै

एडमन्ड--मुझे भी यहही भय है ॥

रीगन-हे मेरे प्राणाधार ! आप उस भलाईसे परिचित हैं जो मैं आपके साथ किया चाहती हूं; अब मुझे सत्य सत्य कह दीजिये, देखो आप सत्यही उत्तर देवें-क्या आप मेरी बहिनसे स्नेह नहीं करते हैं ? ॥

एडमन्ड-सन्मानपूर्वक स्नेह रखता हूं.

रीगन-- मैं आपका उसके साथ प्रेम रखना न सहसकूंगी. हे मेरे प्यारे स्वामी, आप उसके साथ इतने हिलमिल कर न रहैं ॥

एडमन्ड-ऐसा भय करना व्यर्थ है यह देखो, तुम्हारे बहि और बहनोई इधर आरहे हैं.

(नक्कारे और ध्वजाओंके साथमें अलबर्नी, गानरिल और सैनिकोंका प्रवेश.

गानरिल--(आपहीआप) युद्धमें भलेही हारजाऊं परंतु अपने प्यारेको अपनी बहिनके साथ कभी न हारूंगी ॥

अलवनी--खूब मिलाप हुवा; (एडमन्डसे) सुनिये, महाराज ऐसा सुननेमें आया है कि लियरनरेश अपनी पुत्रीके पास पहुंच गये हैं और उनके साथमें वे सब मनुष्य भी हैं जो हमारे कठोर राज्यसे संतुष्ट नहीं हैं; जब मैं किसी काममें अधर्म होता देखता हूं तो मैं कभी उस कामको करनेमें साहस नहीं करता; तो भी इस समय लड़ना हमारा धर्म है क्योंकि फ्रांसनरेश स्वयं हमारे देशपर चढ़ आये हैं और भूमिलोभसे स्वयं हमारेसाथ लड़ा चाहते हैं परंतु यह भयकी बात है कि उनके साथमें वे मनुष्य हैं जो सच्चे कारणों से हमारा सामना करते हैं.

एडमन्ड—महाराज, आपका कहना बहुत युक्त है.

रीगन—इस विवादकी क्या आवश्यकता है ?

गानरिल--एक होकर शत्रुके विरुद्ध काम करो ॥ इन घर वादा विवादके होनेका यह समय नहीं है ॥

अलवनी—तो हमको पुराने सैनिकोंके साथ सलाह करनी चाहिये.

एडमन्ड—मैं अभी आपके डेरेमें प्रस्तुत होता हूं.

रीगन—बहिन, क्या तुम मेरे साथ चलोगी ?

गानरिल—नहीं ॥

रीगन—चलती तो बहुत समीचीन बात होती; कृपाकर चलो ॥

गानरिल—(आपहीआप) ठीक, ठीक, मैं इस पहेलीको समझ गयी, (प्रगट) अच्छा; मैं तुम्हारे साथ चलूंगी ॥

(ज्योंही वे बाहर जानेको थे, एडगार भेस बदले हुए आया)

एडगर—(अलवनीसे) यदि श्रीमानोंने कभी मेरे जैसे गरीबसे सम्भाषण किया हो तो मेरी भी एक बात सुन लीजिये ॥

अलवनी--मैं तुम उसके आगे हूंगा ॥

(अलवनी और एडगरके सिवाय सब गये.)

एडगर–संग्राममें जानेके पूर्व आप इस पत्रको खोलकर पढ़ें, यदि आप विजय प्राप्त करें तो मुझे बुलानेके लिये आप ढोल बजवा देवें; यद्यपि मैं बहुत दरिद्री प्रतीत होताहूं तोभी मैं ऐसे मनुष्य को प्रस्तुत करसकता हूं जो इसपत्रकी लिखी हुई बातोंको सिद्ध करदेगा; परन्तु यदि आप रणशायी बन जावें तो आपके संसारिक व्यवहारोंकाभी अंत होजावेगा और फिर कोई भी वंचक आपको न ठग सकेगा–ईश्वर आपकी रक्षा करे ॥ [जाना चाहता है.]

अलबनी–जबतक मैं इस पत्रको न पढलूं, तुम ठहरे रहो ॥

एडगर–मैं ठहर नहीं सकता; जब अवसर उपस्थित हो तब हलकारा बांग मारे और मैं तुरंत उपस्थित होजाऊंगा.

अलबनी–अच्छा तो, तुम्हारी ख्याति रहे; मैं इसपत्रको देखलूंगा ॥

[एडगरका गमन]

(एडमन्डका प्रवेश.)

एडमन्ड–महाराज, शत्रु दृष्टिमें आगये हैं; निजसेनाको सुसज्जित कीजिये; बड़े परिश्रमके साथ उनके बल और सेनाका अनुमान भी करलिया गया है सो सब आपको इसपत्रके देखनेसे मालूम होजावेगा। (एक कागज देता है) परन्तु आपका शीघ्रही सेनामें उपस्थित होना अत्यावश्यक है ॥

अलबनी–मैं अभी आता हूं– (गया.)

एडमन्ड–इन दोनोंही बहिनोंसे मैं प्रेमप्रतिज्ञा करचुका हूं; अहो, इनदोनोंके बीचमें कैसा वैरभाव है जैसे सांप और सांपके डसे हुए मनुष्यमें होता है, मुझे किसको ग्रहण करना चाहिये? दोनोंको? एकको? वा किसीको भी नहीं?॥ यदि दोनोंही विद्यमान रहें तो मुझे एकका भी सुख प्राप्त नहीं होसकता; यदि उस विधवाको ग्रहण करताहूं तो उसकी बहिन गानरिल क्रोधकी मारी

विक्षिप्त होजावेगी और उसके पतिके जीते रहनेके कारण, मेरे अभिप्राय पूर्ण न होसकेंगे। तो यों किया जाय, युद्धमें तो हम सब एक होकर काम करेंगे इसके पश्चात् जो अपने पतिको वध किया चाहती है वह स्वयं उसका वध करे। और लियर और कारडेलिया को "ड्यूक अल्बनी" क्षमा किया चाहते हैं सो जब वे मेरे हाथमें पडेगें, कभी उसकी क्षमा न पासकेंगे मैं ऐसीदशामें पड़ा हुवा हूं कि मुझे अपना बचाव करना चाहिये, न किकिसीसे वादाविवाद॥

द्वितीय दृश्य–

दो डेरोंके मध्य एक मैदान.

(नेपथ्यमें युद्धध्वनि–नक्कारे और ध्वजाओंके साथ लियर, कारडेलिया और सैनिकोंका प्रवेश और गमन.)

(एडगर और ग्लास्टरका प्रवेश.)

एडगर–बाबा, आप इसवृक्षकी परिछायामें विश्राम कीजिये और ईश्वरसे प्रार्थना करते रहिये कि सत्यकी विजय हो। यदि मैं फिर भी पीछा आसकूंगा तो मैं तुम्हारे लिये सुख समाचार लाऊंगा॥

ग्लास्टर–तुम्हारा कल्याण हो॥

[एडगरका प्रस्थान.]

(नेपथ्यमें युद्धध्वनि और भागनेकी आहट. एडगरका पुनः प्रवेश.)

एडगर–बाबा, भागो, लावो, तुम्हारा हाथ, आवो, कारे-लियरनरेशकी पराजय होगयी और उनकी पुत्री पकड़ ली गयी है, लावो, तुम्हारा हाथ लावो; आवो, चले आवो॥

ग्लास्टर–नहीं, भाई, आगे नहीं मुझको यहांही [illegible] चाहिये॥

एडगर—फिर भी वैसाही विचार ? मनुष्यको चाहिये कि इस संसारसे प्रस्थान करनेसे वैसाही निर्भय रहे जैसा वह इसमें आनेके समय था। सर्वदा मरनेके लिये सन्नद्ध रहना चाहिये। आवो, चले आवो॥

ग्लास्टर--तुमने यह बहुत सत्य बात कही॥ (गये.)

तृतीय दृश्य—

डोवरके समीप ब्रिटिशका डेरा.

(विजयका डंका बजाते हुए, ध्वजाओंके साथमें एडमन्डका प्रवेश, लियर और कारडैलिया कैदमें, कप्तान, सैनिक आदि आदि—)

एडमन्ड—थोडे अफसर इन्हें लेजावो; पूरी सावधानी साथ रक्खो जबतक उनकी इच्छा न जानी जावे जो इनको दूषित करेंगे॥

कारडैलिया—हमारे पहिले कई होचुके हैं जिन्होंने उत्तम अभिप्रायसे उत्तम काम करते हुए भी हानियां उठाई हैं। हे दुःखपीडि । नृपाल, मैं केवल आपहीके लिये हताश होरही हूं नहीं तो, मैं इसव्यभिचारिणी लक्ष्मीके प्रकोपकी कोई परवाह नहीं रखती। क्या हम इन पुत्रियों और इन बहिनोंको भी देखसकेंगे ?

लियर—नहीं, नहीं, नहीं नहीं। आ, कारागारमें चलें. अपन दोनों पिंजरेमें बैठ २ गीत गाया करेंगे. जब तू मुझसे आशीष मांगेगी तब मैं घुटनेके बल हो कर तुझसे क्षमा मांगूंगा। इसही तरह, अपन दोनों रहेंगे, ईश्वर आराधना करेंगे, गीत गावेंगे और पुरातन कथा कहेंगे, चित्र विचित्र मधुमांक्षियोंको देख २ कर प्रसन्न

होंगे और बिचारे दीन मनुष्योंसे राजसभाकी बातें सुना करेंगे और उनसे पूछेंगे कि कौन हारा है और कौन जीता है: कौन कृपापात्र है और किसपर मरजी नहीं है और ईश्वरके पार्षदोंकी नाईं इन बातोंके गुप्त अभिप्रायोंको बतलाया करेंगे और ऊंची २ भीतवाले कारागारमें रहकर अपने बड़े-२ मनुष्योंके सेवकोंको देखेंगे जो उदधिकी तरङ्गोंकी तरह घटते बढ़ते हैं॥

एडमन्ड-इन्हें लेजावो॥

लियर-मेरी प्यारी पुत्री कारडेलिया, ऐसे २ बलियोंको देवता भी पवित्र मानते हैं जैसे कि तू और मैं हूं क्या सचमुच तेरा और मेरा मिलाप होगया है? जो तुझको मुझसे जुदा करना चाहेगा, ईश्वरकी आज्ञा विना न कर सकेगा। अपने नेत्रोंको पोंछले-आ चलें.

(लियर और कारडेलिया सिपाहियोंकी संभालमें गये.)

एडमन्ड-कप्तान, इधर आ॥ यह ले (एक कागज देता है) और इनके पीछे २ चलाजा. देख, मैंने तुझको एक दर्जा ऊंचा कर दिया है यदि, इसपत्रके अनुसार करेगा तो तुझे बड़े सौभाग्यकी प्राप्ति होगी। याद रख्खो, मनुष्यको समयके अनुसार होना चाहिये और सैनिकको कोमलहृदय रखना उचित नहीं है॥ तुमको ऊंचे पदके मिलनेमें कोई संदेह न रखना चाहिये। कहो, यह काम करोगे या कोई, अन्य जीवनवृत्ति करोगे?॥

कप्तान-महाराज मैं यह काम करूंगा॥

एडमन्ड-बहुत ठीक और जब तुम यह काम करचुको तब अपनेको सौभाग्यसे संपन्न जानो जैसे २ मैंने इसमें लिख दिया है ठीक २ वैसाही करदेना॥

कप्तान-महाराज, मैं गधा नहीं हूं, जो मनुष्यके करनेका काम है, वह मैं करसकता हूं॥

(वाजा-अलवनी, गानरिल, रीगन, दूसरा कप्तान और सिपाहियोंका प्रवेश.)

अलवनी—महाशय-आज आपने पूरा पराक्रम दिखलाया है और सौभाग्य भी आपका सहायी बनारहा। अब, आपके पास वे कैदी हैं जो इस झगडेमें हमारे विरोधी थे हम चाहते हैं कि आप उनको यहां उपस्थित करें जिससे उनके गुणावगुणके अनुसार ऐसा काम किया जाय कि अपनी रक्षा बनी रहे॥

एडमन्ड—महाराज, मैंने उन दुःखी और वृद्ध नरेशोंको कहीं अन्यत्र भेजदेना इसलिये उचित समझा है कि उनकी वृद्धावस्था और उपाधियों (राजाकी) में ऐसे भारी गुण हैं कि सर्व साधारण प्रजाका मन उनकी ओर खींच सकता है और ऐसी घटना होनेपर हमारे शस्त्रधारी हमारीही आंखोंमें वरछे चला सकते हैं. उस-महाराणीको भी मैंने उनहीके साथ भेजदिया है. कल वा किसी अन्य दिवस जब आप दरबार करेंगे, वे उपस्थित किये जावेंगे. इस समय प्रश्वेतमें भीगे हुए हम सवहीका रुधिर वह रहा है; सब को अपने २ मित्रोंके मारे जानेका दुःख है कारडैलिया और उनके पिताकी वातचीतके लिये यह स्थान उत्तम नहीं है.

अलवनी—महाशय धैर्य्यके साथ सुन लीजिये; अन्य सेवकों की नाईं मैं तुमको भी एक सेवक समझता हूं न कि बराबरका भाई

रीगन—(क्रोधसे) बराबरका भाई वा सेवक समझना तो हमारी इच्छानुसार है; उचित था कि इतना कहनेके पूर्व तुम हमारी भी मरजी मालूम करते; देखो, यह मेरी सेनाके अध्यक्ष हैं; मेरे प्रतिनिधि होकर सारे कार्य्य किये हैं; इन सब बातोंको विचारकर इनको तुम्हारे बराबरके भाई कहनेमें कोई अत्युक्ति न होगी॥

गानरिल--इतनी तेजी क्यों करती हो ? वह तो तुम्हारी उपाधियोंके विना स्वयंही बहुत बडे हैं (क्योंकि अर्ल ग्लास्टर हैं.)

रीगन-मेरे सर्वस्वके स्वामी बनकर वे बड़ोंसे बड़े बन जावेंगे

गानरिल-(मुंह चिढ़ाकर) यदि वह तुम्हारे पति बने होते तो अवश्य बड़ोंसे बहुत बड़े होजाते ॥

रीगन-(मुसक्याकर) ठठोल प्रायः भविष्यवक्ता निकल आते हैं ॥

गानरिल-तो, ठीक, ठीक-तुम्हारे नेत्रोंकी तिरछी चितवन यहही बात प्रगट करती थी ॥

रीगन-देवी, इस समय मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है नहीं तो मैं तुमको मन भर २ के उत्तर देती, हे प्रिय एडमन्ड, तुम मेरे, मेरी सेनाके, इन कैदियों और मेरी जायदादके स्वामी हो, तुम इनका और मेरा जो चाहो, करसकते हो; मेरा भवन तुम्हारा भवन है संसार साक्षी है कि मैं तुम्हें इससमय और यहांपर मेरे प्रभु और पति बनाती हूं ॥

गानरिल-परन्तु क्या तुम इनके साथमें विषयसुख भी भोगोगी ॥

अल्बनी-(गानरिल) यह बात तेरे रोकनेसे नहीं रुक सकती है.

एडमन्ड-और तुम्हारे रोकनेसे भी नहीं रुकसकती है.

अल्बनी-अरे बौजात, हां, मेरे रोकनेसे रुकसकती है.

रीगन-(अडमन्डसे) मेरे सर्वस्वको तुम्हारा सूचित करनेके लिये, नगारा बजवाया जावे ॥

अल्बनी--ठहरो, ठहरो, सुनो, एडमन्ड, मैं तुझे इस अपराधपर गिरफ्तार करता हूं कि, तूने मुझे मारनेके उपाय किये हैं। और तेरे साथमें इस सुन्दर रंगवाली सर्पिणीको (गानरिलको) और

९

इशारा करके) मी पकडताहूं मेरी प्यारी बहिन रीगन, तुमको उचित है कि एडमन्डसे व्याहन करो क्योंकि वह गानरिलका पहिलेसेही होचुका है; यदि तुम्हें व्याह करनेकी इच्छा होतो मुझसे प्रेम करो क्योंकि एडमन्ड और गानरिल के बीचमें प्रतिज्ञा होचुकी है ॥

गानरिल–अहो, कौतुकमें लीला !

अलबनी–अडमन्ड, तू शस्त्रोंसे सुसज्जित है यदि ढोलके शब्दको सुनकर, कोई मनुष्य तुझे दगाबाज और वंचक सिद्ध करनेको न प्रगट होवे तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अपनी असिद्वारा तेरे घोर अपराधोंको प्रत्यक्षकर दिखाऊंगा ॥

रीगन–हाय ! मैं गिरी जाती हूं.

गानरिल–(स्वगत) यदि ऐसा न होता तो मैं कभी औषधिपर विश्वास न करती ॥

अडमन्ड–मैं भी दृढ प्रतिज्ञाके साथ विदित करताहूं कि वह मनुष्य जो मुझे वंचक कहता है चांडालकी नाई मिथ्या कहता है अच्छा तो शीघ्रही ढोल बजाया जाय. जो मनुष्य मेरे सामने आवेगा उसहीके सामने दृढतापूर्वक अपनी सच्चाई और बडप्पनकी रक्षा करूंगा ॥

अलबनी–(ऊंचे स्वरसे) कोई हलकारा, कोई हलकारा–

अडमन्ड–(ऊंचे स्वरसे) हलकारा, हलकारा ।

अलबनी–केवल अपनी सच्चाईपर भरोसा रख क्योंकि सब सैनिक मेरे नामसे भरती हुए हैं और मेरेही नामके भरोसे लडे हैं ॥

रीगन--हाय, मेरी बेचैनी बढतीही जाती है ॥

अलबनी--इसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं, मेरे डेरोंमें पहुँचादो (रीगनका प्रस्थान)

(एक हल्कारेका प्रवेश.)

अरे हल्कारा, इधर आ और इस पत्रको पढकर सुनादे. ढोल बजाया जावे ॥ (एक कागज देता है)

कप्तान–ढोल बजावो–(एक ढोल बजता है)

हल्कारा–(पढता है) इस सेनाके मध्यमें. यदि कोई उच्च वंशी वा सम्मान योग्य मनुष्य, एडमन्डपर जिसने अपनेको अर्ल-ग्लास्टर प्रगट कररक्खा है; यह बात सिद्ध करना चाहे कि वह दगाबाज और वंचक है–तो वह मनुष्य ढोलकी तीसरी चोबपर इस अखाडेमें प्रगट होजावे. एडमन्ड अपने बचावपर सन्नद्ध है ॥

एडमन्ड–चोब लगावो– (ढोलकी पहिली ध्वनि)

अल्बनी–फिर! (दूसरी ध्वनि)

हल्कारा–फिर! (तीसरी ध्वनि)

(नेपथ्यमें ढोलकी ध्वनि)

(ढोलकी तीसरी ध्वनिपर, एडगर, एक ढोलके साथ आता है)

अल्बनी–इससे पूछो कि ढोलकी तीसरी ध्वनिपर यहां उपस्थित होनेका क्या कारण है.

हल्कारा–तुम कौन हो? तुम्हारा नाम और वंश क्या है? और ढोलकी तीसरी ध्वनिपर यहां क्यों उपस्थित हुए हो? ॥

एडगर–सुनो, मेरा नाम जाता रहा है; विश्वासघातके दंष्ट्रोंने इसे चबाकर खा डाला है तथापि मैं भी उतने ही उच्च वंश में हुआ हूं जितने उच्चवंशमें यह पुरुष जन्मा है जिससे युद्ध करनेके लिये मैं यहां उपस्थित हूं ॥

अल्बनी–तुम किसके साथ युद्ध करने आए हो?

एडगर–इसहीके साथ जो अपनेको "एडमन्ड, अर्ल ग्लास्टर" कहकर प्रगट करता है ॥

एडमन्ड—वह मैं हूं; तुम मुझे क्या कहा चाहते हो?

एडगर—अपनी असि निकालो—यदि मेरी वक्तृतासे तुम्हें खेद हो तो अपना शस्त्र तुमको सच्चा सिद्धकर सकेगा. यह लो, मैं अपना शस्त्र निकालताहूं; देखो, यह मेरा धर्म है, यह मेरी प्रतिज्ञा है और इसही में मेरा कर्त्तव्य और बडप्पन है कि तुम जैसे शनिश्वरोंपर म अपनी तरवार के फेर करूं. तेरे बल, यौवन, उच्चपद और बडप्पनका मुझे कुछ डर नहीं; तेरे विजयी कृपाण और यश तेरे साहस और हिम्मतकी मुझे कुछ परवाह नहीं है मैं दृढता पूर्वक यहही विदित करताहूं कि तू वंचक है अपने देवताओंको, अपने पिताको और अपने भाईको धोखा देनेवाला है, इस सुयोग्य राजकुमारको (अल्वनीकी ओर संकेत करके) वध करनेके उपाय में है और अधिक क्या कहूं तू चोटीसे लगाकर [illegible]ता, वंचकता और धोखा वाजीसे ऐसा भरा है जैसा झा[illegible] कभी कांटोंसे लदा हुवा होता है. यदि तू नाहीं करे तो यह कृपाण तुझे ऐसा भयंकर दोषी सिद्ध करनेके लिये सन्नद्ध है ॥

एडमन्ड—मुझे उचित है कि मैं तेरा नाम औ वंश पूंछूं. परन्तु तेरे सुडोल स्वरूपपर वीरता झलक रही है और तेरी जिव्हा प्रगट करती है कि तू उच्चवंशोद्भव है. इसलिये यद्यपि युद्ध नियमानुसार कुछेक विलंब करसकताहूं तथापि मैं इस अधिकारको टुकरातहूं और इस सब वंचकताको जिसके साथ मैं दुषित बतलाया गयाहूं, तेरे मस्तकपर फेंकताहूं और प्रगट करताहूं कि तू बड़ा झूंटा और लवार है: यह मैं अपनी कृपाणसे सिद्ध करताहूं. आ, इधर आ ॥

(ढोलध्वनि—युद्ध और एडमन्ड का पतन)

अलवनी--छोड़ो, इसे छोड़ो ॥

गानरिल--ग्लास्टर—यह तो धोखा हुवा. शूरवीरोंके निय-

मानुसार अज्ञातशत्रुसे युद्ध करना धर्म नहीं है। तुम पराजित नहीं हुये वरण तुमने धोखा खाया है ॥

अलवनी--बीबीजी मुंहको बंध रखिये: नहीं तो, इसपत्रसे बंध करदूंगा–(एडगरकी प्रति) महाशय, ठहर जाईये–(एडमन्डसे) अरे तू अत्यन्त निकृष्ट दुष्ट, अपनी दुष्कृतिको अवलोकन कर–(गानारिल इसपत्रको छीना चाहती है) देवी जी, इसे फाड़ो मत, मुझे मालुम है कि तुम इसपत्रको पहिचानती हो (एडमन्डको पत्र देता है) ॥

गानारिल–मैं पहिचानती हूं तो भी क्या होसकता है ? अधिकार तो सारे मेरे ही हैं; तुम मेरा क्या कर सकते हो ? इसलिये मुझे कोन पकड़ सकता है ?

अलवनी–चांडालिनी क्या तू इसपत्रको पहिचानती है ?

गानारिल–जिस्को मैं पहिचानती हूं उस्के विषयमें मुझे न पूछो.

अलवनी–जावो, जावो, इसके पीछे जावो: यह (गयी) हताश है; इसको वशमें कर रखो। (पीछे मनुष्य गये) ॥

एडमन्ड–जिन अपराधोंके दोष तुमने मुझ पर लगाए हैं मैं सबको स्वीकरता हूं मैंने तो इनसे भी बढ़ अपराध किए हैं सो समयानुसार प्रगट होते जावेंगे। ये सब अपराध हो चुके हैं और मैं भी हो चुका हूं, परन्तु तुम कौन हो जिनको मेरे पर विजय प्राप्त हुई है ? यदि तुम कुलवंत की संतान हो तो मुझे संतोष होगा ॥

एडगर–आवो, आवो, मुझसे मिलो–(एडमन्डसे) मेरा रुधिर तेरे रुधिरसे ओछा नहीं है: इससे अधिक मेरा रुधिर जितना अधिक उत्तम है उतनी ही तुमने मुझे हानि पहुंचाई है. मेरा नाम एडगर है और मैं तुम्हारे पिताका ज्येष्ठ पुत्र हूं (दोनों मिलते हैं) ईश्वर

वड़ा न्याय वान है जो हमारे सुखदायी पातकोंके फलोंद्वारा हम्हें दंड पहुंचाता है; देखो, उस अंधियारे पातकस्थानमें पिताने तुझे गर्भमें डाला तो उसके नेत्र सिरसे निकाले गये ॥

एडमन्ड--तुमने वहुत ठीक कहा; यह बात सत्य है; मेरा ही रचाहुवा सारे जालने अव मुझेही फांद लिया है और-और यहां मैं इसदशाको पहुंचगया हूं ॥

अलवनी-तुम्हारी वार्त्तालाप और चाल. ढालसे मुझको पहिले ही विचार हो गया था कि तुम कोई राज कुमार हो; आवो, आवो मुझसे अङ्कभर भेटलो (दोनों भेटते हैं) ईश्वर साक्षी है यदि मैंने तुम्हें वा तुम्हारे पितासे घृणा की हो ॥

एडगर--सुयोग्य महाराज, मैं सब जानता हूं ॥

अलवनी--तुम कहां छुपे रहे थे ? और अपने पिताके दुःखोंसे कैसे परिचित हुऐ ?

एडगर--महाराज, उनकी सेवा करनेसे । एक छोटीसी कथा सुन लीजिये परंतु इस कथाके कहनेसे, हे परमेश्वर, मेरा हृदय विदीर्ण हुआ चाहता है हमारे प्राण हमको ऐसे प्रिय हैं कि इन मेरे प्राणोंको उस सूचनासे बचानेके लिये जो इनको हरे जानेके लिये दीगयी थी, मैंने विक्षिप्त मनुष्यके चिथड़े धारण किये और ऐसी सूरत वनाई जिसको कुत्ते भी मलीन समझें इसस्वांगमें मेरे पितासे भेट हुई परंतु उनके नेत्रोंमेंसे रुधिर टपक रहा था; उनको राह बताई उनके लिये भीख मांगी और उनको निराश होनेसे बचाया; अहो कैसा भारी अपराध हुवा है कि मैंने कभी उनको अपना नाम न बताया; केवल अभी आध घंटे पहिले जब शस्त्रोंसे लदा हुवाथा मैंने उनको अपना परिचय दियाथा और आद्यो पान्त अपना सारा इतिहास सुनाया था परंतु शोक ! अहो दारुण दुःख ! ! उनका संतप्त हृदय इस सुखसमाचारको धारण करनेमें अशक्त होकर, दुःख और सुखके मिलापकी प्रचंड टक्करसे टूट गया और वे मुसक्याते हुए गतासु होगये ॥

एडमन्ड–तुम्हारी इस वक्तृताने मेरे हृदयको पिघला दिया है और इसलिये स्यात् मुझसे कोई उत्तम कार्य सम्पादित हो जाय परन्तु कहे जाओ ऐसा मालूम होता है कि तुम कुछ और भी कहा चाहते हो ॥

अलबनी–यदि इस कथासे भी घने दुःखदायी इतिहास हैं तो चुप करो क्योंकि इतनाही सुनकर मेरे प्राण प्रयाण किया चाहते हैं ॥

एडगर–जो कोमल हृदयके मनुष्य हैं उनके लिये तो हद हो चुकी; परंतु थोड़ी कथा शेष है जो दुःख की अग्निको उससे भी बढ़ा देगी महाराज, जबमैं वहांपर हाय मार २ कर रो रहा था, उस ही समय एक मनुष्य आया और मुझे ऐसी करुणाजनक दशामें देख, बचकर जाने लगा। परन्तु जब उसने मुझे भली प्रकार देखा तो दौड़कर उसने मुझे आलिंगन किया और ऐसा रोया कि आकाश मण्डल भी विदीर्ण हुआ चाहता था; पश्चात मेरे पिताके शरीर पर गिरकर अपनी और लियर नरेश की ऐसी २ कथा मुझ से कही कि दुःख की अग्नि इससे जियादा भभक उठी और प्राण निकलने लगे–उसही समय दोबार तोपकी ध्वनि हुई और उसको वहां वैसे ही छोड़ कर मैं यहां आ उपस्थित हुआ

अलबनी–परन्तु वह कौन मनुष्य था?

एडगर–केन्ट, महाराज, केन्ट; वही निर्वासित केन्ट जिसने भेष बदलेहुए निज स्वामीका अनुयायी रहकर ऐसी २ सेवा की है कि एक पतित गोलेके करने योग्य भी नहीं है ॥

(एक सभ्य हाथमें लोहूभरा चाकू लिये आता है)

सभ्य–सहायता करो, सहायता, सहायता करो, सहायता करो

एडगर–कैसी सहायता?

अलबनी–शीघ्र कहो, तो कैसी सहायता की आश.

सभ्य--यह चाकू गरम है, इसकी भाफ निकल रही है; यह अबही उसके हृदयमेंसे निकाला गया है; हाय, हाय, वह मरगयी है॥

अलबनी--कौन मरगयी है ? कहो, शीघ्र कहो ॥

सभ्य--आपकी भार्य्या, महाराज, आपकी भार्य्या. और उसने अपनी बहिनको विष दिया था;-यह बात वह स्वीकरती है.

एडमन्ड--(आपही आप) इन दोनोंसे मेरी प्रतिज्ञा होचुकी थी; अब तीनों एक साथ विवाह करेंगे ॥

एडगर--वह देखो, कैन्ट, इधर आरहे हैं ॥

अलबनी--चाहे मरी हो, वा जीवित हो उनके शरीरोंको यहां लेआवो. ईश्वरके ऐसे सच्चे न्यायसे हम कंपायमान हैं (सभ्य गया)

(कैन्टका प्रवेश.)

अहो, क्या कैन्ट यहही है ? ॥

कैन्ट--मैं अपने स्वामी और महाराजको सर्वदाके लिये स्वस्ति करने आयाहूं; क्या वह यहां उपस्थित हैं ? ॥

अलबनी--अहो, सबसे पहिले स्मरण करने योग्य बातको हम भूल गये ! एडमन्ड, बतलावो. राजाधिराज कहां हैं ? और महाराणी कारडैलिया कहां है ? कैन्ट, क्या तुम इस दृश्यको देखते हो ॥

(गानारिल और रीगनके मृतक शरीर लाए गये)

कैन्ट--ऐसा क्यों ?

एडमन्ड--एडमन्ड, तो सर्वदा प्रियही बना रहा. एकने दूसरीको मेरे लिये विष दिया और पश्चात् आत्मघात करलिया ॥

अलबनी--ठीक योंही हैं ॥ इनके मुखोंको ढांपदो ॥

एडमन्ड—मुझे रुक २ कर श्वास आने लगाहै, अपने स्वभाव के विरुद्धभी मैं कुछ भला किया चाहता हूं। किलेमें किसीको शीघ्र भेजो, जल्दी करो क्यों कि लियर और कारडेलियाके वधके लिये मैं लिख चुका हूं जल्दी भेजो ॥

अलवनी—दौड़ो, दौड़ो, दौड़ो ॥

एडगर—महाराज ! किसके पास ? यह काम किसके हाथमें है ? (एडमन्डसे) इसकामको बंद रखनेके लिये तुम्हारा कोई चिन्ह दो ॥

एडमन्ड—खूब याद किया। लो, यह मेरी तलवार को और कप्तानको जाकर देदो ॥

अलवनी—भागो, जल्दी भागो चले जाओ। [एडगरका गमन]

एडमन्ड—मैंने और तुम्हारी भार्याने इसकप्तानको आज्ञा दीथी कि, वह कारडेलियाको कारागारमें वध करडाले और पश्चात यह विदित करदे कि उसने निराश होकर आत्मघात किया है ॥

अलवनी—ईश्वर रक्षा करे। इस समय इसे यहांसे लेजाओ ॥

[एडमन्डको लेगये.]

(लियर मृतक कारडेलियाको भुजाओंपर लिये हुए, एडगर, कप्तान और अनुयायी आते हैं.)

लियर—हाय-हाय-हाय-हाय !। अरे तुम पाषाणके मनुष्य हो तुम्हारेसे नेत्र और जीभ मेरे होतीं तो मैं ऐसा रुदन करता कि आकाश टुकड़े २ कर डालता। (कारडेलिया की ओर देखकर) हाय, यह तो सदाके लिये विदाहोगयी है ! मैं तुम मरेहुओं और जीते हुए व्यक्तियों में पहिचानता हूं, हाय अब इसकी भी मिट्टी यह

गयी है. एक दर्पण लावो तो देखूं यह स्वांस लेती है वा नहीं; यदि इसपर कुछ चिह्न होगा तो जान लूंगा कि मेरी पुत्री जीती है ॥

कैन्ट—अन्तमें क्या यह होना लिखा था ?

एडगर—हे प्रभु, ! यह क्या लीला है !!

अलवनी—नाथ, इससे तो महाप्रलय करदेना ही श्रेय है !

लीयर—(एक पत्तेको उठाकर) देखो देखो तो यह पत्ता हिलता है; हा, हा। तो मेरा जीवन मूल अभी जीती है; इसके जीते रहनेसे ही मेरे सारे दुःख मिट सकते हैं ॥

कैन्ट—(घुटनों पर खडा होकर)—मेरे सर्वोत्तम और प्यारे स्वामी !

लियर—कृपाकर दूरही रहिये ॥

एडगर—यह वही कैन्ट आपके मित्र हैं ॥

लियर—(उसकी बात न सुनकर)—अरे घातको, अरे वंचको तुम सबोंपर मरी पडै हाय, मैं अपनी कारडैलियाको बचालेता परंतु हाय, ! अब यह तो सदाके लिये चली ही गयी कारडैलिया; कारडैलिया, मेरी प्यारी पुत्री कारडैलिया. ठहर, थोड़ी देर ठहर; मैं भी तेरे साथ चलता हूं हाय ! इसका भाषण सर्वदा मधुर. नम्र और धीरा था हे मेरी प्यारी संतान ! मैंने उस नीच को मारडाला है जो तुझे फांसी दे रहा था ॥

कप्तान—हां, महाराज, यह बात सत्य है, इन्होंने उसे मार दिया है.

लियर—क्योंरे क्या मैंने नहीं मारा था ? एकदिन वह था जब मैं अपने शत्रुओंको मारे २ भगाता था परंतु अब तो मैं वृद्ध हूं और ये दुःख पड गये हैं (कैन्टसे) तुम कोन हो ? मेरे नेत्र निर्मल नहीं है नहीं तो मैं शीघ्रही तुम्हारा नाम कहदेता ॥

कैन्ट—मैं एक हतभाग्य हूं ॥

लियर—मेरे सामने धुधंछाई हुई है क्या तुम कैन्ट नहीं हो

कैन्ट—हां महाराज, वही आपका दास कैन्ट हूं. आपका सेवक "केयस" कहा है ?

लियर—वह बड़ा योग्य मनुष्य था; वह बड़ी शीघ्रतासे जान मार सकता था परंतु वह अब तो कीड़ोंका भोजन होगया होगा॥

केन्ट- नहीं स्वामी, मैंही तो वह मनुष्य हूं जिसने ॥

लियर—(इसकी बात न सुनकर) देखा जावेगा ॥

केन्ट—जिसने अबतक प्रीतिपूर्वक आपकी सेवा की है-

लियर--तुम्हारा कल्याण हो ॥

केन्ट--और जिसके सिवाय किसी दूसरे मनुष्यने आपका साथ न दिया. परन्तु अब सब दुःखही दुःख, अंधियाराही अंधियारा और मृत्युही मृत्यु है. आपकी दोनों ज्येष्ठपुत्रियोंने आत्मघात किया है और यह देखो, यहां मरी पड़ी हैं ॥

लियर—हां, मैंभी यही सोचता हूं ॥

अलबनी--इनको अपने परायेकी अब सुरत नहीं है. इस लिये अपना नाम बतलाकर इनको ध्यान दिलाना निष्फल है ॥

एडगर—सर्वथा निष्फल है ॥

(एक कप्तानका प्रवेश.)

कप्तान—महाराज, एडमन्ड मर चुके हैं. ॥

अलबनी--यह बात तो यहां तुच्छ है. हे सरदारों और मित्रो, मेरे विचारको सुनो जहांतक संभव होगा. इस नष्ट राज्यको सुधारनेके लिये उपाय किये जावेंगे. परन्तु, अब हम महाराजाधिराजकी उपस्थितिमें हमारे संपूर्ण राज्य अधिकारोंको छोड़ते हैं. (एडगर और केन्टसे) आप इन सब अधिकारोंको ग्रहण करें जिनके लिये आप सर्वथा योग्य हैं. अपना [illegible] मित्र अपने २ धर्मके फलोंको चखेंगे और और शत्रु अपने २ कुकर्मोंके दुःखोंको भोगेंगे, देखो देखो तो ॥

लियर—हाय, मेरा गरीब विदूषकभी फांसी दिया गया ! नहीं, नहीं इसमें कोई प्राण नहीं है. हाय ! [illegible] और [illegible] तुझमेंही प्राण नहीं है ! क्या तू फिर कभी आंख खोलकर मेरी ओर न देखेगी ! हाय अब तू कभी लौटकर [illegible] नहीं.

कभी नहीं कभी नहीं कभी नहीं । कृपाकर इस कपडेको छातीसे दूर करदो-क्या आप इसेभी देखते हैं-देखिये; देखिये-इसके होठ; देखिये, देखिये [मरता है.]

एडगर-यह देखो, महाराज मूर्च्छा खाते हैं (दौड़कर लियरके शरीरको सँभालता है) महाराज, महाराज ।

कैन्ट-अरे कठोर हिये, फटजा कृपाकर फटजा !

एडगर-(लियरकी ओर देखकर) महाराज, इधर देखिये महाराज आँख खोलिये ।

कैन्ट-इनकी आत्माको न सताओ महाराज, इन्हें जाने दीजिये । यह अब इससंसारमें रहनेसे बहुत दुःखी हैं ।

एडगर--निश्चय, यह लो यह तो होही चुके ।

कैन्ट-आश्चर्य तो यही था कि यह इतनेदिनों तक कैसे जीते रहे; इन्होंने अपने प्राणोंको मानों उधारे ले रक्खे थे ।

अलबनी-इनके शरीरोंको यहाँसे लेजाओ हमारा काम इस समय शोकका है । (कैन्ट और एडगरको) प्यारे मित्रो, आप दोनों इसराज्यको शासन करके फिर उन्नत करें ।

कैन्ट--महाराज, मुझे बहुतशीघ्र यात्रा करनी है वह देखो-मेरे स्वामी बुला रहे हैं और मुझे नाहीं करना उचित नहीं है ।

अलबनी-भाई ये सब दुःख हमको भोगने चाहिये काल-चक्रके फेरसे सुख दुःख सबको होते हैं बड़े बड़े मनुष्योंने हमसे भी अधिक दुःख भोगे हैं । ये सब परमेश्वरकी लीला है जिसका भेद कोई नहीं पासकता है ।

(शोकपूर्वक सबका प्रस्ताव.)

(जवनिका गिरती है.)

किंगलियरनाटकका शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	११	राज्यं	राज्य
२	५	तो	नौ
२	१०	नहीं	वहीं
३	४	रखता	रखती
३	१५	यथातथ्यको	याथातथ्यको
३	२२	अविकारमें	अधिकारमें
४	५	दरिद्रणी	दरिद्रिणी
५	९	युक्ति	उक्ति
५	१२	मुवा	युवा
५	१३	नुवा	युवा
५	१७	पंठवरता	पंठनरता
५	१९	दनूजी	दूजी
५	२४	आर	और
६	३	कानंचल	कानंचाल
६	६	सहामी	सहायक
६	२८	निबुद्धियन	निर्बुद्धिपन
७	१	आपने	आपके
७	१५	क्षाद्र	क्षुद्र
७	१९	रहेगा	रहेगा,
७	२५	संजावे	संजारके
८	६	करता	कारता
८	१२	शुक्तियाँ	उक्तियाँ
८	२१	वसेहो	हमारो
९	४	आकारी	आकारो
९	१४	कभी	कहीं
९	१८	मधीकारने में	मधिकारमें
९	२३	इतना	इतनी

किंगलियरनाटकका शुद्धिपत्रम्।

(२)

९	२४	उवड़	छवड़
१०	१९	लहरता	लठरता
१०	१५	वेतो	वे वातें
१०	१८	इसमें	इससे
११	३	स्वीकारता	स्वीकरता
११	१४	मुँहके	मुँहको
११	२३	प्रेमको	प्रेमकी
१२	६	ढके है	ढकाहै
१२	१५	कैस	कैसे
१३	५	हकूमत	हुकूमत
१४	२२	ऐडगर	एडगर
१५	१	देखकर	देकर
१५	१५	कररहे	किएरहे
१७	३	?	......
१७	१३	सूय आरे	सूर्य और
१८	९	दुर्घटना।	अन्तिम दुर्घटना
१८	१२	मैं	ये
१८	२२	अनवनात	अनवनाव
१९	१	अभी	अजी
१९	३	तम	तुम
१९	१३	ठंडे	ठंडी
१९	२२	स्वीकारो	स्वीकरो
२०	१	फिरे	फिरो
२०	१०	वक्में	वातमें
२०	१६	रसोइमा	रसोइया
२०	१७	धमकावेके	धमकानेके
२०	२३	उलहन	उलहना
२१	२	उत्तरदात	उत्तरदाता
२१	२	अंगध्वनि	शृंगध्वनि

किंगलियरनाटकका शुद्धिपत्र।

२१	४	भारद्ह'	आरद्दा
२१	४	अंगध्वनि	शृंगध्वनि
२१	८	?	।
२१	१०	तुमको	—
२२	१	दध	मद
२२	६	अंगध्वनि	शृंगध्वनि
२२	१७	छड़ाईभी	छड़भी
२३	३	बनता	बनाता
२३	८	विनाड़	विनाड़
२३	०.	बाधि	बांधे
२३	१५.	हे:	हे !
२४	१८	मुझ	मुझे
२४	१०.	नर्मसूक	धर्मसूक
२४	१६	तनक्षीणा	तनक्षीण
२५	८	मरे	मेरे
२५	२१	यों ॥ लियर–मेरे प्रिय भृत्य, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं: यह [आवाजान्त- रों] धक्का देकर निका- लता है ॥	यों [आवाजान्तरों धक्का देकर निका- लता है] लियर-मेरे प्रिय भृत्य, मैं तुझे धन्य- वाद [illegible] [illegible] [illegible] है ॥
२६	२	श्रम	[illegible]
२६	५.	[illegible]	[illegible]
२६	१०	नन्ना !	नाहं !
२६	१४	तो	[illegible]
२७	१६	इस	[illegible]
२७	२४	मूर्तिवाली	[illegible]
२७	२५	[illegible]	[illegible]

२७	२६	म	में
२८	७	मारे	मोरे
२८	१०	योग्यहै ॥	योग्यहै ॥
		ळियर–अरे छोकरे ! (गाताहै) माळवराग, तू कबसे इतने गीत गाने ळगाहै ? (गाताहै) माळ- वराग प्रतिमंठताळ॥ "कममरजीन विदू- षक, थी पर तेरे । पर अब विज्ञभये सम तेरे ॥ नासकें कारि बुद्धि विकास । अस सम वानरवे" ॥	प्रतिमंठताळ ॥ "कममरजीन विदूषक, थी पर तेरे । पर अब विज्ञ भये समतेरे॥नास- कें कारि बुद्धि विकास । अस सम वानरवे" ॥ ळियर–अरे छोकरे ! तू कबसे इतने गीत गाने ळगाहै ? ॥
२८	२७	ांचेमें	ढांचेमें
२९	४	आपन	आपने
२९	११	आपआकारशून्य	अब तो आपआकार शून्य
२९	१२	प्रात	प्रति
२९	२६	वयं	स्वयं
३०	१३	सथ	साथ
३१	३	गवती	भवती
३१	४	गानरीळ	गानरिळ
३१	५	नूतनताने	नूतनताने,
३१	१०	इनकाभी	इन
३१	१३	स्वीकार	स्वीकर
३१	१९	हमार	हमारे
३२	५	कठरही	कहरही
३२	१७	स्वीकार	स्वीकर

३२	११	इसको	इनकी
३३	२६	किः	कि-
३४	१४	अपसन्नता	अप्रसन्नता
"	२२	अनुचित पनका	अनुचितपनकी
३५	१	हो	होकर
"	३	जिनको	जिनके
"	६	वताती	बतलाती
"	१४	न हो	न होता ?
३७	१०	और	ओर
३८	९	एटमन्ड	एड्मन्ड
४४	१५	टनके	उनके
"	१६	पहिननवाला	पहिननेवाला
४५	९	ओल्या	ओरया
"	२०	॥	(एड्मन्ड[illegible])॥
४७	५	पचनादिक	पद्मनादिक
"	२१	?	— — —
४९	२१	उसका	उसने
"	"	लिपा	को
"	"	यों	यह यों
५०	१२	कांन	कौन
"	१२	कोटरमें	कोठरमें
"	२४	सुते	सुने
५१	९	नामोंक	नामोंके
"	१९	पकार	प्रकार
५२	९	"जूमो"	"जूनो"
५४	८	[illegible]	छिद्रवाली
५५	८	फटदान	[illegible]
"	१२	बनाभूत	[illegible]
५६	२२	!	—

५७	२	स्वाकारता	स्वीकरता
,,	१४	कुहिसे	कुहिरो
५८	३	मुझ	मुझे
,,	१७	नहाहोता	नहीं होती
,,	२४	उस्व	उस्का
५९	२	सिथिल हैं	आप शिथिल हैं
,,	१९	तरा	तेरा
६१	२२	ह	हैं
६२	६७	विचारताहा	विचारतीहो
६३	१२	निराश	हताश
६४	१०	विस्ताणं	विस्तीर्ण
,,	१४	यह	मेह
,,	,,	जवरी	जब रीछ
६५	९	गहन	गहन
,,	२२	म	मैं
६७	२	रहे	रहो
७१	१५	लगादेना	लगादेना !
,,	२३	रोंके	रोके
७२	२	जिनका	जिनको
,,	३	जहा	जहाँ
७३	१२	इधर उधर भागता है	(इधर उधर भागता है)
७५	७	वस्त्रोंको फाड़ता हुवा	(वस्त्रोंको फाड़ता हुवा)
७८	६	आर	ओर
,,	१०	विशादरके	विशारदके
७९	१७	विश्चित	निश्चित
,,	१८	ढूंढो	ढूंढकर
,,	२०	इनको	इनका

८०	२२	अश्वक	अश्व के
८१	७	नेद्री "वर्षो"	नदी "वर्षो"
"	१५	करेंग ?	करेंगे ?
८२	२३	विह्नो	पिह्नो
८५	९	हिन	बहिन
"	१४	नरपतिक	नरपतिके
"	१५	उस सबकी	उन सबकी
८७	२०	आनिपमें	आनिरमें
"	२३	झगड	उजड़
९०	१३	जानो	जावो
९२	२५	मुननेमें	सुननेमें
९५	२	स्वामन	सामने
९६	३	रखता होता	रखता होगा
९७	३	रजालेने	रोकने
९९	११	आर	और
१००	७	नेत्राके	नेत्रोंके
१०२	१३	श्रीर ?	और
१०४	१३	मुझ	मुझे
"	१८	ध्यानम	ध्यानमें
"	२५	ता जा	तो जो
१०५	१	म	में
"	"	है	हैं
"	२२	आवाज [illegible]	(आवाज [illegible])
१०८	१८	[illegible]	[illegible]
"	२४	[illegible]	[illegible]
१०९	१३	[illegible]	[illegible]
"	१९	म	मैं
११४	१९	[illegible]	[illegible]

११५	१	कान'	कौने'
"	१८	म	मैं
११७	१०	कैद	है
"	१९	वैद्यको	(वैद्यको)
११९	१२	वद्यसे	(वैद्यसे)
१२०	२	वुदि	वुद्धि
१२२	९	आवे	आवो
१२३	१३	विवादक	विवादके
१२६	७	डोवरक	डोवरके
"	११	सावधानी	सावधानीके
१२७	१०	जा	जो
"	२५	ह	है

